RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107

प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
मैनेजिंग एडिटर
बिधुरंजन उपाध्याय, 8969478180
सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
रंजीत कुमार 8800689555
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह, साहब तनवीर 'शब्बू'
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
सारण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987
समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866
मुंगेर प्रमंडल : बिधुरंजन उपाध्याय
किशनगंज : हबीबउर रहमान
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
समाजसेवी

चर्चित बिहार

वर्ष : 7, अंक : 1, सितम्बर 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

5 बहुत खल रहा भाजपा को अटल के बाद अरुण का अस्त होना

अटल से अरुण तक... 9

भारतीय वायुसेना को ... 19

भारत मंदी से बेहाल... 33

खेती से खुशहाली ... 26

बच्चा चोर बताकर हमला यह कैसा पागलपन

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

देश के विभिन्न इलाकों में भीड़ द्वारा बच्चा चोर बताकर बेगुनाहों पर हमले अचानक तेज हो गए हैं। पिछले दिनों दिल्ली के हर्ष विहार में भीड़ ने एक मूक-बधिर गर्भवती महिला को इतना पीटा कि उसकी जान जाते-जाते बची। गाजियाबाद के लोनी में अपने पोते को लेकर जा रही एक बुजुर्ग स्त्री को लोगों ने इस शक में मार-मारकर अधमरा कर दिया कि वह बच्चे को चुराकर ले जा रही है। संभल में भतीजे को अस्पताल ले जा रहे एक शख्स को भी इसी संदेह में पीटा गया, जबकि रेवाड़ी में बच्ची के मामा पर धावा बोल दिया गया। इस तरह के मामले पिछले कई वर्षों से जारी हैं लेकिन बीच-बीच में इनमें भयानक तेजी देखने को मिलती है। एक अनुमान है कि पिछले तीन वर्षों में भीड़ ने बच्चा चोरी के शक में 50 से ज्यादा लोगों की हत्या की है। आश्चर्य यह कि कोई नहीं जानता कि बच्चा कहां और किसका चोरी हुआ। लोग इसका पता लगाने की कोशिश भी नहीं कर रहे। बस चोरी का हल्ला उठता है और वे आक्रामक हो उठते हैं। डर के मारे कई जगह लोगों ने अपने छोटे बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर दिया है। कहीं-कहीं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की छोटी कक्षाएं खाली दिखने लगी हैं। बच्चा चोरी के नाम पर हुई घटनाओं में एक-सा पैटर्न दिख रहा है। पहले किसी इलाके में एक वॉट्सऐप मेसेज वायरल होता है, जिसमें वहां बच्चा चोर गिरोह सक्रिय होने की बात कही जाती है। यह भी कि यह गिरोह बच्चों की चोरी करके उनके अंग बेचता है या मासूमों के साथ गलत काम करता है। मेसेज को प्रामाणिक बनाने के लिए विडियो भी दिखाए जाते हैं, जिनमें एक पाकिस्तान में और एक बांग्लादेश में बच्चा चोरी रोकने के लिए बनाई गई डॉक्युमेंट्री है। इन विडियोज को अपने तरीके से एडिट किया गया है। नतीजा यह कि जहां-तहां शरारती तत्व किसी डरे हुए या मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति को भी बच्चा चोर बताकर उस पर हमला कर दे रहे हैं। दरअसल, हमारे देश में हर व्यक्ति निजी स्तर पर कानून से डरता है लेकिन भीड़ का हिस्सा बनते ही वह कानून को अपनी जेब में समझने लगता है। उसे लगता है कि सामूहिक रूप से किए गए कृत्य के लिए किसी को कोई सजा नहीं मिलती। दूसरे, बच्चा चोरी की बात फैल जाने से एक भय का वातावरण बनता है, जिसकी अभिव्यक्ति भीड़ की हिंसा के रूप में होती है। इससे दो बातें तत्काल प्रशासन के अजेंडे पर आनी चाहिए। एक तो यह कि बच्चों की चोरी और इससे जुड़ी अफवाहबाजी, दोनों पर एक साथ पूरी सख्ती से सक्रिय हुआ जाए। दूसरी यह कि इस काम के लिए सोशल मीडिया को हथियार बनाने वालों को लंबे समय तक पछताने पर मजबूर किया जाए। जाहिर है, प्रशासन इसमें तभी सफल हो पाएगा, जब आम लोग सचेत हों और शरारती तत्वों के हाथों का खिलौना न बनें।

मुख्यमंत्री के सामने ही भद्द पिट गई, बिहार पुलिस खोखला साबित हो रहा है डीजीपी का दावा

बिहार में अपराधिक घटनाओं में इजाफा, अपराधी मस्त, पुलिस पस्त

बिहार पुलिस अपनी छवि में सुधार लाने की लगातार कर रही दावे और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सुशासन का लगातार पोल खुल रही है। हद तो तब हो गई जब बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रा की अंत्येष्टि के समय दी जाने वाली सलामी के दौरान बिहार पुलिस की एक भी बंदूकें नहीं छुट्टी। बिहार पुलिस को शर्मसार कर देने वाली इस घटना के दौरान वहां बिहार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ ही साथ उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी सहित बिहार के कई मंत्री और गणमान्य लोग उपस्थित थे। 21 बंदूकों में से एक भी पुलिस की बंदूक नहीं छूट सकी। इस घटना ने बिहार पुलिस के व्यवस्था की कलई खोलकर रख दी। पुलिस को शर्मसार करने वाली इस घटना पर विपक्ष ने भी हमला बोला।

बिहार के डीजीपी का पदभार संभालने के बाद गुप्तेश्वर पांडे ने बिहार के पुलिस व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त करने का लगातार दावे कर रहे हैं, लेकिन परिणाम विपरीत सामने आ रहा है। यदि हाल में घटित बिहार के घटनाक्रम पर नजर दौड़ाया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि बिहार में अपराध बेतहाशा बढ़ रही है, तथा पुलिस पर अपराधी लगातार भारी बढ़ते जा रहे हैं। हद तो तब हो गई जब छपरा में अपराधियों के छुपे होने की सूचना पर जब एसआईटी की टीम छापेमारी करने पहुंची तो अपराधियों के हथियार के सामने पुलिस बेबस सो गई, तथा एक दरोगा सहित दो पुलिस कर्मियों की हत्या कर अपराधी फरार हो गए। सीतामढ़ी में पिछले सप्ताह एक ही परिवार के तीन लोगों की हत्या कर दी गई। मधुबनी के पूर्व जिला पार्षद सत्तन झा के साथ-साथ सिवान के लोजपा नेता कल्याण दत्त पांडे की हत्या अपराधियों ने दिनदहाड़े कर दी। बिहार में अपराधी आम जनता और व्यावसायिक पर लगातार भारी पडते जा रहे है। गोपालगंज की घटना ने तो बिहार में अपराध की एक नई कहानी लिख दी जहां रिश्वत नहीं देने के चलते एक इंजीनियर ने ठीकेदार को जिंदा जला दिया। बिहार में ठेकेदारों द्वारा अधिकारियों को डराने धमकाने और मारने की घटना तो सामने आती रही है लेकिन बिहार के गोपालगंज में ऐसी पहली घटना घटी जहाँ कार्यपालक अभियंता सत्येंद्र कुमार ने ठीकेदार रामाशंकर सिंह पर किरासन तेल डालकर जिंदा इसलिए जला दिया कि ठेकेदार ने उन्हें मुंह मांगी रिश्वत नहीं थी।

अपराध के साथ-साथ बिहार के कथित सुशासन की पोल अब अधिकारी नौकरी से त्यागपत्र दे कर खोल रहे हैं। पिछले दिनों दरभंगा के मंडल कारा के उपाधीक्षक निर्मल कुमार ने त्यागपत्र दे दिया।उनका कहना है कि जेल अधीक्षक कैदियों को प्रताड़ित करते हैं तथा उनका शोषण किया जाता है।विरोध करने पर कारवाई की धमकी दी जाती है। इसी तरह दरभंगा में स्थापित डीटीओ राजीव कुमार ने भी बड़े अधिकारीयों पर रिश्वत मांगने के आरोप लगाते हुए नौकरी छोड़ दी थी। इस तरह की बिहार में और कई मामले सामने आए है, जो बिहार के शासन व्यवस्था की कमियों को उजागर करती है। अगले साल बिहार में विधानसभा के चुनाव होने हैं और यदि नीतीश कुमार शासन व्यवस्था तथा पुलिस प्रशासन को चुस्त नहीं करते हैं तो 2020 का समर पार करना मुश्किल हो जाएगा। हालांकि नीतीश कुमार के जाहन में यह बात जरूर होगी कि मोदी लहर और भाजपा के साथ आगामी चुनाव भी हम जीत लेंगे, लेकिन वर्तमान समय में जिस जनता के बीच जो संदेश जा रहा है वह सरकार के सेहत लिए अच्छा नहीं है।

बिहार में जितनी तेजी से आपराधिक घटनाएं बढ़ी उसी रफ्तार से पुलिसकर्मियों का मनोबल भी गिरा है

बिहार में हाल के दिनों में आपराधिक घटनाएं बढ़ी हैं। पिछले कुछ महीनों के आंकड़े यही दशार्ते हैं। जितनी तेजी से आपराधिक घटनाएं बढ़ी हैं उसी रफ्तार से पुलिस का मनोबल भी गिरा है। इसके कई उदाहरण भी हैं। एक दो उदाहरण से इसे समझा जा सकता है। पिछले दिनों राजधानी की एसएसपी अपने मातहतों के साथ बैठक कर रही थीं। बैठक में थानेदार से लेकर एसपी स्तर तक के अधिकारी थे। एसएसपी ने थानेदारों को हड़काते हुए कहा कि जिन जिन लोगों पर प्रोसिडिंग चल रहा है, उनसे थानेदारी ले ली जाएगी। एसएसपी के खत्म होते ही एक थानेदार उठा और कहा मैडम हमारे उपर प्रोसिडिंग चल रहा है। हमे थानेदारी से मुक्त किया जाए। एसएसपी मैडम के सामने ऐसी दरख्वास्त करने वाला वह थानेदार राजधानी के टॉप टेन थानेदारों में आता है। वहीं कई थानेदार बातचीत में कहते मिल जाते हैं कहीं तैनाती कर दे बस थानेदारी से किसी तरह हटा दिया जाए। यह बात थानेदारों तक ही सीमित नहीं है। कई डीएसपी ऐसे हैं जो अपना तबादला मधनिषेध या फिर अग्निशमन में करवा चुके हैं। वे खुद को मुख्यधारा की पुलिसिंग से दूर कर चुके हैं। अभी हाल ही में एक एएसपी ने अपना इस्तीफा गृह विभाग को सौंपा है। यह मुख्य वजह है कि हाल के कुछ महीनों में सूबे में अपराध का ग्राफ तेजी से बढ़ा है। जिन्हें अपराध नियंत्रण करना है उनमें कोई उत्साह ही नहीं है। इसके कारणों की समीक्षा अगर समय रहते नहीं हुई तो आने वाले दिनों में बिहार में अपराध का ग्राफ और बढ़ेगा।

पुलिस के एके-47 पर भारी पड़ रहा अपराधियों का देसी कट्टा

बात अगस्त महीने की है। एके-47 से लैश पुलिसकर्मियों पर अपराधी भारी पड़ गए। घटना बिहार के छपरा जिले में हुई थी। घटना में दो पुलिसवालों की हत्या अपराधियों ने कर दी थी। जिसमें एक एसआईटी के दारोगा और एक कांस्टेबल थे। यह घटना तब हुई जब पुलिसकर्मियों के पास एके47 था। वहीं जुलाई महीने में दानापुर कोर्ट से भागने के दौरान एक कुख्यात ने एक पुलिसकर्मी की गोली मारकर हत्या कर दी। हालांकि अपराधी भागने में सफल नहीं हो सका था। ऐसी कई घटनाएं हाल के कुछ महीनों में हुई है। इन घटनाओं के बाद यह सवाल उठने लगा है कि जिन पुलिस कर्मियों के हाथ में हमारी सुरक्षा है जब वही अपराधियों के निशाने पर हैं और अपराधियों को मुंहतोड़ जवाब नहीं दे सकते तो हम कैसे सुरक्षित रहेंगे। सवाल यह भी उठ रहे हैं कि आखिर ऐसी स्थिति क्यों आई?

बढ़ा है अपराध का ग्राफ

बिहार पुलिस के आंकड़े ही सुशासन की पोल खोल रहे हैं। जंगल राज कहे जाने वाले लालू के शासनकाल से

अगर अभी के आंकड़ों की तुलना करें तो मालूम चलता है कि अपराधों में दोगुने से अधिक की बढोतरी हुई है। 2001 में बिहार में संज्ञेय अपराधों (कॉग्निजेबल क्राइम) की संख्यो 95,942थी. जो 2018 में बढ़कर 26,2,80 हो गई। अपराधों में कुछ श्रेणियां तो ऐसी हैं जिनमें दुगनी से भी अधिक की बढोतरी दर्ज की गई है. 2001 में रेप के 746 मामले दर्ज किए गए थे, जबकि 2018 में रेप के 1,475 मामले हुए। इसी तरह अपहरण की बात करें तो 2001 में 1,689 अपहरण के मामले दर्ज हुए थे वो संख्या बढ़कर 2018 में 10,310 हो गई है।

साल 2019 को देखें तो अपराधों की स्थिति यही बनी हुई है। जनवरी 2019 में बिहार में हत्या के 212 मामले दर्ज किए गए थे। यह आंकड़ा मई में बढ़कर 330 हो गया है। अपहरण के मामले जनवरी से मई आते-आते 757 से 1101 हो गए हैं। इसी तरह जनवरी में रेप के 104 मामले दर्ज किए गए. जबकि मई में रेप के 125 केसेज दर्ज हुए हैं।

राजधानी की स्थिति भी बेहतर नहीं

दूसरे शहरों को छोड़ भी दें तो राजधानी पटना की ही स्थिति बेहतर नहीं है। पुलिस ने अपराधियों को रोकने की जितनी कोशिश की, अपराधी उतने ही बुलंद होते गए। हत्या,लूट और डकैती की बड़ी वारदातों को अंजाम देते रहे। जून में पटना में 30 हत्याएं, 33 लूट और 5 डकैती की वारदातें हुईं। यानी, 24 घंटे में एक से ज्यादा वारदात। हर छह दिन परे डकैती की एक घटना हुई है। आंकडे गवाह हैं कि सबसे अधिक अपराध इसी साल हो रहे हैं.क्योंकि अभी सात महीनों के रिकार्ड आने बाकी हैं.

जिम्मेवारी तो मुखिया पर ही जाएगी

दबी जुबना पुलिसकर्मी भी अब अपने मुखिया की कार्यशैली पर सवाल करने लगे हैं। नहीं भी करें तो इसकी जिम्मेवारी मुखिया पर ही जाएगी। डीजीपी गुप्तेश्वर पांडेय ने 31 जनवरी को बिहार पुलिस का कमान संभाला था। इनके आने के बाद अपराध के ग्राफ में इजाफ ही देखा गया है। भीड़ की हिंसा, लूट, अपहरण, डकैती और हत्या के मामले तो रिकॉर्ड तौर से बढ़े हैं। सीएम भी अपराध के बढ़ते ग्राफ पर विधानसभा में बयान दे चुके हैं। इतना ही नहीं उन्होंने डीजीपी की कार्यशैली पर भी सवाल उठाया था। बीते मार्च में एक कार्यक्रम के दौरान मंच से सीएम ने डीजीपी को कहा था, केवल भाषण देने से काम नहीं चलेगा. सीएम के इस बयान के तब कई मायने निकाले गए थे। 11अगस्त को अपने फेसबुक पेज पर लाइव होकर गुप्तेश्वर पांडेय करीबे 15 मिनट तक जनता और लोगों से अपील करते हुए भावपूर्ण भाषण दि फिर उसी लाइव में अंत में खुद ही कह दिए कि इस तरह भाषण देने से काम नहीं चलेगा।

अब तो आम लोगों के गुस्से का का सामना भी डीजीपी को करना पड़ रहा है। छपरा में दारोगा और हवलदार की हत्या के बाद डीजीपी छपरा पहुंचे थे। तब उन्हें दरोगा के परिजनों के क्षोभ का सामना करना पड़ा था। अपराधियों के हमले में मारे गए दारोगा मिथिलेश कुमार के भाई ने जब यह सवाल किया कि उनके भाई के ट्रांसफर के बाद भी उन्हें छपरा क्यों भेजा गया था, इसके लिए सीबीआई जांच होनी चाहिए। तब डीजीपी दरोगा के भाई पर ही भड़क गए और उनको जवाब दिया आपको नहीं पता है कि पुलिस कैसे काम करती है। इसके बाद डीजीपी ने एक प्रेस कांफ्रेंस किया और उनकी निराशा साफ देखने को मिली। उसी दौरान उन्होंने कहा- "मैं डीजीपी हूं तो क्यो अपराधी मुझे भी मार सकते हैं।" जिस सूबे का डीजीपी यह बयान दे वहां के कानून व्यवस्था की स्थिति आसानी से समझी जा सकती है।

बहुत खल रहा भाजपा को अटल के बाद अरुण का अस्त होना, हर दल में थे जेटली के दोस्त

बिधुरंजन उपाध्याय

रैना बीती जाए... आरडी बर्मन का यह गाना अरुण जेटली जी को बहुत प्रिय था। सुना है हाल के दिनों में वह कई बार इस गाने को सुनते रहे थे। यह सच है कि तीन-चार महीने पहले तक बीमारी को हराकर जीवन के मैदान में फिर से उतरने को लेकर विश्वस्त अरुण जी को हाल के दिनों में आभास होने लगा था कि अब जीवन की डोर छोटी हो रही है। और इसीलिए अपनों से, खास दोस्तों से मिलते तो भविष्य के लिए कुछ-कुछ संदेश जरूर देते थे। दोस्तों को यही बोलकर गए थे कि मित्र मंडली चलती रहनी चाहिए। जितना संभव हो एक दूसरे की मदद करते रहना चाहिए। एक दूसरे के साथ खड़े होना चाहिए। लेकिन अगर कोई यह समझ बैठे कि वह हार गए थे या भयभीत थे तो बिल्कुल गलत होगा।

जिम्मेदारी मिलती गई उसमें खुद को साबित करते गए

दरअसल अरुण जेटली किसी भी परिस्थिति से डरते नही थे और ना ही कभी अपना धैर्य खोते थे.वह हर परिस्थितियों को डटकर मुकाबला करने वाले थे। छात्र राजनीति से लेकर केंद्र सरकार में मंत्री बनने तक उन्होंने कभी अधीरता नहीं दिखाई। जो जिम्मेदारी मिलती गई उसमें खुद को साबित करते गए। बीमारी के बाद मौत ने उन्हें जरूर हर किसी से ओझल कर दिया है, लेकिन जीवन और राजनीति को लेकर उनकी सोच और प्रासंगिकता हमेशा बरकरार रहेगी। अरुण जी को जानने-पहचानने वालों की संख्या बहुत ज्यादा थी और इस नाते उनके हर पहलू पर काफी बातें होती रही हैं। मैं तो इतना कह सकता हूं कि एक इंसान के रूप में उनका जाना समाज के लिए बहुत बड़ी रिक्तता पैदा कर गया है। कहा जाता है कि अच्छे इंसान की पहचान इससे हो सकती है कि उनके घरेलू सहायक कितने लंबे वक्त से टिके हैं। सभी जानते हैं कि उनके घर का न तो कभी कोई सेवक बदला, और न ही दोस्त, बल्कि संख्या बढ़ती ही चली गई।

अरुण जेटली के दोस्त हर दल में थे

उनका यही गुण उन्हें राजनीति में भी अलग खड़ा करता है। अटल बिहारी वाजपेयी के बाद वह भाजपा के संभवतः अकेले ऐसे नेता माने जा सकते हैं जिनके दोस्त हर दल में थे। विचारधारा से परे हटकर उनके बीच लंबी बातचीत हो सकती थी। एक दूसरे के हमराज बन सकते थे। बिहार इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। सभी जानते हैं कि बिहार में भाजपा और जदयू के बीच जितना लंबा गठबंधन रहा है उतने ही दोनों दलों के बीच तनाव के पल भी रहे हैं। लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और अरुण जेटली के संबंधों में इस कारण कोई बाधा नहीं आई। मगर उतना ही ध्यान इसका भी रहा कि राजनीतिक विचारधारा और सांगठनिक कर्तव्य की राह में संबंध आड़े न आएं। यही कारण है कि जब प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी का नाम ऊपर रखने की बात आई तो नीतीश के साथ अच्छे संबंधों ने उन्हें नहीं जकड़ा। भाजपा और जदयू अलग-अलग हो गए तब भी संबंध नहीं बिगड़े। कर्तव्यपरायणता की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

जब पत्रकार ने जेटली से पूछे तीखे सवाल

नोटबंदी के बाद मीडिया ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में अरुण जी से बहुत तीखे सवाल किए थे। बाद में पत्रकार की पत्नी के अलावा भी कई साथियों ने जब कहा कि सवाल बहुत तीखे थे तो वह पत्रकार अरुण जी के पास पहुंचे। उनसे पूछा कि क्या उन्हें लगता है

कि ऐसे सवाल नहीं पूछे जाने चाहिए थे तो उन्होंने तपाक से कहा-अरे भाई, तुम्हें यही पूछना चाहिए था। दोस्ती की जगह दूसरी है और काम की जगह दूसरी। यही उनकी बड़ी खूबी थी। उनकी दोस्ती सामने वाले को बांधती नहीं थी, बल्कि उन्मुक्त करती थी। उनका बड़ा राजनीतिक और सामाजिक कद भी कभी किसी को छोटा महसूस नहीं करने देता था, बल्कि ऊपर उठने को प्रेरित करता था।

वाजपेयी जी ने जेटली को दिए बड़े-बड़े मंत्रालय

मौजूदा दौर के नेताओं से उन्हें एक और बात जुदा करती थी और वह था धैर्य। बात 1999 की है। मीडिया के एक मित्र की शादी थी। तब जेटली सूचना प्रसारण विभाग में राज्यमंत्री बनाए गए थे। मैंने जब उनसे कहा कि वाजपेयी जी ने उन्हें क्षमता से कम दिया है तो वह कंधे पर धौल लगाते हुए बोले-सब ठीक है। इसमें कोई बात नहीं है और न ही मुझे आकांक्षा है। उनकी क्षमता को पहचानते हुए ही वाजपेयी जी ने बाद में उन्हें बड़े-बड़े मंत्रालय दिए थे। एक ऐसे इंसान का जाना समाज में रिक्तता पैदा कर गया है।

नरेंद्र मोदी ने जेटली को बनाया गुजरात का प्रभारी

रही बात भाजपा की तो लंबे अरसे तक उनकी भरपाई नहीं हो पाएगी। उन्हें संकटमोचक के रूप में ही जाना जाता रहा है। टेबल पर गेम जीतना उन्हें अच्छी तरह आता था और यही कारण है कि गुजरात में लोकप्रिय और अजेय रहे नरेंद्र मोदी ने भी उन्हें ही लगातार गुजरात का प्रभारी बनाए रखना चाहा। उनकी आलोचना करने वाले यह कहते हैं कि वह खुद कभी नहीं जीत पाए। लेकिन पार्टी के अंदर इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जीतने का मंत्र उनके पास था। वह अर्जुन नहीं बन पाए लेकिन द्रोणाचार्य के गुण थे। 2019 लोकसभा चुनाव अभियान में भी प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी उन्हीं के पास थी।

प्रवक्ताओं को भाजपा का पक्ष रखने का देते थे मंत्र

नेतृत्व और निर्णय क्षमता को केंद्रित कर चुनाव लड़ने के प्रबल समर्थक रहे जेटली ने 2014 से प्रेसिडेंशियल फॉर्म ऑफ इलेक्शन यानी राष्ट्रपति शैली वाले चुनाव की बात शुरू कर दी थी। बीमारी के कारण वह शुरूआती कुछ दिनों के बाद कार्यालय आने में भी असमर्थ थे, लेकिन कर्मठता इतनी थी कि वह अस्पताल या घर बुलाकर भी प्रवक्ताओं को भाजपा का पक्ष रखने का मंत्र दिया करते थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को भी उनकी समझ पर इतना भरोसा था कि जब 2014 में महाराष्ट्र में अकेले चुनाव लड़ने का फैसला लेना था तो शाह ने घोषणा करने से पहले जेटली से सलाह ली थी। उस वक्त भी जेटली अस्पताल में भर्ती थे।

भाजपा को भी खलेगी जेटली की कमी

संगठन बहुत बड़ा होता है, लेकिन उसे बड़ा बनाने में व्यक्तियों का हाथ होता है। आज भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है, दोबारा बहुमत के साथ सरकार में आने का रिकार्ड है तो इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष व गृहमंत्री अमित शाह को जाता है। लेकिन इससे पहले भाजपा को खासकर बुद्धिजीवियों के बीच स्वीकार्य बनाने वालों में एक नाम जेटली भी थे। उनकी कमी भाजपा को भी खलेगी और समाज में अच्छी बातें करने वाले,अच्छी सोच को बढ़ाने वाले लोगों को भी खलेगी।

जेटली का निधन उनके ऐतिहासिक फैसलों की याद दिला रहा है

दिल्ली:- इसे संयोग कहें या कुछ और कि एक साल के अंदर भाजपा के करीब आधा दर्जन से ज्यादा बड़े नेताओं का निधन हो चुका है.पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली भी हमारे बीच नहीं रहे.भाजपा और देश के लिए इन नेताओं की भरपाई करना आसान नहीं होगा.देश के पूर्व वित्त मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के कद्दावर नेता अरुण जेटली का निधन नई दिल्ली के एम्स अस्पताल में हुआ.उनका जन्म 28 दिसम्बर 1952 में हुआ था.वे 66 वर्ष के थे.उन्हें 9 अगस्त को एम्स में तब भर्ती कराया गया था जब उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो रही थी.अरुण जेटली पिछले करीब 2 साल से बीमार चल रहे थे. मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के नए मंत्रिपरिषद के शपथ ग्रहण समारोह से ठीक पहले उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर कहा था कि वो स्वास्थ्य कारणों से नई सरकार में मंत्री नहीं बनना चाहते. इलाज एवं स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं.उनकी बीमारी के कारण ही फरवरी में अंतरिम बजट भी पीयूष गोयल ने पेश किया था. उस वक्त जेटली इलाज के लिए अमेरिका गए हुए थे. हालांकि बीमारी के बावजूद वो देश के राजनीतिक घटनाक्रमों पर करीबी नजर रखते थे और अक्सर प्रमुख मुद्दों पर ब्लॉग लिखकर या फिर ट्वीट कर अपनी राय जाहिर करते रहते थे.

अरुण जेटली पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के भरोसेमंद लोगों में से एक थे. यही कारण था कि जेटली वाजपेयी सरकार में अहम पदों पर आसीन रहे. सबसे पहले वो साल 2000 में राज्य सभा सांसद चुने गए थे. पहले एनडीए (1999-2004) सरकार में उन्होंने करीब पांच मंत्रालयों का कार्यभार संभाला था. अमित शाह और मोदी से पहले इन्हें ही भाजपा का चाणक्य माना जाता था.

गुजरात के 2002 और 2007 के विधानसभा चुनावों में अरुण जेटली ने अहम भूमिका निभाई थी जिसमें भाजपा का परचम लहराया था. 2003 के मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में भी जेटली का अहम योगदान भाजपा को जीत दिलाने में था. यही नहीं कर्नाटक में पहली बार कमल खिलाने का श्रेय भी इन्हें ही दिया जाता है.मोदी सरकार में भी अरुण जेटली को अहम जिम्मेदारियां दी गयीं थी. अपनी बहुयामी प्रतिभा के कारण वो मोदी-शाह के चहेते भी थे. सरकारी योजनाओं की तारीफ करने या फिर विपक्षी पार्टियों के आलोचनाओं को काटने के लिए सरकार के पास इनसे अच्छा कोई वक्ता नहीं था. राफेल सौदा, जीएसटी की जटिलताएं, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में उछाल इत्यादि मुद्दों पर वे मोदी सरकार के संकटमोचक की तरह थे. इनके समय में जीएसटी, नोटबंदी, जनधन योजना, जैसे जबरदस्त कदम भी उठाए गए.

साल 2014 के लोकसभा चुनाव में अरुण जेटली जब अमृतसर से चुनाव हार गए तो मोदी ने उन्हें वित्त और रक्षा मंत्रालय फिर से सौंपे. ये जेटली का मेहनत और लगन तथा मोदी का विश्वास ही था जो इन्हें इतने अहम मंत्रालयों का जिम्मा सौंपा गया था.जब 2016 में नोटबंदी का ऐलान हुआ और उसके बाद उपजे हालातों को बतौर वित्त मंत्री अरुण जेटली ने बेहतरीन तरीके से संभाला था. इनके कार्यकाल में ही जीएसटी लागू किया गया. जनधन योजना का लागू करवाना जेटली साहेब की एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है. महंगाई को काबू में रखने का श्रेय भी अरुण जेटली को ही जाता है.

अपनी बहुयामी प्रतिभा के कारण अरुण जेटली मोदी-शाह के चहेते भी थे,भाजपा में अहम जिम्मेदारी

अरुण जेटली का योगदान पार्टी को आगे बढ़ाने में भी अहम रहा है. जेटली ने अपना राजनीतिक जीवन दिल्ली विश्वविद्यालय से शुरू किया जब वो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अइश्ढ) से जुड़े और 1974 में स्टूडेंट यूनियन के अध्यक्ष बने. देश में इमरजेंसी (1975-1977) के समय वो जेल भी गए. जेल से रिहा होने के बाद वो जनसंघ में शामिल हो गए थे. 1980 में वो भाजपा में शामिल हो गए और 1991 में भाजपा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में अपनी जगह भी बनाई. 1999 में उन्हें प्रवक्ता का पद भी मिला. वर्ष 2002 में वो पार्टी के महासचिव बने.

केंद्र सरकार में जेटली का योगदान

सबसे पहले अरुण जेटली को 1989 में अडिशनल सॉलिसिटर जनरल बनाया गया.उसके बाद प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार में उन्हें 13 अक्टूबर 1999 को सूचना प्रसारण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नियुक्त किया गया था. इसके अलावा पहली बार एक नया मंत्रालय बनाते हुए उन्हें विनिवेश राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नियुक्त किया गया था. राम जेठमलानी के इस्तीफे के बाद 23 जुलाई 2000 को जेटली को कानून, न्याय और कंपनी मामलों के मंत्री का अतिरिक्त कार्यभार भी सौंपा गया था.

अरुण जेटली को दो बार रक्षा मंत्रालय का प्रभार मिलने का सौभाग्य भी प्राप्त था. मई 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद इन्हें वित्त और रक्षा मंत्रालय का प्रभार दिया गया था. वे 2014 में छह महीने रक्षा मंत्री रहे लेकिन बाद में मनोहर पर्रिकर रक्षा मंत्री बनाए गए थे. लेकिन पर्रिकर के गोवा का मुख्यमंत्री बनने के बाद जेटली को 2017 में छह महीने के लिए दोबारा यह प्रभार दिया गया था. इसके बाद निर्मला सीतारमण को यह जिम्मेदारी दी गई थी. यही नहीं, जेटली की बीमारी के चलते पीयूष गोयल ने दो बार वित्त मंत्रालय भी

संभाला था.
इसे संयोग कहें या कुछ और कि एक साल के अंदर भाजपा के करीब आधा दर्जन से ज्यादा बड़े नेताओं का निधन हो चुका है. इसमें भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, सुषमा स्वराज, मनोहर पर्रिकर, एवं अनंत कुमार जैसे दिग्गज नेता शामिल हैं. लेकिन ये भी सत्य है कि भाजपा और देश के लिए इन नेताओं की भरपाई करना आसान नहीं होगा.

मेरा सौभाग्य रहा कि दशकों तक उनके साथ रहा

मोदी ने अरुण जेटली को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, ह्लअरुण जी महान राजनेता थे। बुद्धिजीवी होने के साथ उन्हें कानूनी महारत प्राप्त थी। मैंने जेटली जी की पत्नी संगीता और बेटे रोहन से बातचीत कर संवेदनाएं प्रकट की हैं। अरुण जी में गंभीरता और विनोदप्रियता का अनूठा संगम था। समाज के हर वर्ग में लोग उन्हें चाहते थे। संविधान, इतिहास, सार्वजनिक नीति और प्रशासन की उन्हें गहरी समझ थी। केंद्रीय मंत्री के रूप में उन्होंने कई जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। देश की आर्थिक उन्नति में योगदान दिया, सुरक्षा को मजबूत किया और ऐसे कानून बनाने में महती भूमिका निभाई जो जनता के लिए सहूलियत वाले हों। भाजपा से उनका अटूट रिश्ता रहा। आपातकाल में वो छात्र नेता के तौर पर सक्रिय रहे। उनके निधन से मैंने एक अमूल्य मित्र खो दिया है। ये मेरा सौभाग्य रहा कि मैंने उनके साथ कई दशकों तक काम किया। वे सदा हमारे दिलों में रहेंगे। ओम शांति...।

परिवार का सदस्य खोया

सांस लेने में तकलीफ होने के बाद जेटली 9 अगस्त को एम्स में भर्ती हुए थे।जेटली का सॉफ्ट टिश्यू कैंसर का इलाज चल रहा था। वे इस बीमारी के इलाज के लिए 13 जनवरी को न्यूयॉर्कगए थे और फरवरी में वापस लौटे। जेटली ने अमेरिका से इलाज कराकर लौटने के बाद ट्वीट किया था- घर आकर खुश हूं। उन्होंनेअप्रैल 2018 में भी दफ्तर जाना बंद कर दिया था। 14 मई 2018 को एम्स में ही उनके गुर्दे (किडनी)प्रत्यारोपण भी हुआ था, वे शुगर से भी पीड़ित थे। सितंबर 2014 में वजन बढ़ने की वजह से जेटली की बैरियाट्रिक सर्जरी भी कराई गई थी।

भाजपा की जीत के जश्न में शामिल नहीं हुए थे जेटली

जेटली को छह महीने पहले भी जांच के लिए एम्स में भर्ती किया गया था। डॉक्टरों ने उन्हें इलाज के लिए यूके और यूएस जाने की सलाह दी थी। लोकसभा चुनाव में पार्टी की जीत के बाद भाजपा कार्यालय में हुए कार्यक्रम में भी वो नजर नहीं आए थे। उन्होंने कैबिनेट की बैठक में भी हिस्सा नहीं लिया था। मई 2019 में उन्होंने मोदी से कह दिया था कि नई सरकार में वे शामिल नहीं हो पाएंगे। इसके बाद मोदी उनसे मिलने घर पहुंचे थे।

1973 में ग्रेजुएट, एक साल बाद छात्र संघ के अध्यक्ष बने

जेटली के पिता महाराजा किशन जेटली और मां रतन प्रभा थीं। जेटली के पिता भी वकील थे। जेटली ने स्कूली शिक्षा नई दिल्ली के सेंट जेवियर्स स्कूल से पूरी की। 1973 में श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से ग्रेजुएशन किया। अरुण जेटली 1973 में भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोकनायक जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के लिए गठित राष्ट्रीय समिति के संयोजक थे। 24 मई 1982 को उनका विवाह संगीता से हुआ। उनका एक बेटा रोहन और बेटी सोनाली है। जेटली अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में सूचना और प्रसारण, कानून, न्याय और कंपनी मामलों के मंत्री रहे। 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्हें अमृतसर लोकसभा सीट से कांग्रेस नेता कैप्टन अमरिंदर सिंह से हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद मोदी सरकार में उन्हें वित्त और रक्षा मंत्री बनाया गया। उन्होंने सूचना और प्रसारण मंत्रालय भी संभाला। 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने स्वास्थ्य कारणों से चुनाव नहीं लड़ने का फैसला लिया।

जेटली के 66 साल

जन्म: 28 दिसंबर, 1952

1973 : दिल्ली के श्रीराम कॉलेजसे स्नातक।
1974 : दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्र संघ के अध्यक्ष बने।
1975 : आपातकाल के दौरान गिरफ्तार किए गए।
1977 : दिल्ली यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री ली। वकालत शुरू की।एबीवीपी के अखिल भारतीय सचिव बनाए गए।
1980 : भाजपा में शामिल हुए।
1990 : एडिशनल सॉलिसिटर जनरल बने। बोफोर्स केस में दलीलें दीं।
1991 : भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शामिल।
1998 : यूएन आमसभा में भारतीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल हुए।
1999 : वाजपेयी सरकार में सूचना एवं प्रसारण (स्वतंत्र प्रभार) के साथ विनिवेश मंत्रालय भी संभाला।
2000 : राज्यसभा पहुंचे। इसके साथ ही कानून मंत्रालय का प्रभार भी संभाला।
2006 : पुनः राज्यसभा सांसद निर्वाचित किए गए।
2009 : राज्यसभा में विपक्ष के नेता बने। वकालत छोड़ी।
2012 : तीसरी बार राज्यसभा सांसद बने।
2014 : मोदी सरकार में वित्त के साथ रक्षा मंत्रालय का प्रभार भी संभाला।
2018 : किडनी ट्रांसप्लांट हुआ।
24 अगस्त 2019 : दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन।

अटल जी से लेकर जेटली तक,साल भर में भारतीय राजनीति ने गंवाए अपने 14 अनमोल रत्न

नई दिल्ली:-भारतीय राजनीति के लिए पिछला एक वर्ष काफी नुकसानदायक रहा है।इस दौरान देश ने 14 दिग्गज नेताओं को खो दिया। इनमें से सात की मौत इस साल 20 जुलाई के बाद हुई है, जिसमें से चार का निधन इसी माह में हुआ है।
इस दौरान सबसे ज्यादा क्षति भाजपा को हुई है। पार्टी ने सालभर में अटल जी , सुषमा स्वराज और अरुण जेटली समेत कई बड़े नेताओं को खो दिया है। इनमें से चार चेहरे तो ऐसे थे जो पिछली मोदी सरकार के कैबिनेट में रहे। आइए नजर डालते हैं पिछले एक वर्ष में दुनिया को अलविदा कह गए भारतीय राजनीति के इने अनमोल रत्नों पर।

अरुण जेटली

पूर्व वित्तमंत्री और भाजपा नेता अरुण जेटली का लंबी बीमारी के बाद 24 अगस्त 2019 को नई दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन हो गया। वह 66 वर्ष के थे और पिछले कई हफ्तों से उनका इलाज चल रहा था । उन्हें सांस लेने में तकलीफ की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जगन्नाथ मिश्र

बिहार के पूर्व सीएम और पूर्व केंद्रीय मंत्री जगन्नाथ मिश्रा का दिल्ली के एक अस्पताल में लंबी बीमारी के बाद 19 अगस्त, 2019 को उनका निधन हो गया। उनकी उम्र 82 साल थी। वे तीन बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे।

बाबू लाल गौर

मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम बाबूलाल गौर का लंबे समय तक बीमार रहने के बाद 21 अगस्त, 2019 को भोपाल के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। भाजपा नेता का 89 वर्ष की आयु में हृदय गति रुकने के कारण निधन हो गया।

सुषमा स्वराज

पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का 6 अगस्त, 2019 को 67 वर्ष की आयु में हृदय गति रुकने के कारण निधन हो गया। उन्हें भी स्वास्थ्य में गिरावट के बाद एम्स में भर्ती कराया गया था। सुषमा स्वराज सबसे

पसंदीदा नेताओं में से एक थीं। उनके लिए दुनिया भर के लगभग 50 देशों के राजनयिकों ने शोक संदेश लिखे थे। उनकी मृत्यु हमारे देश के लिए बहुत बड़ी क्षति थी।

जयपाल रेड्डी

जयपाल रेड्डी कांग्रेस के नेता थे, जो पांच बार लोकसभा के सदस्य रहे। वह केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री रह चुके हैं। 28 जुलाई, 2019 को 77 साल की उम्र में हैदराबाद में उनका निधन हो गया।

मांगेराम गर्ग

भाजपा के पूर्व दिल्ली अध्यक्ष और विधायक मांगेराम गर्ग का 21 जुलाई, 2019 को निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे। मांगेरामे लगातार पांच सालों तक वर्ष 1997 से 2002 तक प्रदेश के अध्यक्ष रहे। जबकि वर्ष 2003 से 2008 तक वे दिल्ली विधानसभा के सदस्य रहे।

शीला दीक्षित

20 जुलाई, 2019 को हार्ट अटैक से दिल्ली की तीन बार की मुख्यमंत्री और कांग्रेस की वरिष्ठ नेता शीला दीक्षित का 81 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। शीला के नाम लगातार 15 वर्षों तक दिल्ली के सीएम रहने की उपलब्धि शामिल है। वो वर्ष 1998 से लेकर 2013 तक दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं।

मदन लाल सैनी

राजस्थाने में भाजपा के पूर्व अध्यक्ष मदनलाल सैनी का 75 साल की उम्र में 24 जून 2019 को निधन हो गया था। सैनी जनसंघ के समय से राजनीति में सक्रिय थे। वे लंबे समय तक भारतीय मजदूर संघ से भी जुड़े रहे हैं।

मनोहर पर्रिकर

पूर्व रक्षा मंत्री, गोवा के मुख्यमंत्री और भाजपा नेता मनोहर पर्रिकर 17 मार्च, 2019 को दुनिया छोड़कर चले गए। वह लंबे समय से अग्नाशय के कैंसरे से पीड़ित थे। पर्रिकर चार बार गोवा के मुख्यमंत्री रहे।मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल में मनोहर पर्रिकर ने देश के रक्षा मंत्री की भूमिका निभाई।

अनंत कुमार

पूर्व केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री और भाजपा नेता अनंत कुमार का 59 वर्ष की आयु में 12 नवंबर, 2018 को बेंगलुरु के एक अस्पताल में निधन हो गया। अनंत कुमार को फेफड़ों का कैंसर था। उनका इलाज लंदन और न्यूयार्क में भी हुआ था।

मदन लाल खुराना

दिल्ली के पूर्व सीएम और वरिष्ठ भाजपा नेता मदन लाल खुराना का 28 अक्टूबर 2018 को नई दिल्ली में 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह कुछ दिनों से सीने में संक्रमण और बुखार से पीड़ित थे। वे 1993 से 1996 तक दिल्ली के सीएम के रहे और अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में संसदीय कार्य और पर्यटन मंत्री भी रहे।

अटल बिहारी वाजपेयी

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का पिछले साल 16 अगस्त को लंबी बीमारी के कारण निधन हो गया था। वह 93 वर्ष के थे। उन्होंने साल 2004 में राजनीति से संन्यास ले लिया था और साल 2015 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। वे 3 बार भारत के प्रधानमंत्री बने, लेकिन एक बार ही 5 साल का कार्यकाल पूरा कर सके। वह पहले ऐसे गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे जिन्होंने 5 साल का कार्यकाल पूरा किया।

सोमनाथ चटर्जी

लोकसभा के 10 बार के सांसद, सोमनाथ चटर्जी का 13 अगस्त, 2018 को कोलकाता के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। दमा और सुगर की वजह से पिछले तीन वर्षों से स्वास्थ्य खराब था। वह 2004 से 2009 तक लोकसभा के स्पीकर थे।

एम करुणानिधि

तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एम करुणानिधि का 8 अगस्त, 2018 को निधन हो गया। वह एक मजबूत भारतीय राजनीतिज्ञ के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने छह दशकों तक तमिलनाडु की राजनीति में अपना दबदबा कायम रखा। वह 94 साल के थे और 5 बार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री रहे।

अटल से अरुण तक,एक साल में भाजपा ने खो दिए अपने पांच 'रत्न'

बिधुरंजन उपाध्याय

बीजेपी ही नहीं बल्कि पूरी राजनीतिक पार्टियां अरुण जेटली के निधन से दुखी है.कुछ ही दिनों पहले पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का निधन हो गया.पिछले एक साल के भीतर बीजेपी ने अपने 5 दिग्गज नेताओं को खो दिया है। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली इस दुनिया को अलविदा कह गए हैं.बीजेपी ही नहीं बल्कि पूरी राजनीतिक जमात जेटली के निधन से दुखी है.कुछ ही दिनों पहले पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का निधन हो गया. पिछले करीब एक साल के भीतर बीजेपी ने अपने 5 दिग्गज नेताओं को खो दिया है.इनमें से चार चेहरे तो ऐसे थे जो 2014 की नरेंद्र मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे.इनमें एक शख्सियत ऐसी भी रही जिसने न सिर्फ पार्टी को खड़ा किया बल्कि पहले ऐसे गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे,जिन्होंने 5 साल का कार्यकाल पूरा किया.

भारत रत्न पूर्व पीएम वाजपेयी

25 दिसंबर 1924 को जन्में वाजपेयी बीजेपी के संस्थापकों में शामिल थे और 3 बार भारत के प्रधानमंत्री बने.हालांकि, वह एक बार ही 5 साल का कार्यकाल पूरा कर सके.वह पहले ऐसे गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे,जिन्होंने 5 साल का कार्यकाल पूरा किया.वो पहली बार 1996 में प्रधानमंत्री बने और उनकी सरकार सिर्फ 13 दिनों तक ही चल पाई थी.1998 में वह दूसरी बार प्रधानमंत्री बने,तब उनकी सरकार 13 महीने तक चली थी.1999 में तीसरी बार प्रधानमंत्री बने और 5 सालों का कार्यकाल पूरा किया.

अनंत कुमार

बीजेपी नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत कुमार का निधन 12 नवंबर, 2018 बेंगलुरु में हुआ.बेंगलुरु साउथ से लगातार 6 बार जीत हासिल करने वाले 59 वर्षीय अनंत कुमार को फेफड़ों का कैंसर था. उनका इलाज लंदन और न्यूयार्क में भी हुआ था.वह भाजपा सरकार में संसदीय कार्यमंत्री रहे.छात्र राजनीति से शुरू हुआ उनका सियासी सफर केंद्र में मंत्री बनकर खत्म हुआ.इस बीच उन्होंने करीब दर्जनभर मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाली. वो वाजपेयी सरकार में खेल मंत्री और शहरी विकास मंत्री भी रहे.हालांकि उन्होंने कभी कर्नाटक की राजनीतिक में सक्रियता नहीं दिखाई,वे कर्नाटक में रहकर भी दिल्ली में पार्टी मजबूत करने में अपना जीवन खपा दिया.

मनोहर पर्रिकर

पूर्व रक्षा मंत्री और गोवा के मुख्यमंत्री के रूप में लोगों के दिलों पर राज करने वाले भाजपा नेता मनोहर पर्रिकर 17 मार्च, 2019 को दुनिया छोड़कर चले गए.वह लंबे समय से अग्नाशय के कैंसरे से पीड़ित थे.पर्रिकर चार बार गोवा के मुख्यमंत्री रहे. 2014 में एनडीए सरकार में मनोहर पर्रिकर ने देश के रक्षा मंत्री की भूमिका निभाई.साल 2000-05 में पहली बार सीएम बने. जब 2014 में बीजेपी की अगुवाई में एनडीए की सरकार बनी तो पीएम मोदी ने उन्हें दिल्ली बुलाया, उन्हें सबसे महत्वपूर्ण रक्षा मंत्री का पदभार सम्भाला.रक्षा मंत्री बनने के बाद उन्हें संसद सदस्य बनना जरुरी था और इसके लिए वह यूपी से राज्यसभा सांसद बने. उनके रक्षा मंत्री रहते हुए ही भारत ने पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक की थी.

सुषमा स्वराज

पूर्व विदेश मंत्री, प्रखर वक्ता और भारतीय जनता पार्टी की दिग्गज वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज ने इसी महीने 6 अगस्त को दुनिया को अलविदा कह दिया था.वह 67 साल की थीं.साल 2014 से 2019 तक भारत की विदेश मंत्री ने दुनिया भर के देशों के साथ संबंधों को और मजबूत करने के लिए काफी योगदान दिया.जुलाई 1977 में मुख्यमंत्री देवी लाल की सरकार में उन्हें कैबिनेट मंत्री बनाया गया.वह पहली सबसे युवा कैबिनेट मंत्री रहीं.1987 से 1990 तक वह हरियाणा की शिक्षा मंत्री भी रहीं. साल 1990 में उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में एंट्री की.1996 में दक्षिणी दिल्ली से सांसद चुनी गईं.लेकिन 1998 में वह दिल्ली की मुख्यमंत्री बनीं लेकिन बाद में बीजेपी चुनाव हार गईं और सुषमा ने वापस राष्ट्रीय राजनीति में एंट्री की थी. हालांकि,पूर्व विदेश मंत्री ने स्वास्थ्य कारणों से पिछला लोकसभा चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया.

अरुण जेटली

पूर्व वित्तमंत्री व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अरुण जेटली का लंबी बीमारी के बाद जेटली ने वित्तमंत्री का कार्यभार 2014 से 2018 तक संभाला.इससे पहले वह राज्यसभा में 2009 से 2014 तक नेता प्रतिपक्ष भी रहे.जेटली ने 1973 में दिल्ली के प्रतिष्ठित श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से ग्रेजुएट की डिग्री हासिल की थी.इसके बाद उन्होंने 1977 में दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री हासिल की.उसी समय उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से अपनी राजनीतिक पारी की शुरूआत की. आपातकाल के दौरान जेटली 19 महीने तक जेल में रहे.

'छोटे सरकार' पर कार्रवाई की शैली से 'बड़े सरकार' पर उठ रही है उंगलियां

नदवां पर नालंदा की पड़ गई है कुदृष्टि

सरकार की कार्यशैली से विरोधियों का भी मिल रहा है अनंत को समर्थन

अखिलेश कुमार

बिहार की राजनीति में अनंत सिंह मामले को लेकर पिछले एक पखवाड़े से राजनीतिक गलियारों में सरगर्मी तेज हो गई है। छोटे सरकार के नाम से जाने जाने वाले मोकामा के बाहुबली विधायक अनंत कुमार सिंह पर घर से एके 47 और ग्रेनेड बरामदगी की घटना के बाद जब पुलिस के तेवर कड़े हुए तो बिहार की राजनीतिक सरगर्मी भी बढ़ गई। कभी अनंत सिंह के सामने हाथ जोड़कर खड़े होने वाले और सर झुकाकर अभिवादन करने वाले नीतीश कुमार की सरकार आखिर अचानक इतनी सख्त क्यों हो गई? इस पर सवाल खड़ा होने लगा। बाहुबली से विधायक बने नदवा के लाल अनंत सिंह पर नालंदा के लाल नीतीश कुमार की छत्र छाया होने की बात डेढ़ दशक पहले से ही होती रही है। यहां तक कि 2005 में पहली बार विधायक बने अनंत को 2010 तक नीतीश कुमार न केवल साथ रखे, बल्कि 2010 के विधानसभा चुनाव में उन्हें जदयू के टिकट पर मोकामा से चुनाव भी लड़ाया था। हालांकि 2015 में राष्ट्रीय जनता दल के साथ गठबंधन होने के दौरान जदयू ने उन्हें टिकट नहीं दिया तो वे निर्दलीय चुनाव लड़े थे तथा पुनः तीसरी बार जीत हासिल करने में सफल रहे। अपने भाई बिरंचि सिंह की हत्या का बदला लेने के लिए अपराध की दुनिया में पैर रखने वाले अनंत सिंह का लंबा अपराधिक इतिहास रहा है। उन्हें अपने पड़ोसी विवेका पहलवान से जानी दुश्मनी चलती आ रही है। छोटे सरकार के नाम से पटना तथा बाढ़ और मोकामा इलाके में प्रसिद्ध अनंत सिंह 2005 में नीतीश कुमार की सत्ता संभालने के बाद अपनी संपत्ति और दबदबा में लगातार इजाफा करते गए। और आरोप लगता रहा कि नीतीश कुमार का उन्हें संरक्षण प्राप्त है। लेकिन नीतीश कुमार और लालू प्रसाद के साथ गठबंधन के बाद नीतीश कुमार का रुक अनंत सिंह के प्रति बदल गया, ऐसा आम चर्चा है। उसी दौरान पटना के तत्कालीन एसएसपी जितेंद्र राणा ने अनंत सिंह पर पहली बार सख्त कार्रवाई की थी। उसके बाद एसएसपी विकास वैभव ने भी अनंत सिंह के ठिकानों पर छापामारी कर उनकी हैसियत बताने का काम किया था। पिछले लोकसभा चुनाव में अनंत सिंह राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह के खिलाफ जब बेगूसराय से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़े तो उसी समय से अनंत सिंह तथा ललन सिंह एवं नीरज कुमार के बीच आरोप-प्रत्यारोप और एक दूसरे को देख लेने की बयानबाजी शुरू हो गई थक। इसी बीच पिछले अगस्त महीने में उनके गांव नदवा स्थित पैतृक मकान से एके 47 राइफल और ग्रेनेड बम बरामद होने के बाद पुलिस उनके खिलाफ सख्त हो गई। पुलिस के सख्त रवैए के बाद अनंत सिंह फरार हो गए और 23 अगस्त को दिल्ली स्थित साकेत कोर्ट में जाकर आत्मसमर्पण किया। पुलिस के कार्यशैली पर अनंत सिंह के समर्थकों के साथ ही साथ विपक्ष के वो नेता भी उनसे सहानुभूति दिखाने लगे, जो हमेशा उनके कट्टर विरोधी रहे हैं। इस कार्रवाई के दौरान यह आरोप भी लगा कि बदले की भावना से प्रेरित होकर वर्तमान सांसद राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह के दबाव में प्रशासन ऐसा कदम उठा रही है। सोशल मीडिया से लेकर चौक चौराहों तक लोगों ने अनंत सिंह के विरुद्ध की गई कार्रवाई को राजनीतिक से प्रेरित होकर की गई कार्रवाई बताते देखे गए। और यह सवाल भी उठता रहा की आखिर जब नीतीश कुमार के साथ अनंत सिंह हुआ करते थे तो ऐसी कार्रवाई क्यों नहीं होती थी?

'लिपि सिंह फंसी विवादों में'

वर्तमान में बाढ़ के एएसपी लिपि सिंह के नेतृत्व में ही अनंत सिंह के खिलाफ सख्त कार्रवाई आरंभ हुआ। तो उनपर अनंत सिंह और उनके समर्थकों ने आरोप लगाया की लिपि सिंह राजनीतिक दबाव में आकर गलत तरीके से फंसा रही है। अनंत सिंह ने कहा कि 14 वर्षों तक मैं अपने घर नहीं गया हूं और उसी घर में एके-47 तथा ग्रेनेट दिखाकर मुझ पर कार्रवाई की जा रही है। लिपि सिंह तब विवादों में फंस गई जब अनंत सिंह ने दिल्ली स्थित साकेत कोर्ट में आत्मसमर्पण किया और कोर्ट में उन्हें लेने के लिए सांसद की स्टीकर लगी वाहन से वो न्यायालय परिसर पहुंची। जब जांच पड़ताल हुआ तो पता चला कि वह वाहन बिहार के एमएलसी व जद यू नेता रणवीर नंदन का है। एक एमएलसी का वाहन होने के बावजूद उस पर सांसद का स्टीकर लगाया गया था। चुकि लिपि सिंह जनता दल यू के राष्ट्रीय महासचिव सह राज्यसभा सांसद आरसीपी सिंह की पुत्री है। अनंत सिंह का आरोप रहा है की लिपि सिंह अपने पिता आरसीपी सिंह, सांसद राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह तथा सरकार के दबाव में आकर हमें गलत ढंग से फंसा रही है और प्रताड़ित कर रही है। सरकारी सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद सांसद के स्टीकर लगे वाहन से कोर्ट परिसर जाने की घटना ने अनंत सिंह और विरोधियों के आरोपों पर एक तरफ से मुहर लगा दी।

यह सच है कि अनंत सिंह पर कई बड़े और संगीन अपराधिक मामले दर्ज हुए तथा अपराध जगत के रास्ते राजनीति में प्रवेश करने के बाद उन्होंने अकूत संपत्ति भी अर्जित की। इसके बावजूद सुशासन के नाम पर 2005 में बिहार की सत्ता संभालने वाले नीतीश कुमार ने अनंत सिंह सहित कई बाहुबलियों को साथ लेकर चलने से कभी परहेज नहीं किए। अनंत सिंह के साथ उनके करीब का रिश्ते हमेशा भी हमेशा चर्चा में रहा है। पिछले रिश्ते और फिर हाल के दिनों में उनके उपर की जा रही कार्रवाई की शैली ने विरोधियो को भी अनंत सिंह के प्रति सहानुभूति दिखाने का रास्ता खोल दिया है।

अपराधियों के निशाने पर वर्दी वाले

शहाब तनवीर शब्बू

जब तक सूरज चांद रहेगा मिथिलेश तेरा नाम रहेगा यह आवाज बिहार के एक जांबाज दारोगा मिथिलेश कुमार के लिए थी, जो भोजपुर के आरा मझौआ गांव में गूंज रही थी। आरा के शहीद सब इंस्पेक्टर मिथिलेश कुमार जो बीस अगस्त को सारण के मढ़ौरा में अपराधियों की गोली का शिकार हो गये थे, के पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेट कर वहां रखा गया था। उन्हें श्रद्धांजलि देने न केवल भोजपुर के एसपी सुशील कुमार के साथ कई पुलिस पदाधिकारी पहुंचे थे, बल्कि नाते-रिश्तेदारों के अलावा साथी और सहयोगी भी थे।

मिथिलेश की मौत से एक बार फिर बिहार में अपराधियों का खूनी चेहरा सामने आया है। अपराधियों ने मिथिलेश कुमार की हत्या कर प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के उस बयान की हवा निकाल दी है, जिसमें उन्होंने कहा था कि प्रदेश में कानून का राज स्थापित है। हाल के दिनों में अपराधिक घटनाओं में अप्रत्याशित ढंग से वृद्धि हुई है, जिससे आम आदमी दहशत में है। आंकड़े बताते हैं कि यहां हत्या, अपहरण और बलात्कार की घटनाएं ज्यादा हो रही हैं। खासकर हत्याओं का सिलसिला काफी तेज हो गया है। पिछले आठ महीने में सैकड़ों लोगों की हत्या हो जाने के आंकड़े सरकारी खाते में दर्ज है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अमन चैन वाले बहुप्रचारित दावे की विश्वसनीयता क्या है? सत्ता रचित भ्रमजाल को तोड़ने जैसा यह प्रश्न अब पूछा जाने लगा है। हालात लालू-राबड़ी राज से भी बदतर होते जा रहे हैं जैसी चर्चा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को चिंतित कर दिया है। जाहिर है कि राज्य सरकार के खुफिया विभाग से भी उन्हें इसके संकेत मिले होंगे। इसी कारण नीतीश कुमार ने पिछले सप्ताह पुलिस और प्रशासनिक महकमें को झकझोरने वाली बैठकें बुलाई और बेकाबू होती जा रही स्थिति को संभालने के लिए सख्त निर्देश दिए हैं। क्योंकि सरकार के लिए भी कानून व्यवस्था का मसला सिर दर्द बन गया है।

राज्य में अन्य जगहों की कौन कहे, राजधानी पटना में भी आपराधिक घटनाओं का ग्राफ लगातार ऊपर चढ़ता जा रहा है। कार्रवाई के नाम पर सिर्फ पुलिस कर्मियों के तबादले हो रहे हैं। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि लालू-राबड़ी के शासन के समय फिरौती के लिए घटनाएं ज्यादा होती थी, वहीं नीतीश के शासन में हत्या की घटनाएं ज्यादा बढ़ी हैं। स्पीडी ट्रायल के जरिए बड़ी तादाद में अपराधियों को सजा दिलाने जैसी सरकारी वाहवाही की भी हवा निकल चुकी है। पुलिस की लचर तफ्तीश या ठोस साक्ष्य के अभाव में अपराधी ऊंची अदालत में अपील के बाद छूट जाता है। भले ही स्पीडी ट्रायल वाली निचली अदालत से उसे सजा मिली हो। प्रदेश के मुख्यमंत्री, विधायक बड़े-बड़े अधिकारी या दबंगों की सेवा या सुरक्षा में पुलिसकर्मियों की बड़ी तादाद लगी हुई हैं। भले ही अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस बल कम पड़ जाए। पुलिस के आला अधिकारियों से लेकर निचले स्तर तक पुलिसकर्मियों की पूरी फौज शराबबंदी के नाम पर अवैध कारोबारियों के पीछे भाग रही है और अपराधी आटे की बोरियों में छिपाकर शराब और अवैध हथियारों की तस्करी कर रहे हैं और यह सारा खेल पुलिस के कई भ्रष्ट अधिकारियों की निगरानी में चल रहा है जिससे नीतीश कुमार की सरकार भी वाकिफ है। बात साफ है बिहार में पेशेवर अपराधियों का ही नहीं आपराधिक राजनीति का भी आतंक है।

प्रदेश में लगातार हो रही हत्याओं से बैठे बिठाये विपक्षी पार्टियों को सरकार पर हमलावर होने का मुद्दा हाथ लगा गया है। इन्हीं सारी घटनाओं को सामने रख राष्ट्रीय जनता दल प्रदेश में जंगलराज का राग अलापने लगी है। सरकार को अपराध के मामले पर घेरने लगे राजद नेता एवं पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव कहते हैं कि यह कैसा सुशासन है, जहां खाकी वर्दीधारियों को गोलियों से भूना जा रहा है। कचहरियों में बम विस्फोट किए जा रहे हैं। राज्य में अधिकारी भी सुरक्षित नहीं हैं। भाजपा के साथ गठबंधन के बाद न तो राज्य में सुशासन है और न ही कानून का राज। प्रदेश में पुलिसकर्मियों की नृशंस हत्या ने नीतीश कुमार के सुशासन के दावों की धज्जियां उड़ा दी हैं। जिस तरह से प्रदेश के डीजीपी गुप्तेश्वर पांडेय का बयान आया कि अपराधी कभी भी उन्हें गोली मार सकते हैं। तेजस्वी यादव आगे सवालिया लहजे में कहते हैं कि अगर राज्य के डीजीपी इतने डरे और सहमें हुए हैं तो आम आदमी का क्या हाल होगा? बीस अगस्त की शाम सारण के मढ़ौरा एलआईसी चौक पर एसआईटी के प्रभारी सब इंस्पेक्टर मिथिलेश कुमार साह और सिपाही फारूक आलम की अपराधियों ने क्रूरता की सारी हदों को लांघते हुए जिस ढंग से हत्या की, उसने एक साथ कई सवाल खड़े कर दिए हैं। मिथिलेश कुमार दोपहर लगभग चार बजे के करीब अपने सहयोगियों राजनीश कुमार, फारूक आलम, जितेंद्र कुमार और रजत कुमार के साथ बोलेरो से हरबे हथियार के साथ किसी अनुसंधान के लिए निकले थे। जांच पड़ताल के बाद लौटने के दौरान तमाम लोग

मढ़ौरा बाजार के शिव वस्त्रालय के पास जैसे ही पहुंचे एक उजले रंग की स्कॉर्पियो ने उनकी बोलेरो को आगे से घेर लिया। गाड़ी रूकते ही आठ इस की संख्या में रहे अपराधी पुलिसकर्मियों पर अंधाधुंध फायरिंग करने लगे। यहां तक कि पुलिस वालों को संभलने का मौका ही नहीं दिया। फायरिंग इतनी जबरदस्त थी कि मौके पर ही एसआईटी के बहादुर दारोगा मिथिलेश कुमार साह और हवलदार फारूक आलम की मौत हो गयी। जबकि सिपाही रजनीश कुमार को भी गोली लगी। जाते-जाते अपराधी पुलिस वालों का एक एके-47 राइफल और दो पिस्टल भी लेकर फरार हो गए।

एलआईसी चौक जहां गोली चली पूरी तरह से घटना के समय गुलजार था। यह चौक मढ़ौरा का मुख्य बाजार है। वहां रात दस बजे तक भीड़ भाड़ रहती है। घटना के समय रहे वहां के लोगों का कहना है कि उन्हें लगा कि अपराधियों के ही दो गुटों के बीच मुठभेड़ हो रहा है, क्योंकि जिस बोलेरो पर एसआईटी की टीम थी, उसपर पुलिस का स्टीकर नहीं लगा था। यही वजह है कि वहां से गुजर रहे लोग भी गोलियों की आवाज सुनकर मौत की डर से आगे नहीं बढ़े। बाजार में आए लोग बाइक एवं साइकिल छोड़कर भाग निकले।

कड़क मिजाज अफसर के तौर पर अपनी पहचान रखने वाले मिथिलेश कुमार साह की हत्या में पहले नक्सलियों और नट गिरोह पर शक गया। लेकिन घटना स्थल से बरामद एक रिवाल्वर के सहारे पुलिस टीम असली कातिलों तक पहुंचने में कामयाब रही।

घटना स्थल से हत्या में प्रयुक्त रिवाल्वर छपरा जिला परषिद की चेयरमैन मीना अरूण के नाम से होने की बात सामने आते ही पुलिस महकमें से लेकर राजनीतिक गलियारों में भूचाल आ गया। हत्या के मामले में बोलेरो में सवार रहे सिपाही रजनीश कुमार के बयान पर जिला परिषद की अध्यक्ष मीना अरुण उनके पति पूर्व मुखिया अरूण सिंह (बलिया जेल में बंद), मीना के भतीजे सुबोध सिंह, राजू सिंह, रोहित सिंह, अभिषेक सिंह, पवन सिंह को नामजद अभियुक्त बनाते हुए मुकदमा दर्ज कराया गया। मीना अरूण को पुलिस ने हिरासत में लेकर जेल भेज दिया। जबकि अभिषेक कुमार सिंह ने दबिश की वजह से कोर्ट में सरेंडर कर दिया।

अपराधियों ने मिथिलेश कुमार साह और फारूक आलम की जिस तरह से हत्या की उससे साफ जाहिर है कि हत्यारों का मकसद गाड़ी में बैठे तमाम लोगों को मौत की नींद सुला देना ही था। प्रदेश के खुफिया अधिकारी भी यही मानते हैं। यही वजह है कि घटना स्थल के निकट लगे तमाम मोबाइल टावरों से उन नंबरों की खोज बीन की गयी जिनसे घटना के थोड़ी देर पहले और बाद में देर तक बात हुई थी। ऐसा नहीं है कि मिथिलेश कुमार साह पहले पुलिस अधिकारी हैं जो किसी अपराधी की गोली का शिकार बने हैं। पिछले तीन साल के अंदर प्रदेश में जमादार से लेकर पुलिस इंस्पेक्टर स्तर के एक दर्जन से ज्यादा अधिकारियों की हत्या हो चुकी है। कुछ मामलों का खुलासा हुआ है तो कई माले अब भी अनसुलझे हैं। इनमें छपरा, आरा, गोपालगंज, पूर्णियां, नवादा, फतुहा, बक्सर, नालंदा, मोकामा और नवादा शामिल है। कल तक नक्सलियें के निशाने पर रहने वाले खाकी वर्दी वाले अब सीधे पेशेवर अपराधियों के टारगेट पर हैं पुलिस के अधिकारियों को ही क्यों निशाना बनाया जा रहा है ?

यह भी जांच का विषय है। एसटाईटी के दारोगा मिथिलेश कुमार की हत्या में नामजद किए गए अरूण सिंह के बारे में कहा जा रहा है कि वह पुराना गैंगस्टर है। उसकी अदावत मढ़ौरा थाना के नेठुआ गांव के ही दूसरे हिस्ट्रीशीटर मुन्ना ठाकुर से चलती है। कभी दोनों दोस्त हुआ करते थे लेकिन अब दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। अरूण सिंह को कई बड़े राजनेताओं का सीधे वरदहस्त प्राप्त है जिसके बारे में सारण का बच्चा बच्चा जानता है। इसी राजनीतिक रसूख की बदौलत ही वह अपनी पत्नी मीना अरूण को छपरा जिला परिषद के अध्यक्ष की कुर्सी तक पहुंचाने में कामयाब रहा, जिससे उसकी राजनैतिक हैसियत भी बढ़ी। और इसी हैसियत के बदौलत अरूण सिंह ने जिले के तमाम ठेके पट्टों पर भी अपने गुर्गों के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कब्जा जमाया या जमा रखा है। अरूण सिंह और मुन्ना ठाकुर के बीच दुश्मनी के बीज भी इन्हीं धंधों की वजह से पड़े। मिथिलेश कुमार ही हत्या की गुत्थी सुलझने के लिए गठित एसआईटी और खुफिया एजेंसियों की जांच जैसे जैसे आगे बढ़ रही है कई नए- नए खुलासे हो रहे हैं जिससे पुलिस अधिकारी भी सकते में हैं। फिलहाल एसआईटी पूरे मामले की तह में जाकर कर जांच कर रही है। कुछ पुलिस अधिकारियों का मानना है कि अपराधियों पर नकेल कसने का अंजाम मिथिलेश को मौत के रूप में मिला। मिथिलेश ने जिस तरह से थाना प्रभारी रहते या एसआईटी में आने के बाद अपराधियों और लंपटों पर लगाम कसी, उसके चलते अपराधियों के साथ- साथ नक्सली भी परेशान थे। अपराधियों के खिलाफ कड़े तेवर रखने वाले मिथिलेश तमाम चुनौतियों के बावजूद बेखौफ ड्यूटी बजाते रहे।

हालांकि पुलिस अधिकारियों के ख्यालात से इतर अंडरवर्ल्ड के सूत्रों का कहना है कि घटना के दिन एसआईटी की पूरी टीम दो अपराधी गिरोहों अरूण सिंह और मुन्ना ठाकुर के बीच चल रही वर्चस्व का शिकार हो गयी। अगर मिथिलेश और उनकी टीम पुलिस वर्दी में होती एवं बोलेरो पर पुलिस का स्टीकर लगा होता तो शायद अपराधी इस वारदात को अंजाम ही नहीं देते। सूत्र बताते है कि घटना के दिन अरूण सिंह गिरोह को जानकारी मिली थी कि मुन्ना ठाकुर पेरौल पर जेल से बाहर आ रहा है और उसके निशाने पर अरूण सिंह गिरोह के लोग होंगे। इतनी जानकारी मिलते ही अपने आका के इशारे पर अरूण सिंह गिरोह के लोग मुन्ना ठाकुर के कुछ करने के पहले ही उसे टपकाने का फूलप्रूफ इंतजाम कर लिया। शाम होते ही अरूण सिंह गिरोह के लोग अपने हरबे हथियार के साथ मुन्ना ठाकुर को हमेशा के लिए रास्ते से हटाने के लिए मढ़ौरा की तरफ स्कॉर्पियो से निकल पड़े। एलआईसी चौक पर ज्यों ही इनकी गाड़ी पहुंची सामने से एक बोलेरो गाड़ी आती दिखी। जिसमें हथियारों से लैस लोग बैठे थे। चौक पर पानी और कीचड़ होने से बोलेरो थोड़ी धीमी हुई ऐसा देख स्कॉर्पियो पर सवार अरूण सिंह गिरोह के लोगों ने समझा की बोलेरो में मुन्ना ठाकुर अपने गुर्गों के साथ हथियारों के साथ आ रहा है। बस फिर क्या था बोलेरो पर सवार एसआईटी की टीम कुछ समझ पाती इसके पहले ही अरूण सिंह गिरोह के बदमाशों ने बोलेरो पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। पांच से सात मिनट तक अपराधी गोली बरसाते रहे। तब तक इस गोली बारी में आगे बैठे सब इंस्पेक्टर मिथिलेश कुमार साह, हवलदार फारूक आलम ढेर हो चुके थे। फारूक के हाथ में रही एके 47 और दो पिस्टल बदमाश लेकर फरार हो गए। कहा तो यह भी जा रहा हे कि गोलीबारी के बाद गिरोह के लोगों ने हवाई फायरिंग करते हुए नारा भी लगाया कि हमने मुन्ना ठाकुर को मार दिया। उसके बाद मची भगदड़ के बीच हथियार लहराते बदमाश अपनी गाड़ी से फरार हो गए। घटना के बाद पहुंची पुलिस की टीम को एक रिवाल्वर गिरा हुआ मिला जिसे पुलिस ने जब्त कर लिया।

जांच पड़ताल के बाद यह खुलासा हुआ कि घटना स्थल से बरामद रिवाल्वर छपरा जिला परिषद की चेयरमैन मीना अरूण के नाम जारी हुआ है। बस यहीं से पुलिस की तफ्तीश का रूख बदल गया। हालांकि मीना अरूण अपनी गिरफ्तारी के बाद भी जांच एजेंसियों के सामने कहती रहीं कि उनका रिवाल्वर घटना स्थल तक कैसे गया इसकी उन्हें जानकारी नहीं है। मामला चहे जो यह तो तफ्तीश क मामला है। लेनि पूरे क्षेत्र में इस बात की भी चर्चा है कि मीना अरूण का रिवाल्वर उनका भतीजा सुबोध सिंह इस्तेमाल करता था जो हमेशा मीना के साथ साए की तरह चलता था। यही कारण है कि एसआईटी की टीम पर गोलीबारी के मामले में उसपर भी मुख्य अभियुक्त के रूप में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। साजिशकर्त्ता के रूप में अभियुक्त बनाए गए अरूण सिंह यूपी के बलिया में मुन्ना ठाकुर के भाई लालू ठाकुर तथा लाल मोहन के हत्या के मामले में बंद है। दोनों की हत्या बलिया के रेवती गांव में पिछले साल कर दी गयी थी । लाश कुंए से पुलिस ने बरामद किया था। हत्या का आरोप अरूण सिंह पर लगा और उसके खिलाफ रेवती थाने में मामला दर्ज हुआ। तभी से वह बलिया जेल में है। उसके बावजूद जेल से ही वह अंडरवर्ल्ड की दुनिया का संचालन अपने गुर्गों के माध्यम से कर रहा है। उसके गुर्गे एक इशारे पर मरने मारने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं, तभी तो मुन्ना ठाकुर की हत्या का फरमान मिलते ही इन्होंने मुन्ना ठाकुर समझ दोराग मिथिलेश कुमार एवं फारूक आलम की बेरहमी से हत्या कर दी।

इस तरह की लगातार हो रही घटनाओं से जाहिर है कि प्रदेश में अपराधियों का मनोबल काफी ऊंचा हो गया है। अपराधियों और लंपटों के दिलों से पुलिस क खौफ खत्म हो गया है। पुलिस ने अगर हमलों की प्रवृति पर अंकुश नहीं लगाया तो अपने वाले दिनों में अपराधियों के सामने पुलिस तमाशा बन कर रह जाएगी।

दो धारी तलवार या फिर दुविधा में नीतीश कुमार

अखिलेश कुमार

पटना-जनता दल यू और नीतीश कुमार के सबसे करीबी माने जाने वाले आरसीपी सिंह तथा प्रशांत किशोर की राजनीतिक बयानबाजी और गतिविधियां जदयू के दो विचारधाराओं को प्रदर्शित करने का प्रयास कर रही है.आज के राजनीतिक माहौल में यह दोनों लोग नीतीश के खास विश्वास पात्रों में सबसे ऊपर हैं.लेकिन दोनों की बयान बाजी से स्पष्ट होता है कि या तो जनता दल यू और नीतीश कुमार दो धार वाले तलवार पर चल कर अपनी राजनीतिक भविष्य के विकल्पों को खुला रखना चाहते हैं,या फिर उनके दल के अंदर उनके खासम खास लोग ही दो अलग-अलग विचार रखते हैं.

कश्मीर को लेकर अनुच्छेद 370 पर नीतीश कुमार की ज़िद के बाद पार्टी के अंदर ही उभरे विरोध के स्वर से हो रही क्षति को कंट्रोल करने के लिए जद यू के राष्ट्रीय महासचिव आरसीपी सिंह आगे आए थे.आरसीपी सिंह का आज भी मानना है कि भाजपा के साथ रहना चाहिए और भाजपा के निर्णय का विरोध करना पार्टी के सेहत के लिए अभी हानिकारक हो सकता है.

लेकिन ठीक इसके विपरीत नीतीश कुमार के राजनीतिक रणनीतिकार कहे जाने वाले जदयू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रशांत किशोर ने भाजपा से अलग हटकर भाजपा के नीतियों और निर्णय के विपरीत बयानबाजी करने से बाज नहीं आ रहे हैं। आसाम में सर्वेक्षण के बाद 19 लाख से अधिक लोगों की नागरिकता पर उठे सवाल के बाद केंद्र सरकार के निर्णय पर उन्होंने आज सवाल उठा दिया है। और कहा है कि देश 19 लाख लोग आज अपने ही देश में विदेशी बन गए। इनका क्या होगा?उन्होंने सरकार के एनआरसी के कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाया है जो सीधे-सीधे केंद्र सरकार को चुनौती देने जैसा है। केंद्र सरकार खासकर बंगलादेशी व विदेशी घुसपैठिया को चिन्हित करने के लिए यह कदम उठाया है।जिसका विरोध करते हुए सरकार के निर्णय पर ही पीके ने सवाल खड़ा किया.

अब बड़ा सवाल ये उठता है कि क्या नीतीश कुमार के निर्देश पर उनके दो प्रमुख सहयोगी द्वारा भाजपा के पक्ष और विपक्ष बयानबाजी हो रही है, या फिर नीतीश कुमार के बगैर सहमति के ये दोनों नेता पार्टी में अपना वर्चस्व बनाने या फिर एक दूसरे से मतभेद होने के संकेत जनता के बीच अपने बयानों के माध्यम से देना चाहते हैं?

विधानसभा चुनाव हमें हर हाल में जीतना है:तेजस्वी

बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं एवं सदस्यता अभियान के प्रभारियों से आह्वान किया है कि इस बार का विधानसभा चुनाव हमे हर हाल में जीतना है.इसलिए कार्यकताओं को चाहिए कि वे वंचित वर्ग के बीच मे जाएं, उन्हें विश्वास दिलाएं कि राजद उनका सच्चा हमदर्द है.राजद समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर 2020 में होने वाले विधानसभा चुनाव में हर हाल में जीत हासिल करेगा.वे पार्टी कार्यालय में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे.इस बैठक में राज्य के नवनियुक्त सदस्यता अभियान प्रभारी एवं सह प्रभारी शामिल थे.तेजस्वी यादव ने कहा कि राजद के लोगों को विधानसभा में केवल जीत के लिए लड़ना है.इसमें कोई कोर कसर नहीं छोड़नी है.इसके लिए उन्होंने आपसी मतभेद भुलाने की अपील की.तेजस्वी यादव ने कहाँ कि अब तक पचास लाख से ज्यादा सदस्यता अभियान के आवेदन जिलों में भेजे गये हैं,जिसकी वापसी नौ अक्टूबर से होगी.

मोटर वाहन अधिनियम 2019 को लेकर आम जनता के बीच आक्रोश

बीते 1 सितम्बर से नया मोटर वाहन अधिनियम 2019 लागू किया गया है। मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और हिमाचल प्रदेश ने फिलहाल यह संसोधित अधिनियम लागू नहीं किया है। वही राजस्थान सरकार ने जुमार्ने की राशि में बदलाव करने की बात कह रही है। यह मोटर वाहन अधिनियम 2019 पुरे बिहार में भी बदलाव के साथ लागू किया जा चूका है। इस अधिनियम के लागू होते ही जुमार्ने के राशि मे 5 से 10 गुना की बढ़ोतरी हो गई। साथ ही कुछ नए मामलो में भी सजा का प्रावधान किया गया है।

महँगाई एवं मंदी को बढ़ावा

नए अधिनियम के लागू होते ही निजी एवं व्यावसायिक वाहन मालिकों के बीच आक्रोश का माहौल है। वाहन मालिकों का कहना है कि वर्त्तमान में आर्थिक मंदी लगभग सभी क्षेत्रों में छायी हुई है। जिसके कारण उन्हें काम मिलना मुश्किल होता जा रहा है। वाहन चालकों को कई तरह के कर भी देने होते है। उसके अतिरिक्त जुमार्ने की राशि में 5 से 10 गुना की वृद्धि वाहन चालकों को हतोत्साहित करने का काम कर रही है। साथ ही निजी वाहन मालिकों का भी कहना है कि जुमार्ने की राशि में कई गुना बढ़ोतरी से जनसामान्य द्वारा इसके वहन करने में दिक्कते आ सकती है।

भ्रष्टाचार को बढ़ावा, आमजन की जेब में डाका

साथ ही यह भी चर्चा का विषय बन गया है कि ओवरलोडिंग एवं कागजात में कमी बताकर भ्रष्ट अधिकारियों के द्वारा अवैध वसूली की जाती रही है। नए अधिनियम से भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा मनमानी वसूली में और भी तेजी आएगी। विपक्ष भी सरकार पर बालू के नाम अवैध वसूली का आरोप लगाते रही है। लोगो का ये भी कहना है कि जुमार्ने की राशि में बढ़ोतरी से जनसामान्य के उपभोग में लायी जाने वाली वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी, जो अंततः मंदी के आग में घी डालने का काम करेगी। कुछ लोगो का यह भी कहना है कि इस तरह के अधिनियम का उपयोग आसन्न विधानसभा चुनाव के लिए अवैध फण्ड इकठ्ठा करने के लिए किया जा सकता है। आमजन हाल ही में पान मसाले के कुछ उत्पादों पर लगाई गई रोक को भी इसी नजरिए से देख रही है।

यह बदलाव सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी छाया रहा। कुछ लोगों अपने अपने अन्दाज में इस फैसले का स्वागत किया तो कुछ लोगों ने इसमे खामियां गिनाई।

दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली पुलिस ने रविवार को संशोधित मोटर वाहन अधिनियम के लागू होने के बाद यातायात नियमों के उल्लंघनकताओं को 3,900 चालान जारी किए।

ज्ञात हो की नए कानून के तहत, हेलमेट या सीट-बेल्ट न पहनने वाले लोगों पर रूपए 1,000 का जुमार्ना लगाया जाएगा, जो पहले 100 रूपए था, जबकि बिना लाइसेंस के ड्राइविंग करने वालों पर 5,000 रूपए तक का जुमार्ना लगाने का प्रावधान है और तीन महीने की जेल का सामना करना पड़ सकता है।

बिहार के युवाओं में टैलेन्ट की कमी नहीं, गाइडेंस की है जरूरत

सफलता के लिए सही मार्गदर्शन की होती है जरूरत

बिहार पुलिस की अतुलनीय,अनुकरणीय और सराहनीय योगदान

कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत बीपीएससी एवं दारोगा बहाली के लिए जिला पुलिस निःशुल्क दे रही मार्गदर्शन

बिधुरंजन उपाध्याय

भागलपुर और मुजफ्फरपुर पुलिस ने कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत एक मिसाल कायम किया है.यहां अब छात्रों को स्नातक स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के लिए महंगी फीस नही भरनी होगी और ना ही गुणवत्तापूर्ण अधयन्न के लिए भटकना होगा.भागलपुर में वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती एवं मुजफ्फरपुर एसएसपी मनोज कुमार के निर्देशन में पुलिस पाठशाला की शुरआत की जा रही है.आर्थिक मंदी और रोजगार जाने की खबर के बीच आपको एक वैसी खबर पढा रहे हैं जो बिहार पुलिस के पदाधिकारी पुलिस पाठशाला के रूप में कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत हजारों छात्रों को यूपीएससी,बीपीएससी,सब इंस्पेक्टर और कई नौकरी वाली परीक्षाओं की तैयारी पिछले तीन वर्षों से कराई जा रही है.मुफ्त में शिक्षा दान की परंपरा में आईएएस,आईपीएस,विद्वान प्रोफेसर, बिहार सरकार के अधिकारी और समाज के वैसे लोग कर रहे है जिन्हें मदद करने का शौक है.ऐसे लोग बिहार से नई कहानी लिख रहे हैं.बिहार के दो जिलो भागलपुर और मुजफ्फरपुर में इसका संचालन जिले के सीनियर एसपी के नेतृत्व में हो रहा है.

पुलिस पाठशाला की शुरूआत भागलपुर से हुई थी.तब भागलपुर में एसएसपी के रूप में मनोज कुमार पदस्थापित थे.एसएसपी मनोज कुमार का मुजफ्फरपुर तबादला होने के बाद आज उसी लकीर को और लंबा करते हुए भागलपुर के एसएसपी आशीष भारती सफल संचालन कर रहे हैं.लेकिन जब मनोज कुमार मुजफ्फरपुर के एसएसपी बने तो वहां भी कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत हजारों छात्र छात्राएं तैयारी में लगे हैं.

पिछले तीन साल में पुलिस पाठशाला का आउट पुट की बात करें तो तकरीबन 60 से अधिक सब इंस्पेक्टर सिर्फ भागलपुर से पुलिस पाठशाला ने दिया है.अधिकारी बताते हैं कि बीपीएससी में भी पुलिस पाठशाला से 40 से ज्यादा छात्र

सफल होंगे.बस रिजल्ट का इंतजार है.खास बात यह भी है कि क्लास लेने वाले अधिकारी अपने कार्यालय समय के पहले यानी सुबह 6 बजे से 9 बजे तक पुलिस पाठशाला में पढ़ाते हैं.भागलपुर एसएसपी आशीष भारती बताते हैं कि उनको जो पुरखों से मिला उसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा दान के रूप में समाज को दे रहे हैं.

भागलपुर जिला बिहार में पटना के बाद दूसरा बड़ा शिक्षा का हब है.और तकरीबन 15 जिलों के छात्र छात्राएं निजी लॉज में रहकर अपना कैरियर संवार रहे होते हैं.चुकी भागलपुर कमिश्नरी जिला भी है और सामान्य विवि,कृषि विवि,इंजीनियरिंग कॉलेज और मेडिकल कॉलेज होने के कारण पठन पाठन का एक अच्छा माहौल है.ऊजार्वान और ओजस्वी बनाने के लिए मोटिवेटर रविकांत घोष और मास्टर की के रुप में अधिकारी राजेन्द्र चंद्रवंशी जैसे कई प्रतिभावान शिक्षक पिछले तीन सालों निःस्वार्थ भाव से पुलिस पाठशाला में अपना समय दे रहे हैं.नतीजा भटकते युवाओं को सही दिशा भी मिल रहा है और क्राइम कंट्रोल में मदद भी मिलती है.

अगर इसके दीगर बात करें तो भागलपुर, पटना, बनारस, इलाहाबाद और दिल्ली जैसे जगहों पर हजारों कोचिंग संस्थान हैं,लेकिन मुफ्त में शिक्षा दान वहां नहीं है.अभी बिहार में आईपीएस और आईएएस के द्वारा शुरू किया गया है और उनकी मदद के लिए बिहार सरकार के अधिकारी,विवि के विद्वान प्रोफेसर और समाज के जागरूक लोग सामने आ रहे हैं.

क्या कहते है भागलपुर एसएसपी

संस्थान के सम्बंध में जानकारी देते हुए भागलपुर के वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती ने बताया कि इससे पूर्व भी इस तरह की निःशुल्क कोचिंग हमलोगों ने चलाया जिससे हमलोगों को विगत के कई प्रतियोगी परीक्षा में छात्रों द्वारा बेहतर परिणाम मिला और पुनः इसको वृहद रूप से शुरू करने का फैसला लिया.उन्होंने बताया कि यहां अब प्रतिदिन कक्षा चलाया जाता है.कोचिंग में सभी गुणी शिक्षक और पदाधिकारी द्वारा छात्रों को पढ़ाया जा रहा है और उन्हें बेहतर शिक्षा भी दी जा रही है.

क्या कहते है मुजफ्फरपुर एसएसपी

संस्थान के सम्बंध में जानकारी देते हुए मुजफ्फरपुर के एसएसपी मनोज कुमार ने कहा हमारा उद्देश्य युवाओं को रोजगार के लिए तैयार करने के साथ साथ सबों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है,ताकि सफल एवं सुसज्जित समाज का निर्माण हो सके. निश्चित ही भागलपुर और मुजफ्फरपुर के वरीय पुलिस अधीक्षक द्वारा की गई यह शुरआत अतुलनीय,अनुकरणीय और सराहनीय है.इस शुरआत से जिले में शिक्षा प्रेमी अभिभवकों और छात्रों में हर्ष का माहौल है.खासकर छात्राओं में विशेष खुशी इस वजह से है कि उनको अब भी किसी कारणों से बाहर नही भेजा जाता है जहां अब वह अपने इच्छा अनुसार पढ़ पाएगी और अपने मंजिल को प्राप्त कर पायेगी।

पुलिसकर्मियों को अब अपने जन्मदिवस के अवसर पर दो दिनों की छुट्टी मिल सकेगी

किशनगंज। वर्ष 2019 के स्वतंत्रता दिवस पर हरदिल अजीज एसपी कुमार आशीष ने किशनगंज जिले के पुलिसकर्मियों को बड़ी खुशखबरी दी है. ड्यूटी के बोझ के तले दबे इन पुलिसकर्मियों को अब अपने जन्मदिवस के अवसर पर दो दिनों की छुट्टी मिल सकेगी जिससे वो इस खास दिन को अपने परिवार के साथ हँसी खुशी माहौल में बिता सजें और अपने परिवार की जिम्मेदारियों को भी सही तरीके से निभा सकें.एसपी कुमार आशीष की तरफ से जारी एक आदेश के मुताबिक यह बताया गया है कि 24 घंटे ड्यूटी के बोझ के चलते पुलिसकर्मियों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है. उन्हें अच्छी नींद नहीं मिल पाती है साथ ही वो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को सही तरीके से नहीं निभा पाते. इस कारण उनकी कार्यक्षमता पर भी असर पड़ता है साथ ही स्वास्थ्य भी खराब होता जाता है। इसके मद्देनजर, संवेदनशील एसपी श्री आशीष ने अब ये आदेश जारी कर इन दो दिनों की छुट्टी को पुलिसकर्मियों के अधिकार स्वरूप घोषित कर दिया है। विधि व्यवस्था एवं विशेष परिस्थितियों को छोड़कर सभी पुलिसकर्मियों को अब अपने सर्विस बुक में अंकित तिथि के अनुसार 2 दिन की छुट्टी अनिवार्यतः दी जाएगी। एसपी श्री आशीष ने बताया कि जिला पुलिसकर्मियों को प्रोत्साहित करने और ड्यूटी के प्रति सजगता लाने के लिए ये कदम उठाया गया है, इसके अच्छे परिणाम आने की आशा जताते हुए उन्होंने कहा कि पुलिसकर्मी भी इंसान होते हैं और सरकारी ड्यूटी के साथ साथ परिवार के साथ बिताने के लिए समय भी दिया जाना चाहिए। इससे वे उत्साहित होकर पूरी तन्मयता से ड्यूटी कर सकेंगे। उधर इस स्वतंत्रता दिवस पर मिले एक्स्ट्रा बोनान्जा पर जिले भर के पुलिसकर्मियों में खुशी का माहौल है। अपने संवेदी पुलिस अधीक्षक को आभार जताते हुए सभी ने उन्हें हार्दिक धन्यवाद और शुभकामनाएं दी हैं।

परिस्थिति ने बनाया मजबूत और काबिल : सचिदानंद राय

विपरीत परिस्थितियों ने उन्हें ना सिर्फ और मजबूत बनाया बल्कि उनमे यह काबिलियत भी पैदा कर दी कि वे जनता के बीच जाकर उनके दु:ख सुख के साथी बन रहे है

'तुम बेसहारा हो तो किसी का सहारा बनो'

'तुमको अपने आप सहारा मिल जाएगा'

राजनीतिक का जाना-माना चेहरा,एक कुशल नीतिकार,सरल स्वभाव एवं सादगीपुर्ण जीवन मे विश्वास रखने वाले बिहार के छपरा से भाजपा के एमएलसी सचिदानंद राय जी के साथ "**चर्चित बिहार पत्रिका**" के **पत्रकार बिधुरंजन उपाध्याय** के साथ खास बातचीतः

राजनीतिक जीवन की शुरूआत कब हुई?

कठिन भरा प्रश्न है राजनीतिक जीवन की शुरूआत तो जन्म के साथ ही तय किया.यह कहिये कि राजनीति में रुचि मेरी कब से बढ़ी है.1985 मैं 22 साल की उम्र में खड़गपुर से आईआईटी पास किया. हावड़ा में मेरा कार्य क्षेत्र हुआ करता था.तब मेरे पिताजी वहीं रहते थे.राजनीति में मेरी रुचि बंगाल से से हुई तब उस समय वामपंथियों का बंगाल में राज और जो बिहार प्रदेश के जो हिंदी भाषी रहने वाले लोग थे,वह लोग वामपंथियों के खिलाफ राजनीति करते थे उनके साथ ही राजनीति में रुचि मेरी बढ़ी.उसी समय तीन चार साल सक्रिय रूप से राजनीतिक किया.लेकिन तभी मुझे महसूस हुआ कि राजनीति के लिए अभी मैं तैयार नहीं हूँ क्योंकि गृहस्थ राजनीति तभी कर सकता है जब उसे गृहस्थी चलाने के (लिए जिसे कहते हैं महाप्रसाद) जब महाप्रसाद की व्यवस्था हो जाये तो बच्चों की पढ़ाई लिखाई और उसके जीवन -यापन व्यवस्था के लिए कोई बैकिंग हो तभी राजनीति में सक्रिय होना संभव हो पाता है.अगर सही में आप राजनीति ईमानदारी से करने की बात करते हैं.करीब चार वर्षों तक मैं एक्टिव रहा.1989 में चुनाव के बाद राजनीति से खुद को अलग कर लिया. दोबारा थोड़े समय के लिए 1998 में एक बार फिर रूचि हुई.2010 से सक्रिय राजनीति में आ गया और 2015 मैं एमएलसी बना.अब तो फुल टाइमर हूँ.क्योंकि जो मेरा व्यवसाय था.बड़ा ही स्मूथली था.मेरे बेटों ने उसे टेक ओवर कर लिया है.बच्चे विजनेस संभाल रहे हैं ओर मैं अपना सारा समय राजनीतिक क्षेत्र के विकास के लिए और समस्याओं के निवारण के लिए देता हूँ.

अपने शुरूआती जीवन के बारे में बताएं ?

बिहार के छपरा जिला के बलियापुर प्रखंड के रोहुवा गांव का निवासी हूँ जन्म तो जरूर (हावड़ा) कलकत्ता में हुआ था,क्योंकि मेरी माँ बीमार रहती थी तो वहीं रहती थी,लेकिन जन्म के बाद गाँव पर ही रहा और प्राथमिक शिक्षा-दीक्षा कक्षा चार तक गांव में ही महुआ के पेड के नीचे हुई.इसके बाद प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा की कुछ कमी रह गयी थी.बाद में मुझे हावड़ा जाना पड़ गया.वहां सरकारी विद्यालय से मैंने प्लस टू तक की पढ़ाई की बराहवीं तक की शिक्षा ली.उसके बाद ईश्वर की कृपा रही आईआईटी जाने का मौका मिला तो मैं अपने विद्यालय से अकेला आई आई टी पहली बार गया.वहां से आईआईटी इंजीनियरिंग में डिग्री लेकर 1985 मैं बाहर आया और सीधे व्यवसाय से जुड़ गया और अपना काम शुरू किया.

आपके पिताजी किसान थे या व्यवसाय करते थे?

हमारे पिताजी किसान थे.लेकिन किसानी से परिवार तो चल नहीं पाता था क्योंकि छह भाइयों का बड़ा परिवार था तो जीवन यापन करने के लिए हावड़ा में जाकर छोटा मोटा व्यवसाय करते थे.लेकिन कोई बड़े व्यवसायी नहीं थे.जीवन यापन करने के लिए बच्चे को पालने के लिए पर्याप्त थे.

राजनीति में आने का कोई खास मकसद ?

राजनीति में आने का बचपन से शौक था.आने की इच्छा होती थी लेकिन फिर गृहस्थ जीवन ने खींच लिया.लेकिन जब 2010-11 में तय किया कि राजनीति में जाऊंगा तो मेरा एक अपनी थ्योरी है की वैदिक काल में जो चार आश्रम होते थे उसमें एक

आश्रम होता था वानप्रस्थ! जब गृहस्थ अपना गृहस्थी की जिम्मेवारी पूरी कर लें और उसके बाद की पीढ़ी आकर उसकी जिम्मेवारी को संभाल ले और उसके बाद की पीढ़ी भी जब गृहस्थ हो जाये तो वन की तरफ प्रस्थान करने की परंपरा थी.वन में जाकर समाज के लिए काम करना,अध्ययन,लिखना पढ़ना ये सब काम करने की परंपरा थी. जिसे वानप्रस्थ कहते थे.शहर बन गए तो हमलोग शहर में चलें गये जीवन यापन करने के लिए तो मैंने वानप्रस्थ का रास्ता चुना.गाँव के लोग शहर से बिछडते जायेंगे इसलिए हमने गाँव जाकर वहाँ एक विद्यालय खोला.मैं महुआ के पेड के नीचे पढ़ा था तो मुझे छत वाला विद्यालय खोलना था तो आज 54 कमरों का मेरा विद्यालय है.जिसमें लड़कियां निशुल्क विद्या प्राप्त करती हैं.ये विद्यालय गांव के बीचों बीच में खोला हूं.यह विद्यालय मेरे पैतृक गाँव जहाँ मेरा बचपन बीता है,वहां पर खुला है.प्रधानमंत्री कौशल केंद्र है जहाँ तक मुझे ज्ञात है पूरे देश का सबसे बड़ा कौशल केंद्र जो प्रधानमंत्री योजना द्वारा उसे हमने अपने गांव में खोला है.खास करके लड़कियों पर विशेष ध्यान होती है कि उनकी पढाई पूरी हो कुशल बन कर यहां से निकले नर्सरी से लेकर कक्षा बारहवीं तक की व्यवस्थाएं हैं.

प्रदेश अध्यक्ष के प्रबल दावेदार के रूप में आपकी भागीदारी सामने आ रही है?

अब देखिये मैं तो पार्टी का एक सिपाही हूँ और एमएलसी तो हूँ ही. काम करता हूँ फुल टाइमर हूँ.ईश्वर की कृपा से लक्ष्मी,सरस्वती,और दुर्गा तीनों माताओं का आशीर्वाद मुझे रहा है.शरीर से स्वस्थ हूँ व्यवसाय में काफी सफलतम व्यवसाइयों भी हूं.व्यवसाय बच्चों ने संभाल लिया है तो पूरी तरह से फ्री भी हो गया हूँ.आईआईटी से पढ़ा था तो सरस्वती माता की कृपा रही है.सक्षम तो हूँ लेकिन अब दावेदारी वाली बात तो मैं नहीं जानता.क्योंकि मैंने कोई दावेदारी पेश नहीं की है लेकिन हमारी नेतृत्व जो है बहुत अनुभवी नेतृत्व है. नेतृत्व को लगता होगा कि इस कार्य के लिए मैं योग्य हूँ तो निश्चित रूप से विचार कर रहे होंगे लेकिन मेरी तरफ से ऐसी कोई दावेदारी नहीं है.अगर मौका दिया जाएगा तो मैं मना नहीं करूँगा.

बिहार में आपकी गठबंधन की सरकार है वहीं दूसरी ओर विपक्ष जनता से काफी दूर हो चुकी है?

देखिए लोकतंत्र में सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों का ही महत्व होता है तो यह बहुत दुखद है बिहार के लिए ही नहीं देश के लिए भी एक तरह से इतनी संसद पर है कि प्रतिपक्ष अपनी भूमिका को निभा नहीं रहा है.बिहार में प्रतिपक्ष के नेता ही गायब हो चुके है.जातिवाद फैलाने का काम शुरू कर दिया है.यह ठीक नहीं है.लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं है.हालांकि हमारी सरकार अच्छा काम कर रही है हर फ्रंट पर अच्छा रिजल्ट आ रहा है जो कमियां दिख रही है उसे ठीक करने का प्रयास हो रहा है.कुशल नेतृत्व के हाथ में बिहार अच्छा ही करेगा लेकिन प्रतिपक्ष भूमिका सकारात्मक रहती तो अच्छा रहता.

छपरा में अपराधियों ने दो पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी थी. बिहार में अपराधी पुलिस पर भारी तो नही

मैं समझ रहा हू आप क्या कहना चाह रहे हैं पुलिस बल का आधुनिकीकरण तो बहुत आवश्यक हो गया है.आज के जमाने में जिस तरह का हथियार और जिस तरह का संसाधन लेकर हमारे पुलिस काम करते हैं,उसमे बदलाव की आवश्यकता है.पुलिस वाहनों की कमी है धीरे-धीरे दूर किया जा रहा है.समय थोड़ा लगेगा लेकिन सुधार हो रहा है.बिहार शुरू से शांत प्रदेश तो रहा नहीं.आपने सुना होगा की बिहार में बड़े- बड़े बाहुबलीयो के किस्से होते थे.आज भी हैं क्राइम तो खत्म नहीं किया जा सकता है.कंट्रोल किया जा सकता है.कंट्रोल करने के लिए संसाधन होना चाहिए.उस तरह के सामान होने चाहिए हमारे सिपाहियों के पास भी है.छपरा में जो घटना हुआ बड़ा ही दुखद था.यह अपराधियों की कायराना हरकत थी.किसी भी सूरत में बिहार में अपराधी बक्शे नही जाएंगे.बडे ही कुशल ऑफिसर थे मिथलेश बाबू.लगता है छोटा भाई गुजर गया हो.

चर्चित बिहार राष्ट्रीय पत्रिका के माध्यम से आम जनता को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

हम एक भारत देश के नागरिक होने के नाते हम केवल अगर यह अपेक्षा रखें कि सरकार,राजनीति,पाटीर्या,नेता या अधिकारी,कर्मचारी यह सब कौन हैं.यह सब हम सभी लोग तो हैं.हम लोग जाकर सरकार बनते हैं। हमलोग नेता बनते हैं।हमलोग अधिकारी बनते हैं।कर्मचारी बनते हैं और हम है हर जगह जो इसी देश के नागरिक हैं.मैं व्यक्तिगत रूप से अपने समाज के लिए,राज्य के लिए,देश के लिए क्या कर सकता हूँ.देश मेरे लिए क्या करेगा ये उसके बाद आता है.हम हमेशा केवल यही देखते हैं कि लोग मेरे लिए क्या कर रहे हैं.कर्त्तव्य किसी भी व्यक्ति के लिये नैतिक या वैधानिक जिम्मेदारी हैं जिनका पालन सभी को अपने देश के लिये करना चाहिये.ये एक कार्य या कार्यवाई हैं जिसका पालन देश के प्रत्येक और सभी नागरिकों को अपनी नौकरी या पेशे की तरह करना चाहिये.अपने राष्ट्र के लिये अपने कर्तव्यों का पालन करना एक नागरिक का अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान को प्रदर्शित करता हैं.हर किसी को सभी नियमों और नियमन का पालन करने के साथ ही विनम्र और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों के लिए वफादार होना चाहिए.एक व्यक्ति के लिये राष्ट्र के प्रति बहुत से कर्त्तव्य होते हैं.आर्थिक विकास एवं वृद्धि,साफ-सफाई,सुशासन,गुणवत्ता की शिक्षा,गरीबी मिटाना,सभी सामाजिक मुद्दों को खत्म करना,लिंग समानता लाना,सभी के लिये आदर-भाव रखना, वोट डालने जाना,स्वस्थ्य युवा देने के लिये बाल श्रम को खत्म करना और भी बहुत से कर्तव्य है।

लाल किला से कम नहीं है दरभंगा महाराज का किला

अनूप नारायण सिंह

दरभंगा बस स्टैंड के समीप स्थित दरभंगा राज का किला , सामने वाली सड़क से गुजरने वालों का ध्यान बरबस ही खीच लेता हैं । दरभंगा के महाराज का यह किला उत्तर बिहार के दुर्लभ और आकर्षक इमारतों में से एक है । भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने 1977-78 में इस किले का सर्वेक्षण भी कराया था, तब इसकी ऐतिहासिक महत्वता को स्वीकार करते हुए किले की तुलना दिल्ली के लाल किले से की थी । ये जो राज का किला है, दिल्ली के लाल किले से कम नहीं है। फर्क बस यह है कि लाल किले का रख-रखाब किया जाता है और राज किले का नहीं। किले के अन्दर रामबाग पैलेस स्थित होने के कारण इसे - राम बाग का किला भी कहा जाता है । वैसे दुखद बात यह है की दरभंगा महाराज की यह स्मृति है अब रख - रखाव के अभाव में एक खंडहर में तब्दील हो रहा है । शहर की पहचान के रूप में जाने वाले इस किले की वास्तुकारी पर फतेहपुर सीकरी के बुलंद दरवाजे की झलक मिलती है । किले के निर्माण से काफी पूर्व यह इलाका इस्लामपुर नामक गाँव का एक हिस्सा था जो की मुर्शिमाबाद राज्य के नबाब , अलिबर्दी खान , के नियंत्रण में था । नबाब अलिबर्दी खान ने दरभंगा के आखिरी महाराजा श्री कामेश्वर सिंह के पूर्वजों यह गाँव दे दिया था। इसके उपरांत सन 1930 ई० में जब महाराजा कामेश्वर सिंह ने भारत के अन्य किलों की भांति यहाँ भी एक किला बनाने का निश्चय किया तो यहाँ की मुस्लिम बहुल जनसँख्या को जमीन के मुआवजे के साथ शिवधारा, अलीनगर, लहेरियासराय- चकदोहरा आदि जगहों पर बसाया। रामबाग कैम्पस चारों ओर से दीवार से घिरा हुआ है और लगभग 85 एकड़ जमीन में फैला हुआ है । किले की दीवारों का निर्माण लाल ईंटों से हुई है। इसकी दीवार एक किलोमीटर लम्बी और करीब ५०० मीटर चौड़ी है । किले के मुख्य द्वार जिसे सिंहद्वार कहा जाता है पर वास्तुकला से दुर्लभ दृश्य उकेड़े गयें है । किले के भीतर दीवार के चारों ओर खाई का भी निर्माण किया गया था। उसवक्त खाई में बराबर पानी भरा रहता था ।ऐसा किले और वस्तुतः राज परिवार की सुरक्षा के लिए किया गया था । किले की दीवार काफी मोटी थी । दीवार के उपरी भाग में वाच टावर और गार्ड हाउस बनाए गए थे ।महाराजा महेश ठाकुर के द्वारा स्थापित एक दुर्लभ कंकाली मंदिर भी इसी किले के अंदर स्थित है । जैसा की हमने बताया था की महाराजा महेश ठाकुर को देवी कंकाली की मूर्ति यमुना में स्नान करते समय मिली थी । प्रतिमा को उन्होंने लाकर रामबाग के किले में स्थापित किया था । यह मंदिर राज परिवार की कुल देवी के मन्दिर से भिन्न है और आज भी लगातार श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है । दरभंगा राज वस्तुतः एक बेहद समृद्ध जमीदारी व्यवस्था थी , किन्तु , औपचारिक रूप से राजाओं का दर्जा नहीं होने की बात महाराजा कामेश्वर सिंह को यह बात अक्सर खटकती रहती थी। इतिहास के बदलते घटनाक्रम में जब देश की तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने यह तय किया की वह दरभंगा महाराज श्री कामेश्वर सिंह को ह्य नेटिव प्रिंस की उपाधि देगी तो इसका अर्थ यह निकाला गया की उस स्थिति में दरभंगा राज एक ह्य प्रिंसली स्टेट अर्थात एक स्वतंत्र राजशाही बन जाएगी ।इस ऐतिहासिक क्षण की याद में दरभंगा राज किले का निर्माण 1934 ई० में आरम्भ किया गया । किले के निर्माण के लिए कलकत्ता की एक कम्पनी को ठेका दिया गया । किन्तु जब तीन तरफ से किले का निर्माण पूर्ण हो चूका था और इसके पश्चिम हिस्से की दीवार का निर्माण चल रहा था कि भारत देश को अंग्रेजी हुकूमत से आजादी मिल गयी । भारत में तब सत्ता में आयी नयी सरकार ने ह्यप्रिंसली स्टेट और जमींदारी प्रथा बंद कर दी । फलस्वरूप, अर्धनिर्मित दीवार जहाँ तक बनी थी , वहीँ तक रह गयी और किले का निर्माण बंद कर दिया गया । महाराजा कामेश्वर सिंह की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों ने रामबाग परिसर की कीमती जमीन को बेचना शुरू कर दिया ।देखते ही देखते जमीन खरीदने वालों ने भी अपने -अपने मकान बना कर कालोनियों का निर्माण कर लिया और आलीशान होटल एवं सिनेमा घर की भी स्थापना हो गयी। किन्तु इस सबके बावजूद दरभंगा का राज किला आज भी दरभंगा अपितु सम्पूर्ण मिथिलांचल के लिए एक आकर्षण का केंद्र बना हुआ है । जिला प्रशासन एवं पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को इस एतिहासिक विरासत की सुरक्षा और सरंक्षण का जिम्मा उठाना चाहिए।

भारतीय वायुसेना को मिले 8 अपाचे हेलीकॉप्टर

अपाचे इस्तेमाल करने वाला 14 वां देश बना भारत

गोलीबारी,रॉकेट और गोला- बारूद छोड़ने की क्षमता

बिधुरंजन उपाध्याय

दिल्ली-भारतीय वायुसेना ने 3 सितंबर 2019 मंगलवार को अपने जंगी बेड़े में अमेरिका निर्मित आठ अपाचे एएच-64 ई हेलीकॉप्टर औपचारिक तौर पर शामिल कर लिया है.वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल (एसीएम) बीएस धनोआ ने विश्व के सबसे उन्नत बहुस्तरीय लड़ाकू हेलीकॉप्टर में गिने-जाने वाले अपाचे एएच-64 ई को पठानकोट वायुसेना स्टेशन पर वायुसेना के बेड़े में शामिल किया है.

वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल (एसीएम) बीएस धनोआ ने समारोह में कहा कि अपाचे लड़ाकू हेलीकॉप्टर को एमआई-35 फ्लीट की जगह इस्तेमाल के लिए खरीदा गया है.इस हेलीकॉप्टर में गोलीबारी करने,रॉकेट छोड़ने एवं गोला-बारूद छोड़ने की क्षमता है.यह हेलीकॉप्टर हवाई युध्द के दौरान कई काम एक साथ कर सकता है.यह अत्याधुनिक तकनीको से लैस है.धनोआ ने कहा की इन विमानों को विशेष रूप से भारतीय वायुसेना सटीक मानको के अनुरूप निर्मित किया गया है.मुझे इस बात की खुशी है कि इन आठ हेलीकॉप्टर को निर्धारित समय पर वायुसेना के बेड़े में शामिल कर लिया गया है.वायुसेना ने 22 आपचे हेलीकॉप्टर आपूर्ति के लिए वर्ष 2015 में अमेरिका सरकार और बोइंग लिमिटेड के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किया था.बोइंग लिमिटेड ने 27 जुलाई 2019 को को 4 आपचे हेलीकॉप्टर वायुसेना को सौप दिया था।

अपाचे इस्तेमाल करने वाला 14 वां देश बना भारत

आपचे अपने मोर्डन इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम की वजह से दुनियां का सबसे उन्नत युध्दक हेलीकॉप्टर माना जाता है.अमेरिका ने वर्ष 1991 में खाड़ी युध्द के दौरान ईराक के खिलाफ और फिर अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ युद्ध में इसका इस्तेमाल किया था.भारत आपचे इस्तेमाल करने वाला दुनिया का 14वां देश होगा.

हवाई ताकत में पाकिस्तान पर भारत पड़ा भारी

भारत एयरक्राफ्ट :- 2,185
पाकिस्तान एयरक्राफ्ट :- 1,281

भारत

फाइटर/ इन्टरसेप्टर्स :- 590
अटैक जेट्स :- 804
ट्रांसपोर्ट :- 708
हेलीकॉप्टर :- 720

पाकिस्तान

फाइटर/ इन्टरसेप्टर्स :- 320
अटैक जेट्स :- 410
ट्रांसपोर्ट :- 296
हेलीकॉप्टर :- 328

आपचे हेलीकॉप्टर की ताकत

280 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार भरने वाला इस हेलीकॉप्टर को अपनी डिजाइन की वजह से रडार आसानी से पकड़ नही पाता है।

करीब पौने तीन घण्टे तक उड़ान भरने वाले इस अटैक हेलीकॉप्टर से दुश्मन के आतंकी ट्रेनिंग कैम्प से टेंक तक आसानी से तबाह किये जाते है.

इस हेलीकॉप्टर में हेलिफायर और स्टिंगर मिसाइलें लगी हुई है.इसमे एक सेंसर भी लगा हुआ है.जिसकी वजह से यह हेलीकॉप्टर रात में भी ऑपरेशन को अंजाम दे सकता है. इस हेलीकॉप्टर में 30 एमएल की दो गन भी लगी हुई है.जो दुश्मन के सीने को आसानी से छलनी कर सकता है. आपचे हेलीकॉप्टर भारतीय सेना के लिए युध्द टैंक का महारथी साबित होगा.खासकर पाकिस्तान के साथ अगर युद्ध हुआ तो टैंक से हमलो के मामले में यह भारत को बड़ी बढत दिलाएगा.मिसाइल लगे होने की वजह से इन हेलीकॉप्टर के पास 256 मूविंग टारगेट को ढूंढकर उनपर कहर बरपाने की शक्ति है!

लोकप्रियता की अपनी पहचान है विधायक मिथिलेश तिवारी

बिहार में अधिकतर राजनेताओं की पहचान उनकी पार्टी और जातियां से होती है, लेकिन बदलते परिवेश के बीच कुछ ऐसे शख्स है जो इन सब से परे है.गोपालगंज के बैकुंठपुर विधानसभा से पहली बार बने भाजपा विधायक मिथिलेश तिवारी एक ऐसे ही शख्स है जिनकी लोकप्रियता की अपनी पहचान है. साधारण किसान परिवार में जन्मे मिथलेश तिवारी को पढ़ाई के समय ही राजनीति का चश्का लग चुका था.इसी वजह से लम्बे समय तक राजनीतिक में अपने जीवन समर्पित करने वाले भाजपा विधायक मिथलेश तिवारी अपने विधानसभा क्षेत्र के जनता के लिए खास चहेते विधायक माने जाते है.चाहे जनता की समस्याओं को सुनकर उनका निदान निकालना हो या चाहे विकास जैसे कार्य हो.बड़ी-बड़ी योजनाओं को धरातल पर उतारा है.सबसे बड़ी बात है की जब केंद्र और राज्य पर अपनी सरकार हो तो जनसमस्या और विकास कार्य की योजनाओं को धरातल पर उतारना और मददगार साबित हो जाता है. गोपालगंज जिला के बैकुंठपुर विधानसभा के भाजपा विधायक मिथलेश तिवारी से "चर्चित बिहार पत्रिका" के **संवाददाता बिधुरंजन उपाध्याय** से दिल्ली में हुई खास बातचीत का प्रमुख अंश

1:- आपकी राजनीति जीवन की शुरूआत कब से हुई थी ?

हमारी राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1990 से हुई.1990 में विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान पहली बार छात्र आंदोलन का राजनीति किया करता था.विश्वविद्यालय के कई ज्वलन समस्याओं को लेकर आंदोलन किया करता था.उस वक़्त पटना के एक नेता स्व नवीन किशोर सिन्हा जी की नजर हमारे ऊपर पड़ी.उन्होंने मुझे भाजपा की सदस्यता दिलवा कर मुझे भाजपा पार्टी में लेते आये.उसके पहले में किसी भी पार्टी का राजनीतिक सदस्य नही था.आखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यक्रमो में जाया करता था और एबीवीपी के हर कार्यक्रमों में अपने आप को जोड़कर रखता था.एक विद्यार्थी होने के नाते मुझे लगता था की एबीवीपी ही एक ऐसा संगठन है जो देश के विद्यार्थियों एवं राष्ट्र के लिए काम करता है.वर्ष 1990 से अब तक लगातार भाजपा पार्टी के लिए एक सिपाही के रूप में कार्य कर रहा हूं.

2:- आप अपनी जीत का श्रेय किसे देना चाहेंगे

हम अपनी जीत का श्रेय अपनी बैकुंठपुर की जनता को देना चाहेंगे.हमारी जनता ही हमारे लिए सब कुछ है.जाति,धर्म,पार्टी से उठकर उन्होंने मुझ जैसे नेता पर विश्वास किया है.हम उनकी समस्या को लेकर दिन-रात उनसे जुड़े रहते है.नेता भले किसी भी पार्टी के हो परन्तु चुनाव में वोट तो आम जनता ही देती है.बैकुंठपुर में भाजपा पार्टी से पहली बार मुझे यहाँ की जनता ने 15000 हजार वोट से जिताकर विधानसभा भेजा है.भाजपा की पहली जीत बैकुंठपुर से हुई है.भाजपा पार्टी के केंद्रीय नेता और कार्यकताओं का हमारे ऊपर विश्वास था जो हमारी जीत का एक श्रेय रहा.

3:- राजनीतिक जीवन में कितनी चुनोतियाँ का सामना करना पड़ा

राजनीतिक में प्रतिदिन चुनोतियाँ भरी रहती है.में चुनोतियाँ से कभी घबराता नही हुँ.हर चुनौती को डटकर कडा से कडा मुकाबला करता हूं.अगर आपका हौसला बुलंद और दृष्टि स्पस्ट हो तो आप हर चुनौती से आप लड़ सकते है.

4:- राजद के शाशनकाल और एनडीए गठबंधन के शाशनकाल में बिहार में कितना फर्क पड़ा है ?

यह सवाल हमारे लिए थोड़ा कठिन है.क्योंकि में भाजपा का विधायक हूँ.इस बारे में अगर कुछ बोलूंगा तो आपको लगेगा की हम अपनी सरकार की तारीफ कर रहे है.आप भी पत्रकार है और लगभग 10 वर्ष से पत्रकारिता कर रहे है.आपने पूर्व के राजद के शाशनकाल को भी देखा होगा और अभी के एनडीए के शाशनकाल को भी देख रहे है.दोनों के शाशनकाल का फर्क आप भी खुद महसूस करते होंगे.लेकिन एक

बात तो बिल्कुल स्पष्ट है की (एनडीए गठबंधन) नितीश कुमार के शाशनकाल में बिहार पूरी तरह से बदल गया है.2005 में जो बिहार नीतीश कुमार को मिला था वो एनडीए के रूप में मिला था."अँधेरा हटा है,फिर से एक नया बिहार खिला है".पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेयी जी की मुझे याद आ रही है.जो उन्होंने जयप्रकाश नारायण जी के चरणों में समर्पित किया था."जयप्रकाश जी रखो भरोसा,टूटे सपनो को जोड़ेंगे,चिता भस्म की चिंगारी से अंधकार की गढ़ तोड़ेंगे".मुझे लगता है की बिहार में अंधकार का गढ़ खत्म हो गया है.बिहार में लालू-राबड़ी के राजद शाशनकाल के बाद नीतीश कुमार के शाशनकाल की कल्पना आप खुद कर सकते है.बिहार अब विकसित बिहार की श्रेणी में आ चुका है.बिहार बदल गया है.बिहार काफी बढ़ चुका है.नीतीश कुमार जी के कुशल नेतृत्व और एनडीए के लाखों कार्यकताओं की मेहनत से बिहार बदल गया है.

5:-भविष्य की क्या-क्या योजनाएं है?

देखिए ! किसी भी नेता को अपनी भविष्य की योजनाएं नही बनानी चाहिए.राजनेता को जनता के भविष्य,अपने क्षेत्र के विकास,अपने राज्य एवं देश की भविष्य की योजनाएं बनानी चाहिए.हमारा भविष्य क्या हो सकता है हम तो जनता के सेवक है.हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी कहते है कि हम सभी राजनेता जनता के सेवक है.लेकिन एक बात जरूर है कि हम जरूर बड़े-बड़े सपने देखता हूँ की अपने बैकुंठपुर विधानसभा को अंतरराष्ट्रीय पटल पर लेकर जाऊ,और मैंने यह काम किया भी है और कर भी रहा हूँ.एक विधायक होने के नाते अपने क्षेत्र के विकास के लिए बढ़-चढ़ कर भूमिका निभाता हूँ.राज्य सरकार की योजनाएं तो है ही इसके अलावा केंद्र सरकार के योजना से अपने वैकुंठपुर विधानसभा क्षेत्र में बहुत विकास कार्य किया हूं.जब में विधायक नही बना था तब भी मैंने ग्लोबल सेनिटेशन फंड के माध्यम से अपने क्षेत्र में सैकड़ों शौचालय का निर्माण करवाया था.आज जब विधायक हूँ तो भारत सरकार के एनएचआई डिपार्टमेंट से 400 से 500 करोड़ रुपए की कई योजना अपने क्षेत्र में लेकर गया हूं.पोत परिवहन मंत्रालय से टर्मिनल बनवाया.नमामि गंगे योजना से अपने क्षेत्र में रिवर फ्रंट बनवाया है और यह शायद देश का पहला रिवर फ्रंट होगा जो हमारे ग्राम पंचायत में बन रहा है.इस प्रकार से कई बड़ी योजनाएं है जो हमने धरातल पर उतारा है.जैसे देश की जनता कहती है मोदी है तो मुमकिन है,वैसे ही हमारी वैकुंठपुर की जनता कहती है कि विधायक मिथलेश तिवारी है तो क्षेत्र की विकास मुमकिन है!

6:-राजनीतिक जीवन में कैसे कदम रखा ?

हमारी पढ़ाई गांव के सरकारी स्कूल से हुई थी.हम 5 किलोमीटर गांव से दूर उबड़-खाबड़ रास्तो से गुजरते हुए विद्यालय जाया करते थे.हमारे पिताजी पीडब्ल्यूडी विभाग में चतुर्थी कर्मचारी हुआ करते थे.हाईस्कूल की शिक्षा ग्रहण करने के बाद पिताजी ने हमारी आगे की पढ़ाई के लिए पटना लेते आये.जिसके बाद आगे की शिक्षा पूर्ण करते समय ही कॉलेज जीवन से राजनीति में कदम रखा.जिसके बाद भाजपा पार्टी में सदस्यता ग्रहण करने के बाद आज तक लगातार राजनीति में कदम रखा.

7:- बिहार के विकास को आप किस नजरिये से देखते है ?

बिहार में एनडीए गठबंधन में चौमुखी विकास हुआ है.एक समय था की बिहार में चलने लायक सड़क नही था.आज बिहार की सड़कों को देख लीजिए.बिहार लालटेन युग के रूप में जाना जाता था.आज बिहार का कोई ऐसा गांव अछुता नही है जहाँ बिजली नही है.पूरे बिहार आज बिजली,सड़क,पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं से पूर्ण है.बिहार में कानून का राज स्थापित है.लालू-राबड़ी के शाशनकाल में पुलिस आगे भागती थी और अपराधी पीछे दौड़ता था.मगर आज परिस्थितिया बदली है.एनडीए गठबंधन में आज बड़े से बड़े बाहुबली हो या अपराधी सभी पुलिस के डर से भागी-भागी फिर रही है यू कहे तो सलाखों के पीछे पहुँच रहे है.बिहार में पूर्णरूपेण शुशाशन की सरकार है.कानून को हाथ में लेने वाले को आज बख्शा नही जा रहा है.बिहार देश के अन्य राज्यो से आगे बढ़ कर अपना खोई हुई पहचान लौटा रही है.एक समय ऐसा था की बिहार के नागरिकों को अन्य राज्यों में "बिहारी" कहकर चिढाते थे,मगर आज परिस्थिति बिल्कुल बदल गयी है आज बड़े-बड़े शहरों में बिहारियों को सम्मान दिया जाता है क्योंकि बिहार ही एक ऐसा राज्य है जहां सबसे अधिक आईएस और आईपीएस बनकर देश की सेवा कर रहे है.

8:- खबर आ रही है की मिथलेश तिवारी बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष की रेस में है,क्या यह सही है?

हम भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता है एवं भाजपा के विधायक सह प्रदेश उपाध्यक्ष भी है.इस बारे में मुझे कोई जानकारी नही है.किसी भी ने इस विषय पर ना कुछ कहा है और ना ही हमनें कुछ पूछा है.हमारे कार्यकताओं का प्रेम है,इसलिए लोग कहते रहते है.हमारी भाजपा पार्टी की अपनी विचारधारा है.हमारी पार्टी अपने कार्यकताओं को जो भी जिम्मेदारी देती है.उसमे हमलोग निश्वार्थ भाव से उसका पालन करते है.ऐसे में हम अभी भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष तो है ही.भाजपा एक राष्ट्रीय बड़ी पार्टी है.इस पार्टी में छोटा से छोटा पद भी सम्मान दिलवाता है.भाजपा पार्टी के कार्यकर्ताओ को किसी भी पद का लोभ नही होता है।

मां-बाप के सपनों को साकार करने के लिए आईपीएस बनने की ठानी

बिधुरंजन उपाध्याय

पटना/जमुई-यूपी के इलाहाबाद में 1 जनवरी 2018 को सीओ सिटी थर्ड के रूप में आईपीएस अफसर सुकीर्ति माधव मिश्रा की पहली पोस्टिंग हुई.सुकीर्ति ने लाखों का पैकेज छोड़कर मां-बाप के सपनों को साकार करने के लिए क्ढर बनने की ठानी.अपने फर्स्ट अटेंप्ट में ही देश के सबसे बड़े एग्जाम को पास आउट कर लिया था,लेकिन 2014 में मिली सफलता में उन्हें आईआरएस मिला था.जबकि उन्हें क्ढर बनना था,इसलिए 2015 में उन्होंने दोबारा एग्जाम दिया और सिलेक्ट हो गए.

पिता हैं टीचर और मां हैं हाउसवाइफ

बिहार राज्य के नक्सल प्रभावित जमुई जिला के मलयपुर गांव के रहने वाले सुकीर्ति माधव का निक नेम चंदन है.उनके पिता कृष्ण कांत मिश्रा जूनियर हाईस्कूल में टीचर थे.उनकी मां कविता मिश्रा हाउस वाइफ हैं.इनसे बड़ी उनकी एक बहन है रिचा मिश्रा.जिनकी शादी हो चुकी है,उनके बहनोई विकास मिश्रा नौसेना में हैं.सुकीर्ति माधव मिश्रा की प्रारंभिक पढ़ाई अपने गांव के प्राइमरी और जूनियर हाईस्कूल में हुई है.ग्रेजुएशन उन्होंने भुवनेश्वर यूनिवर्सिटी से किया है.2010 में उन्होंने एमएनआईटी दुगार्पुर से टइअ की डिग्री हासिल की.उसी साल उन्हें कोल इंडिया में मैनेजर पद की नौकरी मिल गई और वो नौकरी करने चले गए.

1 मार्च 1988 को जन्मे सुकीर्ति माधव के लिए सबसे कठिन पल वो था जब वो टइअ कर रहे थे और कैंपस सिलेक्शन में आईडीबीआई बैंक के लोगों ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया था.जिससे वह काफी फ्रेस्टेट हुए थे,लेकिन बाद में घरवालों ने और टीचर्स ने उन्हें समझाया.उसके बाद ही उन्हें कोल इंडिया में नौकरी मिल गई.सुकीर्ति माधव बताते हैं- ''वर्ष 2010 हमारे पूरे परिवार के लिए बहुत खुशियों वाला था,क्योंकि इस वर्ष में मुझे और मेरे पिताजी को एक साथ नौकरी मिली.मेरे पिताजी की जो भर्ती थी,उस पूरी भर्ती प्रक्रिया को ही 1987-88 में पूर्व उट लालू यादव की पहल पर निरस्त कर दिया गया था.इससे हजारों शिक्षक बेरोजगार हो गए थे,उनका मुद्दा कोर्ट में लंबित था.करीब 22 साल की लंबी लड़ाई के बाद 2010 में पिताजी को न्याय मिला और उन्हें दोबारा नियुक्ति मिली और पीछे का पूरा पेमेंट भी दिया गया.'इन 22 सालों में हमारे माता-पिता ने बहुत से अभाव देखे, लेकिन कभी हम भाई-बहन को उसका आभास नहीं होने दिया.खेती किसानी के बूते ही उन्होंने मुझे टइअ कराया.मैं कोल इंडिया के मैनेजर पर से संतुष्ट था.क्योंकि वहां कंपनी अच्छी थी और पैसे भी बढ़िया मिल रहे थे.मम्मी-पापा ने 1 दिन बुला कर कहा कि अगर चाहो तो सिविल सर्विसेस ट्राई कर सकते हो.आम आदमी से जुड़ने का मौका मिलेगा,उनकी सेवा करने का मौका मिलेगा.जो पैसे से कहीं ज्यादा अच्छा होगा.

शिक्षक दिवस पर आईपीएस सुकीर्ति माधव ने अपने टीचर अंसारी सर को याद कर हुए भावुक

बिधुरंजन उपाध्याय

जमुई-शिक्षक की एक छोटी सी सलाह ने मन मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव छोड़ा जिसने उस बच्चे की जिन्दगी ही बदल दी. विद्यालय के शिक्षक ने उससे कहा था कि डर कर भागना तुम्हें बुजदिल बना देगा. समस्याओं से भागते भागते जब थक जाओगे तब तुम्हें एहसास होगा कि हमें लड़ना चाहिए था.शिक्षक ने यह भी कहा था कि जिस चीज से डर लगे उससे लड़ना चाहिए,जूझना चाहिए.शिक्षक द्वारा दिया गया यह मंत्र उस बाल मन में घर कर गया और तब शुरू हुई उसकी पढ़ाई के साथ एक ऐसी लड़ाई जिसने उसे सफलता का सिकंदर बना दिया.आपको बता दें कि तब का वह छात्र आजे उत्तरप्रदेश में तेज तर्रार आइपीएस अफसरों में से एक है और मौजूदा वक्त में वही छात्र लखनऊ के सिटी एसपी के पद पर काबिज है.

साईकिल से स्कूल आते थे अंसारी सर

शिक्षक दिवस के अवसर पर बिहार के जमुई के मलयपुर निवासी एसपी सुकीर्ति माधव मिश्रा ने अपने गृह जिला जमुई में उनके शिक्षक रहे अंसारी सर को याद कर भावुक हो गए.अपने शिक्षक को याद करते हुए उन्होंने कहा कि प्राथमिक विद्यालय मलयपुर में अंसारी सर थे.साईकिल से विद्यालय आते जाते थे,और बहुत ही विनम्र थे.उन्हें याद करते हुए आईपीएस सुकीर्ति माधव ने कहा कि अंसारी सर मैथ्स की क्लास लेते थे और मैं मैथ्स से बचता रहता था. उन्होंने एक दिन मुझे अकेले में बुलाया और समझाया कि मैथ्स की क्लास में तुम्हारा मन क्यों नही लगता, मुझे बताओ. उन्होंने कहा था जिस चीज से डर लगे उससे लड़ना चाहिए, जूझना चाहिए. तुम मुझसे क्लास के बाद मिल कर भी पढ़ाई करना.

उनकी प्रेरणा से मैं परेशानियों से जूझना सीख गया

आईपीएस सुकीर्ति माधव ने बताया कि उनके सकारात्मक और अभिभावक स्वरूप समझाने का तरीका मुझे काफी अच्छा लगा. उस दिन से मैंने हर उस चीज, जिस से मुझे परेशानी हो उसको फेस करना शुरू कर दिया और उस से जूझना शुरू कर दिया. अंसारी सर के उस ज्ञान ने न सिर्फ पढ़ाई बल्कि मेरे जीवन मे भी काफी प्रेरणा प्रदान किया है. एसपी माधव ने शिक्षक दिवस पर कहा कि मैं अपने सारे शिक्षकों का अभिवादन करता हूं जिन्होंने मुझे इस मुकाम तक पहुंचाया और एक अच्छा इंसान बनने को प्रेरित किया.

2012 में शुरू की तैयारी- सुबह नौकरी और रात में करते थे पढ़ाई

'तब तक मेरी नौकरी के करीब 2 साल हो चुके थे.पिता जी के कहने के बाद मैंने सिविल सर्विसेस के बारे में जानना शुरू किया और फिर नौकरी करते-करते ही तैयारी शुरू कर दी.कोल इंडिया में जहां मेरी पोस्टिंग थी,वहां भी दो-चार लड़के सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहे थे उनका भी प्रभाव पड़ा.2012 से मैंने तैयारी शुरू कर दी,जो काफी कठिन थी लेकिन लक्ष्य तय था इसलिए दिक्कत नहीं हुई.'सुबह 9:00 बजे से शाम को 6:00 बजे तक ऑफिस का काम निपटाता था.पढ़ाई कभी घंटे में बांधकर तो नहीं की लेकिन 9-10 बजे से बजे से लेकर रात में 1:00 से 2:00 बजे तक जरूर पढ़ता था.2 साल की कड़ी तैयारी के बाद वर्ष 2014 में मैंने सिविल सर्विसेज का पहला एग्जाम दिया और पहले ही अटेंप्ट में मेरा सिलेक्शन हो गया.लेकिन मुझे आईआरएस मिला जिसे मैंने छोड़ दिया उसके बाद दूसरे अटेंड में वर्ष 2015-16 में मुझे आईपीएस कैडर मिल गया.

इंटरव्यू में आई क्यू लेवल पर पूछा गया था ये क्वेश्चन

इंटरव्यू के दौरान आई क्यू लेवल के क्वेश्चन पूछे जाने पर उनका कहना था कि एक सवाल मुझसे पूछा गया था कि एक पुलिस लीडर की क्या भूमिका होनी चाहिए? उसमें मेरा जवाब था कि पुलिस लीडर अपने मातहतों के मनोभावों को समझकर परिस्थितिजन्य स्थितियों के मुताबिक निर्णय लें उनकी अगुवाई करें खुद फील्ड में रहे ताकि उनकी हौसला अफजाई हो और वह भी काम करने के प्रति प्रेरित हो।

केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद बोले, 1 लाख डिजिटल गांव बनाने का लक्ष्य

केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने विद्यापति भवन में आयोजित कार्यक्रम में सातवीं आर्थिक गणना के दूसरे चरण का शुभारंभ किया। कहा कि पहली बार पेपरलेस आर्थिक गणना कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के जरिए की जा रही है। इससे असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों का पूरा डाटा तैयार हो सकेगा। इसका प्रयोग सरकार इन लोगों के हित में नीतियां बनाने में करेगी। उन्होंने कहा कि देश में एक लाख डिजिटल गांव बनाने का लक्ष्य है। सीएससी के जरिए सारी शहरी सेवाएं इन गांवों में उपलब्ध होंगी। बिहार में भी कई गांव डिजिटल विलेज बन चुके हैं।

कहा कि सीएससी एक ऐसी खिड़की है जिससे डिजिटल सेवा दी जा सके। इसके जनांदोलन बनने से ही डिजिटल इंडिया का सपना साकार होगा। श्री प्रसाद ने कहा कि देश में दो करोड़ लोग डिजिटली साक्षर हो

चुके हैं। कहा कि कॉमन सर्विस सेंटर आज देश के दो लाख 59 हजार से अधिक गांवों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। कहा कि आज देश में हर काम के लिए सीएससी की मदद ली जा रही है।

कहा कि बिहार में अभी 30 हजार सीएससी कार्यरत हैं, जो 17 हजार गांवों के लोगों को सारी सेवाएं डिजिटली उपलब्ध करा रहे हैं। पेंशन देने और मनरेगा की राशि का भुगतान देने के अलावा कानूनी सलाह भी सीएससी के जरिए दी जा रही है। कहा कि देश के ढाई लाख गांवों को ऑप्टीकल फाइबर से जोड़ा जा रहा है। कहा कि बिहार में आर्थिक गणना के लिए एक लाख 95 हजार युवाओं को चुना जा चुका है। इससे पूर्व सीएससी बिहार के प्रमुख संतोष तिवारी ने उनका स्वागत किया। इस दौरान विधायक अरुण कुमार सिन्हा, सांख्यिकी निदेशक राजेश्वर प्रसाद सिंह, डिप्टी डायरेक्टर एनएसओ एन. संगीता, बीएसएनएल के सीजीएम और बिहार के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल मौजूद रहे।

सलाखों के पीछे : बिहार में बंदी अधिकार आंदोलन पर एक दिवसीय विमर्श

पैरवी और बंदी अधिकार आंदोलन के संयुक्त तत्वाधान में अनुग्रह नारायण सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान पटना में सलाखों के पीछेःबिहार में बंदी अधिकार आंदोलन पर एक दिवसीय विमर्श हुआ जिसमेवक्ताओ ने एक स्वर से कहा कि भारतीय जेलो की असंवेदनशील और अमानवीय स्थितियों ने कानून के अर्थ को खतरे में डाल दिया है अपराध में फँसे लोगो के लिए सुधार की सारी संभावनाओं के दरवाजे बंद है और ये जानलेवा बीमारियों ,अपराध और करप्शन के दुष्चक्र में बेमौत मारे जाने को अभिशप्त है ,खासकर वे ,जो गरीब,बेसहारा और हर प्रकार से वंचित है।

वक्ताओं नेबताया कि देश मे आधुनिक जेल सुधारो की शुरूआत भारतीय कारागार समिति 1919-20 से मानी जाती है,जिसने सुधार और पुनर्वास को जेल प्रशासन का सच्चा उद्देश्य माना पर कैदियो से लगभग सभी जगह समान रूप से बर्बरता का ब्यवहार किया जाता है गाँधी जी और अहिंसा के देश मे जेले आचारविहीन और पाशविक है। बलात्कार,अप्राकृतिक मैथुन,यातना, गैर कानूनी ढंग से हिरासत में लेना, हथकड़ी लगाना और बेड़ी लगाना,काल कोठरी की सजा,बालको को ज्यादा उम्र दिखा के जेल में डालना,जैसी घटनाएं रोजाना जेलो में होती है । अगर भारत मे मानव अधिकारों के अभाव की ओर किसी का ध्यान नही

गया तो इसका कारण यह है कि राज्य ने कानून और लाठी के बल पर उसपर पर्दा डाल दिया है प्रेस जनता कार्यक्रम को पूर्व केंद्रीय मंत्री संजय पासवान सेवानिवृत्त आईजी उमेश सिंह रामनाथ ठाकुर अधिवक्ता मंजू शर्मा बलिराम मिश्र आदि ने भी संबोधित किया जबकि संचालन संतोष उपाध्याय ने की।

हेल्थ केयर के क्षेत्र में देश के सबसे प्रतिष्ठित ग्लोबल चॉइस अवॉर्ड 2019 से किया गया सम्मानित

बिहार के जाने माने फिजियोथेरेपिस्ट, सिवान की धरती के लाल और साईं हेल्थ केअर के निदेशक डॉ राजीव कुमार सिंह को हेल्थ केयर के क्षेत्र में देश के सबसे प्रतिष्ठित ग्लोबल चॉइस अवार्ड 2019 से सम्मानित किया गया। देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित ग्लोबल चॉइस अवार्ड 2019 में उन्हें यह सम्मान बॉलीवुड स्टार जैकी श्रॉफ के हाथों से दिया गया।

अपून नारायण सिंह

इसके लिए डॉ राजीव कुमार सिंह ने जैकी श्रॉफ के साथ झ साथ ग्लोबल चॉइस अवार्ड 2019 का भी आभार व्यक्त किया और अपनी खुशी जाहिर की। बता दें कि डॉक्टर राजीव ने फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में हमेशा अपने प्रदेश और देश का नाम रौशन करते रहे हैं। इसलिए उन्हें अब तक देश - विदेश में कई बड़े अवार्डों से सम्मानित किया जा चुका है। इतना ही नहीं, इनके चिकित्सा विधि के कायल बॉलीवुड स्टार्स में गोविंदा, अरबाज खान, शैफ अली खान, प्राण, प्रियंका चोपड़ा, रणवीर कपूर, तुषार कपूर, आदित्य पंचोली सहित कई नाम है, जिन्होंने इनकी सेवाएं ली हैं। साथ ही भारतीय क्रिकेट टीम के साथ भी इन्होंने सफल कार्यकाल का निर्वहन किया है।

अब डॉ राजीव बिहार को दर्द मुक्त बनाने का सपना लिए पटना में अस्पताल साईं हेल्थ केअर की शुरूआत की है, जिसमें अब आधुनिक तकनीकों के साथ आधुनिक दर्द निवारक मशीनों का संगम है जो साईं हेल्थ केअर को पूरे देश मे प्रसिद्धि दिला चुका है। राष्ट्रीय स्तर पर मिला ये पुरस्कार इस बात का सूचक है कि "सिवान के इस लाल" ने चिकित्सा को न सिर्फ पेशा बल्कि धर्म मान कर निर्वहन किया है और जनसेवा में खुद को समर्पित कर दिया है।

सिवान के संठी गांव में सैनिक पिता के घर जन्मे डॉ राजीव को बचपन से ही देश और समाज के सेवा की जो तालीम मिली, जिस राह पर चल डॉ राजीव 200 से ज्यादा निशुल्क चिकित्सा कैम्प के आयोजन सहित, पटना के बाहर से आये मरीजों के रहने के लिए निशुल्क व्यवस्था तक कर चुके हैं। इसके अलावा हमेशा समाजहित से जुड़े मुद्दों पर कार्य करते है और तत्काल में रोटरी पटना ग्रेटर के अध्यक्ष पद पर भी काबिज हैं।

खेती से खुशहाली

अनूप नारायण सिंह

बिहार के नक्सल प्रभावित शिवहर जिले में एक अनोखा गांव है, जहां महिलाएं खेती करती हैं. अपनी मेहनत के बदौलत ये महिला किसानों ने पूरे उत्तर बिहार में एक अलग पहचान बनाई है. गांव की महिलाओं ने खेती के बदौलत न सिर्फ गांव को विकसित कर दिया है, बल्कि गांव के अब कोई भी पुरुष बेरोजगार भी नहीं है. इस गांव में खेतों से आपको महिला सशक्तिकरण का रंग देखने को मिलेगा.शिवहर जिले के शिवहर प्रखंड का कोठिया गांव अब कोई परिचय का मोहताज नहीं है. यह गांव पूरे उत्तर बिहार में विकास के रूप मे अपनी नई पहचान बना चुका है. महिला किसान अपनी मेहनत के बदौलत इस गांव के विकास में एक नई इबादत लिख रही हैं. 4000 हजार की आबादी वाले इस गांव में तकरीबन साढ़े सात सौ एकड़ जमीन पर सब्जी की खेती भरपुर होती है.महिला किसान सुबह-सबेरे जाकर अपने खेतों से सब्जी तोड़कर लाती हैं और उसे बेचने के लिए बाजार में भेज देती हैं. यहां की सब्जी शिवहर के विभिन्न बाजारों के अलावा पड़ोसी जिले सीतामढ़ी, मुजफ्फपुर और दरभंगा समेत कई शहरों में भेजा जाता है. 5 सालों के अंदर सब्जी की खेती के बदौलत गांव के प्रत्येक घर न सिर्फ सुखी संपन्न हुआ बल्कि गांव में विकास की अब नई बयार बहने लगी है.गांव का कोई पुरुष अब मेहनत मजदूरी करने के लिये देश के अन्य महानगरो में नहीं जाता है. एक महिला किसान ने बताया कि पहले गांव की तस्वीर कुछ दूसरी थी. दूसरे गांव की तरह इस गांव में भी बेरोजगारी और बदहाली जर्रे- जर्रे में समाई हुई थीं, लेकिन गांव में कुछ महिलाओं ने महिला किसान कल्ब का गठन किया.ऐसे में उस संगठन में सैकड़ों महिलाएं जुड़ गईं. फिर आधुनिक खेती के बदौलत महिलाओं ने अपने भाग्य संवारने का निर्णय लिया. महिलाओं की इस बेहतरीन काम के लिए सरकार से भी समय- समय पर कम ही सही लेकिन मदद मिलती है. कहा जा रहा है कि गांव की ये महिलाएं किसान वर्मी कम्पोस्ट, मिश्रित खेती और श्रीविधि खेती के बदौलत परम्परागत खेती मे भी महारत हासिल कर चुकी हैं. गांव की महिला किसानों को अपने आप पर गर्व है तो पुरुष भी कम खुश नहीं है.

चिकित्सक ने कठिन परिश्रम और साहस के बल पर रच दिया है इतिहास

पटना से अनूप नारायण सिंह

एक ऐसे अनूठे चिकित्सक की कहानी जिसने अपने कठिन परिश्रम और साहस के बल पर रच दिया है इतिहास. छपरा जिले के एकमा प्रखंड के सरयूपार गांव के एक गरीब किसान परिवार में जन्म लेने वाले डा. विजयराज सिंह आज बिहार के श्रेष्ठ चिकित्सको में शुमार है. भूख गरीबी काफी करीब से देखने वाले डा सिंह ने बड़े पैकेज वाले नौकरी करने अपेक्षा बिहार को ही अपना कार्य क्षेत्र बनाया . दो दशकों में इन्होंने हजारो गरीबों के सपने ही नहीं पूरे किए हमें दी आशा की एक किरण. डॉ विजय पाल सिंह बिहार के ख्याति प्राप्त चिकित्सक होने के साथ ही साथ बहुयामी व्यक्तित्व के स्वामी जी भी है. ये अखिल भारतीय क्षत्रिय महा सभा के बिहार के प्रदेश अध्यक्ष हैं साथ ही साथ ग्लोबल राज प्रोडक्शन हाउस के माध्यम से इन्होंने एक साथ छह भोजपुरी फिल्मों के निर्माण की प्रक्रिया भी प्रारंभ की है जिसमें से एक फिल्म सच्चाई हमार जिंदगी बनकर तैयार है जिसका प्रदर्शन इस वर्ष ही होना है. पटना के गोला रोड में इनका अस्पताल राज ट्रामा सेंटर चौबीसों घंटे गरीब असहाय मरीजों की सेवा के लिए तत्पर रहता है .अस्पताल में एक साथ 60 से ज्यादा चिकित्सक जुड़े हुए हैं .यहां गंभीर रोगों के इलाज के साथ ही साथ सामान्य रोगों का भी सुचारू पूर्ण ढंग से इलाज होता है. शिक्षा के क्षेत्र में गरीब और ग्रामीण परिवेश के छात्रों को आधुनिक शिक्षा देने के लिए डॉक्टर विजय राज सिंह ने बिहार के हाजीपुर में शांतिनिकेतन नाम से सीबीएसई से संबद्ध 12वीं तक मान्यता प्राप्त विद्यालय की स्थापना की है .फिलहाल इस विद्यालय में 5000 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. बिहार के औरंगाबाद में एक भव्य मंदिर का निर्माण भी डॉक्टर विजय राज जी करवा रहे है.जो अपने निर्माण काल से ही चर्चा केंद्र बिंदु में है .इसके निर्माण पर अब तक एक करोड़ से ज्यादा की राशि खर्च हो चुका है . मंदिर के निर्माण में में सहयोग कर सराहनीय कार्य किया है. प्रतिवर्ष दर्जनों गरीब कन्याओं का विवाह करवाना ,सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना भी इनकी आदतों में शुमार है.बातचीत के क्रम मे इन्होने बताया कि उन्होंने गरीबी भूखा अभाव काफी नजदीक से देखा है.उन्होंने खुद के बल पर समाज को आगे बढ़ाने का प्रण कर रखा हैं इसी जज्बे के साथ अपनी ग्लोबल राज ग्रुप ऑफ कंपनी बनाकर चिकित्सा शिक्षा फिल्म निर्माण व विविध क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया है. साथ ही साथ में हजारों नौजवानों को रोजगार प्रदान किया है. राजनीति में आने के सवाल पर वे कहते हैं कि अगर आप की नीति सही है तो आप राजनीति में है.सभी दलों में उनके चाहने वाले लोग हैं और सभी दलों के राजनेताओं से वे संबंध रखते हैं .खुद राष्ट्रवादी हैं धार्मिक अनुष्ठानों में भी भाग लेते हैं सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं क्षत्रिय समाज से आते हैं इस कारण समाज के उत्थान के लिए कार्य करते हैं .एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया की हॉस्पिटल स्कूल फिल्म प्रोडक्शन व अन्य 15 इकाइयों के द्वारा प्रतिदिन जो आय होती है उसका 10 फिसदी हिस्सा वे समाज कल्याण के लिए निकालकर अलग रख देते है समाज के उत्थान के लिए सामाजिक कार्य करने वाले लोगों के लिए उनका दरवाजा चौबीस घंटे खुला रहता है .भोजपुरी भाषा में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में धमाके के साथ उतरने के सवाल पर उन्होंने कहा कि भोजपुरी दुनिया की सबसे मीठी भाषा है पर कुछ लोग इस भाषा को बदनाम करने और अश्लीलता का पर्याय बनाने में लगे हुए इसी कारण उन्होंने काफी सोच समझ के भोजपुरी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण किया है.सच्चाई हमार जिंदगी पहली फिल्म है इसके बाद लगातार बैक टू बैक पांच फिल्मों का निर्माण होना है. भोजपुरी फिल्म और गीत संगीत में फैली अश्लीलता पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि सेंसर बोर्ड भी अब विवादों के साए में है सेंसर के नीति और नीयत पर सवाल उठने लगे हैं अगर सेंसर है तो फिर गंदगी कैसे बाहर निकल कर आ रही है. उन्होंने बिहार सरकार से मांग की कि राज्य सरकार अध्यादेश लाकर शराबबंदी की तरह अश्लील और गंदे गानों का प्रचार-प्रसार और प्रसारण बिहार में पूरी तरह प्रतिबंधित करें।

बही ज्ञान-विज्ञान और संगीत की सरिता समारोह पूर्वक मनाया गया

पटना के प्रतिष्ठित इलिट इंस्टीच्यूट का 18 वां वार्षिकोत्सव

बाजारवाद के इस युग में शिक्षा का अलख जगा रहे तथा प्रतिवर्ष मेडिकल और इंजीनियरिंग में शत-प्रतिशत रिजल्ट देने वाले संस्थान इलिट इंस्टीच्यूटका 18 वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक पटना के श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में रविवार को मनाया गया इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति रास बिहारी सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे. इस अवसर पर संस्थान के छात्र-छात्राओं द्वारा भव्य रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।। एलिटसंस्थानपटना द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित 17 व्यक्तियों के नाम और कार्यक्षेत्र ;

सरस्वती सम्मान 2019

1. सुश्री कृष्ण प्रिया (शिक्षा)
2. डॉ. एन. के. झा, पटना विश्वविद्यालय (शिक्षा)
3. डॉ. राजीव रंजन, पी.एम.सी.एच.(चिकित्सा)
4. श्रीमति मौसम शर्मा (नृत्य-कला)
5. श्री विष्णु ओझा (गायन-कला)

प्रतिभा सम्मान 2019

1. श्री रजनीश सिन्हा (पत्रकारिता)
2. श्रीमति गुड़िया कुमारी, जीविका (सामाजिक-जागरुकता)
3. डॉ. राणा एस.पी. सिंह (चिकित्सा)
4. श्री कृष्ण कुमार कन्हैया (जैविक-खेती)
5. श्री प्रभाकर कुमार राय (पत्रकारिता)
6. श्री नरेश अग्रवाल (पर्यावरण-जागरुकता)

बाबा नागार्जुन सम्मान 2019

1. श्री गुरमीत सिंह (अनाथ,बीमार लोगों को भोजन)
2. श्रीमति रानी चौबे (महिला उत्थान और जागरुकता)
3. श्री विवेक विश्वास (लावारिस इंसान के भोजन,चिकित्सा,आवास का प्रबंधन)
4. श्रीमति ममता शर्मा (अनाथ बच्चों की शिक्षा)
5. डॉ. सिंधु (अनाथ बच्चों का देखभाल, शिक्षा और चिकित्सा)
6. श्री गिट्टु तिवारी (सामाजिक जागरुकता और शिक्षा-उत्प्रेरण)

युवा नेता का मेहनत लाया रंग, 87 साल बाद मनियारी अस्पताल खुलेगा जल्द

विगत साल निजी कार्यक्रम में मनियारी आये राज्यसभा सीपी ठाकुर के समक्ष जब मुजफ्फरपुर नाउ के पत्रकार संत राज बिहारी ने बंद मनियारी अस्पताल के मुद्दे को उठाया तो यह मुद्दा एक बार फिर लोगो के जेहन में उम्मीद के साथ उभर कर आ गया।इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए कार्यक्रम में मौजूद भाजयूमो के प्रदेश प्रवक्ता एवं स्थानीय यूवा नेता शशिरंजन सिंह ने गंभीरता से लिया और इसे चालू कराने के

प्रक्रिया में लग गए।वही आज इस मामले एक उम्मीद किरण तब जगी,जब इस अस्पताल के वर्तमान स्थिति के जांच के लिए राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने आदेश दिए है।इस मुद्दे को विभाग तक उठाने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले शशिरंजन ने बताया कि ओ महंत दर्शन दास के वर्तमान पीढ़ी से मिलकर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे से भेंट कर उन्हें इस विषय से अवगत कराया जिससे आज स्वास्थ्य विभाग ने इसके चालू कराने हेतु जाँच का आदेश दिया है।1932 में चालू इस अस्पताल को फिर से चालू होने की खबर से मनियारी क्षेत्र के लोगों में खुशी की लहर है। अब देखना है कि सरकार इस कार्य को अंतिम अंजाम तक ले जाने में कब तक सफल होती है।

समाज के हुक्म के बगैर एक कदम नही बढ़ाऊंगा : पप्पू देव

सहरसा : पांच वर्ष जेल की सफर तय करने के बाद अब पप्पू देव राजनीत का सफर शुरू करने की तैयारी में है। सोमवार को जेल से निकलने के बाद पप्पू देव ने कहा कि मेरा खून का कतरा बेसहारा लोगों एवं अन्याय के खिलाफ लड़ाई के लिये बहेगा। उन्होंने कहा कि आज तक जितने भी मुकदमा हमारे ऊपर किए गये सभी हमारे विरोधियों के साजिस का नतीजा है।हमे शुरू से न्यायालय पर भरोसा था आज भी है।जिसके कारण आज मैं 90 फीसदी कैश में बड़ी एवं 10 फीसदी कैश में जमानत पर निकला हूँ।अब मेरा एक ही उद्देश्य रहेगा कि समाज ने जो वर्ग दवे कुचले बंचित हैं उन्हें न्याय के लिए कु छ नेता वोट की राजनीति करते या यूज करते उन्हें न्याय दिलाना मेरा मकसद है। उन्होंने एक प्रश्न के जवाब में कहा कि मैं समाज के हुक्म के बगैर एक कदम आगे नही बढ़ूंगा।समाज के लोग मुझ राजनीत में उतरेंगे तो मैं पीछे भी नही हटूंगा। वैसे मेरे कुछ विरोधी मेरे जेल से निकलने के बाद उनके छाती पर सांप रेंग रहा होगा।वे मेरे छवि को समाज मे धूमिल करने में जुट गए होंगे। लेकिन मुझे विश्वास है समाज अब इस बेटा को न्याय के पथ पर चलने में हमे जरूर मदद करेगें।

बिहार विधानसभा चुनाव 2020 पोस्टर पर राजनीतिक सरगर्मी तेज

गत दिनों बिहार में सत्तासीन जदयू द्वारा बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के मद्देनजर पोस्टर जारी किया गया। इस पोस्टर के माध्यम बिहार की जनता से नीतीश कुमार को पुनः मुख्यमंत्री बनाने की अपील की गई। इस पोस्टर के माध्यम से लिखा गया कि ह्लक्यूं करें विचार, ठीके तो है नीतीश कुमारह्व। विपक्ष द्वारा इस पोस्टर का काफी जोरशोर से विरोध किया गया। राष्ट्रीय जनता दल ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से लिखा कि ह्लठीके है मतलब कामचलाऊ है, समझौता है, मजबूरी है! होगी किसी की मजबूरी! बिहारी समझौता नहीं करेंगे, दूरदर्शी सर्वप्रिय कर्मठ युवा चुनेंगे!ह्व इसी के साथ सत्तापक्ष एवं विपक्ष के बीच जुबानी जंग तेज हो गई। दोनों पक्षों के सोशल प्लेटफॉर्म्स इन मुद्दों से सम्बंधित आलेखों से भरे हुए दिख रहे है।

महागठबंधन में सभी पार्टी प्रमुख एकजुट

इसी के साथ राजनैतिक हलकों में यह चर्चा छिड़ गई कि बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में शायद नीतीश कुमार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। कुछ लोग इसे सिर्फ जदयू की मुख्यमंत्री पद की उम्मीदवारी अपने पास रखने की एक कोशिश भर मान रहे है। दूसरी और, महागठबंधन की मुख्य घटक दल राजद द्वारा तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जा चूका है। अभी हाल ही में महागठबंधन की महत्वपूर्ण बैठक में सभी पार्टी प्रमुखों ने एकजुट होकर 2020 का चुनाव लड़ने की बात कही। सूत्रों का कहना है कि राजग इस चुनाव को तेजस्वी यादव बनाम नीतीश कुमार बनाना चाहती है। जदयू के जानेमाने रणनीतिकारों का मानना है कि यदि यह चुनाव दो विचारधारा की न होकर दो व्यक्तित्वो के बीच हो तो इसका फायदा स्पष्ट रूप से राजग को होगी। सत्ता पक्ष का स्पष्ट मानना है कि 2019 का लोकसभा चुनाव दो विचारधारा की लड़ाई से अधिक नरेंद्र मोदी एवं राहुल गाँधी क बीच की लड़ाई बन गई थे। भाजपा ने मीडिया के माध्यम से राहुल गाँधी की छवि खराब करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। इस सबका प्रत्यक्ष फायद भाजपा सहित राजग के तमाम घटक दलों को मिला था। साथ ही मुख्यधारा की मीडिया का भाजपा की तरफ झुकाव का भी नीतीश कुमार को फायदा मिलने की बात कही जा रही है।

उम्मीद की एक नयी किरण

वही कुछ विश्लेषकों का मानना है कि पिछले 15 वर्षो से सत्तासीन जदयू का नीतीश कुमार के बल पर चुनाव जितना नामुमकिन है। पिछले 5 सालों में नीतीश कुमार के शासनकाल में घटित अनेक ऐसी अनेक घटनाए है जो कि नीतीश कुमार के छवि को नुकसान पंहुचा रही है। उनका ये भी मानना है कि राजग ने 2019 का लोकसभा नरेंद्र मोदी के दमदार छवि एवं भ्रामक प्रचार तंत्र के माध्यम से जीती थी। लेकिन समय के साथ ये हथकंडे प्रभावहीन होते जा होते जा रहे है। चुनाव के तुरंत बाद बेरोजगारी की वजह से छाई मंदी ने बिहार सहित पुरे देश को आगोश में ले चुकी है।

जानिए क्यूं करें विचार, कितना ठीक है नीतीश कुमार

इन परिस्तिथियों में राज्य का युवावर्ग तेजस्वी यादव में उम्मीद की एक नयी किरण देख सकते है। दूसरी और तेजस्वी यादव करीब 5 वर्षों से राजनीती में है। विपक्ष में होने की वजह से, उनपर फिलहाल कोई बड़ा आरोप नहीं लगा है। विश्लेषको का मानना है कि नीतीश कुमार के खिलाफ बलवती होती एंटी इंकम्बेंसी एवं तेजस्वी यादव के साफ छवि का फायदा कहीं न कही महागठबंधन को ही होगा। साथ ही यह भी कहा जा रहा है कि युवाओं का जो समर्थन 2019 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के लिए था, वही समर्थन 2020 के चुनाव में तेजस्वी यादव के लिए हो सकती` है।

छिड़ी जुबानी जंग

आपको याद दिलाते चले कि लोकसभा चुनाव के बाद केंद्र में जदयु-भाजपा के बीच कैबिनेट में सीटों की संख्या को लेकर मची खींचतान के बीच कुछ राजद नेताओं ने नीतीश कुमार को पुनः राजद में शामिल होने की पेशकश की थी, जिसे जदयू द्वारा एकसिरे से नकार दिया गया था। फिलहाल इनदोनों दलों में समझौते की कोई गुंजाईश दूर-दूर तक नहीं दिख रही है। कम से कम दोनों दलों के बीच छिड़ी जुबानी जंग तो यही दशार्ती है।

नुक्कड़ नाटक वाहन को विधायक नारायण दास ने दिखायी हरी झंडी

बीते दिन समाहरणालय परिसर से साउंड एंड लाइट व नुक्कड़ नाटक वाहन को विधायक नारायण दास ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. इस वाहन के जरिये गांव व शहर में राज्य सरकार से चलने वाली महत्वपूर्ण योजनाओं को प्रचार प्रसार किया जायेगा,विधायक ने कहा सबका साथ सबका विकास व सबका विस्वास के साथ बढ़ता झारखंड व बदलता झारखंड की पूरी तस्वीर इस वाहन के जरिये दिखाई जायेगी.नुक्कड़ नाटक दल द्वारा मुख्यमंत्री सुकन्या योजना समेत केंद व राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी जायेगी.इस मौके पे डीसी राहुल कुमार सिन्हा,डीडीसी सुशांत कुमार गौरव आदि थे।

इस साल के अंत में होने वाले झारखंड विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी भाजपा

लगातार केंद्र के नेता और भाजपा के वरिष्ठ नेता झारखंड दौरा कर रहे. पिछले हफ़्ते भाजपा कार्यकारी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा झारखंड पहुँचे जहाँ वो लोहरदगा, गुमला, चतरा और पलामू का दौरा किया. रघुवर दास ने पहले ही ऐलान कर दिया है कि 81 विधानसभा सीटों में से 65 सीटें वो जीतेंगे. सितम्बर के दूसरे हफ़्ते में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी झारखण्ड का दौरा करेंगे जहाँ वो औपचारिक रूप से झारखंड विधानसभा चुनाव से पहले प्रचार अभियान की शुरूआत कर देंगे. झारखंड में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए विधानसभा का शुभारंभ करेंगे साथ ही कई परियोजनाओं का उद्घाटन भी करेंगे. दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी की अगर बात करें तो कांग्रेस ने अभी नए झारखंड प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्त किया है साथ ही पाँच कार्यकारी अध्यक्ष भी नियुक्त किया है. झारखंड में कांग्रेस पार्टी अभी भी दो गुटों में बंटी हुई है जिसमें एक गुट सुबोध कांत सहाय के साथ है तो दूसरे नए प्रदेश अध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्षों के साथ में है. कांग्रेस पार्टी के कई नेताओं का मानना है कि कार्यकारी अध्यक्ष उन न को बनाया गया है जो उस पद के लायक नहीं है.

बेगूसराय में सोयाबीन का प्रोसेसिंग यूनिट लगेगा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अंतर्गत भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर में बेगूसराय जिले के किसानों का प्रशिक्षण 28, 29 अगस्त को हुआ, प्रशिक्षण प्राप्ति कर लौटते के बाद किसानों के मार्गदर्शन के रूप में गए अनीश कुमार किसान सलाहकार ने बताया, बेगूसराय जिले में 40 हजार हेक्टर में सोयाबीन की खेती होती है, किसान सोयाबीन पैदा करने के बाद उसे औने पौने भाव में व्यापारियों को बेच देते हैं, संस्था के निदेशक डॉ बी.एस.भाटिया , वैज्ञानिक डॉ अमरनाथ शर्मा, डॉक्टर बी.यू.दुपारे को जानकारी हुई इन्होंने सोयाबीन प्रोसेसर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री डी.एन. पाठक को प्रशिक्षण के दौरान आमंत्रित किया, श्री पाठक एवं पूरे वैज्ञानिकों की टीम ने बेगूसराय से पहुंचे किसानों के साथ साक्षात्कार हुआ जिसमें बेगूसराय जिले में सोयाबीन के विशाल रकवे और उत्पादन औसतन 8 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से होने की जानकारी प्राप्त करने के बाद बहुत ही उत्साहित हुए, और पूरी टीम के साथ बेगूसराय आने का फैसला कर लिया। जहां एक प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना करने की बात कही गई है ,जिससे यहां के किसानों को सस्ती दर पर सोयाबीन बीज की आपूर्ति के साथ-साथ किसानों के द्वारा उत्पादित सोयाबीन की खरीद भी की जाएगी । बेगूसराय जिले में सोयाबीन की खेती के

विशाल रकवे और सफल उत्पादन को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने मुख्यमंत्री फसल सहायता में सोयाबीन को शामिल करने का अनुरोध किया और उनके अनुरोध को मुख्यमंत्री महोदय ने मान भी लिया जैसा की वीडियो कांफ्रेंसिंग में के दौरान जिलाधिकारी महोदय ने कहा। सोयाबीन किसानों के भविष्य को देखते हुए जिला कृषि पदाधिकारी बेगूसराय एवं परियोजना निदेशक आत्मा ने बेगूसराय के सोयाबीन की खेती करने वाले किसान को सोयाबीन अनुसंधान केंद्र इंदौर भेजने का फैसला किया था, पूर्व में अप्रैल माह में भी किसानों की एक टोली इंदौर जा चुकी थी। इंदौर गई इस टीम के साथ अजीत कुमार उप परियोजना निदेशक एवं जिले के विभिन्न प्रखंडों के किसान जिसमें मटिहानी, बलिया, छौराही, बछवाड़ा, खोदावंदपुर, साहेबपुर कमाल, चेरिया बरियारपुर, नाव कोठी, तेघरा ,डंडारी आदि के किसान शामिल हुए ।

शिक्षक दिवस पर मनु महाराज ने अपने शिक्षक को किया याद,कहा गुरु की वजह से यहां तक पहुँचा

बिधुरंजन उपाध्याय

पटना- देश के प्रथम उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्ण के जन्मदिवस को पूरा देश शिक्षक दिवस के रूप में मना रहे हैं.सभी अपने-अपने गुरुओं को याद कर रहे हैं और अपना-अपना अनुभव भी साझा कर रहे हैं.ऐसे में बिहार के चर्चित आईपीएस में शुमार मुंगेर रेंज डीआईजी मनु महाराज ने अपने गुरुओं के प्रति आभार प्रकट किया और अपने छात्र जीवन की बातें साझा की. मुंगेर के डीआईजी मनु महाराज ने बताया कि केंद्रीय विद्यालय चंबा हिमाचल प्रदेश के गणित शिक्षक अनिल शर्मा उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे.गणित शिक्षक अनिल शर्मा हमेशा उन्हें सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए प्रोत्साहित करते थे.शिक्षक अनिल शर्मा हमेशा उन्हें कहा करते थे कि तुम सिविल सर्विस के लिए ही बने हो.किसी और चीज पर ध्यान न देकर सिर्फ और सिर्फ इसी की तैयारी करो.उनके प्रेरणा और प्रोत्साहन से ही दसवीं क्लास से ही उन्होंने भी

सिविल सर्विस में ही जाने की ठानी और आज बतौर आईपीएस देश की सेवा कर रहे हैं.जब-जब भी कुछ उपलब्धि हासिल होती है अपने शिक्षक अनिल शर्मा का ध्यान एक बार जेहन में जरुर आता है.इन गुरुजनों की शिक्षा से आज यहां तक पहुंचा हूं.आज शिक्षा पद्यति का व्यवसायिकरण हो चूका है जिससे शिक्षक और छात्र के बीच संबंधों में प्रगाढ़ता काफी हद तक खत्म हो चुकी है.दोनों के बीच भावनात्मक संबंधों का अभाव बच्चों के चरित्र निर्माण में बाधक बन रहा है.

शिक्षा में नैतिकता का समावेश बेहद आवश्यक है.छात्रों के चरित्र निर्माण के साथ संस्कार और संस्कृति पर भी ध्यान देने की जरूरत है.इसके लिए आज फिर उस गुरु शिष्य परंपरा को अपनाना होगा जिसमें मूल्यों की इज्जत हो.गुरु मूल्यों के प्रति समर्पित हों और शिक्षा भी मूल्यों पर आधारित हो.शिक्षक को गुरु की भूमिका में आना होगा.मन में गुरु का भाव होगा तो उसे शिष्यों की श्रद्धा और सम्मान मिलेगा.

भारत मंदी से बेहाल, ग्रोथ रेट में पाकिस्तान से भी पिछड़ने का डर

मोदी सरकार ने देश की इकनॉमी को 2024 तक पांच ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का वादा किया है. लेकिन पिछली कुछ तिमाहियों के दौरान जिस तरह से जीडीपी ग्रोथ में लगातार कमी आ रही है उससे इस लक्ष्य पर सवाल उठने शुरू हो गए हैं. हालात यही रहे तो चालू वित्त वर्ष में जीडीपी ग्रोथ रेट में गिरावट इसे अपने दक्षिण एशियाई पड़ोसियों से भी पीछे धकेल सकता है.

जीडीपी ग्रोथ रेट ने किया निराश

वित्त वर्ष 2018-19 के दौरान भारत की वार्षिक जीडीपी ग्रोथ रेट 6.8 फीसदी रहने का अनुमान लगाया गया है. लेकिन इस वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही में इसने निराशाजनक प्रदर्शन किया और 5.8 फीसदी पर पहुंच गया. देश में पहले नोटबंदी और फिर जीएसटी ने इकनॉमी का झटका दिया. इससे धीमी हुई ग्रोथ अब तक रफ्तार नहीं पकड़ सकती है.

इकनॉमी के लगभग हर सेक्टर में भारत का प्रदर्शन बुरा दिख रहा है. देश में खपत में कमी दर्ज की जा रही है और निवेश घटता जा रहा है. एफएमसीजी, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और ऑटो सेक्टर की बिक्री में भारी गिरावट दर्ज की गई है. रोजगार के आंकड़े निराशाजनक दिख रहे हैं. मैन्यूफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर दोनों की रफ्तार में कमी आई है. यही वजह है कि चालू वित्त वर्ष में जीडीपी ग्रोथ के रफ्तार अच्छी रहने के प्रति आशंका जताई जा रही है.

बांग्लादेश और पाकिस्तान से भी पिछड़ने का खतरा

हालात यही रहे तो भारत एनुअल जीडीपी ग्रोथ रेट में अपने पड़ोसियों से पीछे रह सकता है. वित्त वर्ष 2017-18 के दौरान बांग्लादेश का जीडीपी ग्रोथ रेट 7.9 फीसदी रहा था. वहीं नेपाल का जीडीपी ग्रोथ रेट 7.1 और पाकिस्तान का 5.2 फीसदी रहा था. जबकि वित्त वर्ष 2018-19 की आखिरी तिमाही के दौरान भारत का जीडीपी ग्रोथ रेट घट कर 5.6 फीसदी रह गया था,. मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही में तो नतीजे और निराशाजनक रही और जीडीपी ग्रोथ रेट घट कर साढ़े छह साल के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया.

इस साल आर्थिक सर्वे में मौजूदा वित्त वर्ष के दौरान देश का आर्थिक विकास दर सात फीसदी रहने का अनुमान लगाया गया था. आरबीआई ने अगस्त में जीडीपी ग्रोथ रेट का अनुमान 7 फीसदी से घटा कर 6.9 फीसदी कर दिया था. जून की मॉनेटरी पॉलिसी में रिजर्व बैंक की मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी ने ग्रोथ रेट का अनुमान 7.2 फीसदी से घटा कर 7 फीसदी कर दिया था. दरअसल इकनॉमी के कई सेक्टरों के खराब प्रदर्शन की वजह से सुस्त ग्रोथ रेट को और झटका लगा है. पिछले साल पहली तिमाही में औद्योगिक उत्पादन में 5.1 फीसदी की दर से बढ़ोतरी हुई थी. लेकिन मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही में औद्योगिक उत्पादन में सिर्फ 3.6 फीसदी की बढ़त दर्ज हुई है. इस बीच ताजा आंकड़ों के मुताबिक कोर सेक्टर के प्रदर्शन में भारी गिरावट आई है. पिछले साल जुलाई में इसकी ग्रोथ 7.3 फीसदी थी लेकिन इस साल जुलाई में यह घट कर 2.1 फीसदी पर आ गई.

एक ओर ताजा स्टडी में बताया गया है कि आगामी आठ वर्षों में भारतीय अरबपतियों की संख्या दोगुनी हो जाएगी, दूसरी तरफ देश की टॉप सात कंपनियों का मार्केट कैप 86,878.7 करोड़ रुपए लुढ़क गया है। अगले साल दुनिया 2008 से भी खतरनाक मंदी के दुष्चक्र में फंसने जा रही है। भारत पर आगामी नौ महीने बहुत भारी पड़ने वाले हैं।

इस वक़्त हमारा देश दो तरह के आर्थिक परिदृश्य में है। एक ओर जहां, विश्व के सबसे ज्यादा अरबपतियों की सूची में भारत का तीसरा स्थान आगे भी बरकरार रहने के अनुमान हैं, वही दूसरी तरफ, पिछले कुछ ही दिनो में देश की दस बड़ी कंपनियों में से सात (आईटीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, एचडीएफसी, कोटक महिंद्रा बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और भारतीय स्टेट बैंक) का मार्केट कैप 86,878.7 करोड़ रुपए लुढ़क गया। यद्यपि इसी समयावधि में टीसीएस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और इंफोसिस का मार्केट कैप बढ़ गया।एक ताजा स्टडी में बताया गया है कि आगामी आठ वर्षों में भारतीय अरबपतियों की संख्या दो गुनी हो सकती है। इस समय देश में अरबपतियों की कुल संपत्ति 8,230 अरब डॉलर है। इस बीच कांग्रेस नेता और अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा ने प्रधानमंत्री से पूछा है कि, 'सर, स्पष्ट रूप से आर्थिक मंदी इस समय हर किसी के बात करने का मुद्दा है। क्या आपको नहीं लगता कि हमें इसके बारे में कुछ करना चाहिए?'

जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में गिरावट हो रही हो और सकल घरेलू उत्पाद कम से कम तीन महीने डाउन ग्रोथ में हो तो उस स्थिति को वैश्विक आर्थिक मन्दी कहते हैं। पूरे विश्व में इस समय मंदी के झटके लग रहे हैं। इस माह अगस्त में तीन प्रमुख बदलावों ने अर्थव्यवस्था के कान खड़े कर दिए हैं; ह्ययूरोप का इंजनह्ल मंदी की ओर है, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में भारी गिरावट दर्ज हुई है, व्यापार युद्ध के जवाब में मुद्रा युद्ध शुरू हो गया है और चीन में उत्पादन घट रहा है।

सिर्फ एक साल में ही छोटे व्यवसायों को 10 करोड़ रुपये का

ऋण दिला चुका है यह फिनटेक स्टार्टअप

भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने कहा है कि अर्थव्यवस्था में जारी मंदी बहुत चिंताजनक है और सरकार को ऊर्जा क्षेत्र और गैर बैंकिंग वित्तीय क्षेत्रों की समस्याओं को तुरंत हल करना होगा। भारत में कपड़ा क्षेत्र में हालात दिनों-दिन बदतर होते जा रहे हैं। प्रॉपर्टी का धंधा कई साल से मंदा चल रहा है। नोटबंदी के समय से खुदरा व्यापारी भी अपना धंधा चौपट होने की शिकायत करते रहे हैं। गौरतलब है कि रघुराम राजन वह अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया में 2008 की मंदी की समय रहते भविष्यवाणी करके ख्याति अर्जित की थी। हाल ही में 'बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच' की एक रिपोर्ट में खुलासा किया गया है कि अगले साल दुनिया 2008 से भी खतरनाक मंदी के शिकंजे में फंसने जा रही है। सर्वे में शामिल 34 फीसदी फंड मैनेजर्स के मुताबिक, उस खतरनाक आहट के बावजूद बड़ी कंपनियां अभी भी अपनी बैलेंस शीट सुधारने का प्रयास नहीं कर रही हैं। इस आहट से अमेरिका की चीन, ईरान और भारत के साथ व्यापार युद्ध की आशंका गहराती जा रही है। भारत में खासकर चार सेक्टर्स पर मंदी का संकट दिख रहा है, जिनमें कार्यरत लाखों लोगों की नौकरियां खतरे में पड़ गई हैं। बैंक, इंश्योरेंस, ऑटो, लॉजिस्टिक, इंफ्रास्टक्चर के अलावा नॉन बैंकिंग फाइनेंस, वाहन, बिस्किट, टैक्सटाइल उद्योग संकट में हैं।मंदी के बादल ऐसे सेक्टर्स पर भी घिरने वाले हैं, जहां करोड़ों नौकरियां खत्म हो सकती हैं। इसी घेराव में पेट्रोलियम, खनन, टेक्सटाइल, फर्टिलाइजर एवं संचार सेक्टर्स में उद्योगों ने कर्ज लेना कम कर दिया है। मारुति सुजुकी, बजाज, टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, यूनाइटेड इंडिया इंशोरेस, नेशनल इंश्योरेंस जैसी दिग्गज कंपनियां मंदी की चपेट में आ चुकी हैं। अगले नौ महीने भारत समेत पूरी दुनिया पर भारी पड़ने वाले हैं।अपने यहां लाखों की संख्या में कर्मचारियों की छंटनी कर रहीं कंपनियों की नजर अब केवल सरकार से उम्मीद लगा रही है। सरकार प्रोत्साहन पैकेज पर मंथन में जुटी है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वित्त मंत्रालय समेत तमाम वित्तीय अधिकारियों के साथ इसको लेकर बैठक कर चुके हैं। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों ने आर्थिक संकट गहरा दिया है। डॉलर के मुकाबले रुपए ने 70 का आंकड़ा पार कर लिया है। उधर, देश का राजकोषीय घाटा बढ़ता जा रहा है। इस दौरान निर्यात में गिरावट से विदेशी मुद्रा कोष को भी झटके लग रहे हैं।

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा है कि घरेलू मांग में और कमी आने के संकेत साफ हैं। मंदी गहरा रही है। मैन्युफैक्चरिंग और खनन में मंदी का साफ असर दिख रहा है। नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार कहते हैं कि बीते सत्त वर्षों में देश का वित्तीय क्षेत्र इतने अविश्वास के दौर से कभी नहीं गुजरा है। कोई भी किसी पर भी भरोसा नहीं कर रहा है। निजी क्षेत्र के भीतर कोई भी कर्ज देने को तैयार नहीं है। हर कोई नकदी लेकर बैठा है। इस बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि सरकार अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए कई कदम उठा रही है। अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध तथा मुद्रा अवमूल्यन के चलते वैश्विक व्यापार में काफी उतार-चढ़ाव वाली स्थिति पैदा हुई है। अब भारत में कारपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) नियमों के उल्लंघन को दिवानी मामले की तरह देखा जाएगा। सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 70 हजार करोड़ रुपये की पूंजी डालने जा रही है ताकि बैंक बाजार में पांच लाख करोड़ रुपये तक की नकदी जारी करने में सक्षम हो सकें। छोटे एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) के अब तक के सभी लंबित जीएसटी रिफंड का भुगतान 30 दिन के भीतर कर दिया जाएगा। भविष्य के रिफंड मामलों को 60 दिन के भीतर निपटा दिया जाएगा। बैंकों ने रेपो दर में कटौती का फायदा ग्राहकों को पहुंचाने का फैसला किया है। अब घर और वाहन खरीदने पर और ज्यादा क्रेडिट सपोर्ट दिया जाएगा। लोन आवेदन की ऑनलाइन निगरानी की जाएगी। लॉन्ग, शॉर्ट टर्म कैपिटेल गेन सरचार्ज वापस लिया जाएगा। सरकार ईज ऑफ डूइंग बिजनस और ईज ऑफ लिविंग पर फोकस कर रही है।

चार सालों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश यात्रा पर खर्च हुए 355 करोड़ रुपये: आरटीआई

अपने 48 महीनों के कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 41 विदेश यात्राओं के दौरान 50 से ज्यादा देशों का भ्रमण किया. इन विदेश यात्राओं पर 355 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं और इस दौरान प्रधानमंत्री ने कुल 165 दिन विदेशों में गुजारे हैं. सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत मांगी गई जानकारी से इस बारे में पता चला है. 15 जून 2015 से बाद की इन यात्राओं पर कुल 3,55,30,38,465 रुपये खर्च हुए. समाचार वेबसाइट द न्यू इंडियन एक्सप्रेस रिपोर्ट के अनुसार, आरटीआई कार्यकर्ता भीमप्पा गदद ने प्रधानमंत्री कार्यालय से इस संबंध में जानकारी मांगी और उसे वेबसाइट के साथ साझा किया. रिपोर्ट के अनुसार, इन 41 विदेश यात्राओं के दौरान प्रधानमंत्री 52 देशों में गए. इसमें सबसे ज्यादा आठ दिन उन्होंने फ्रांस, जर्मनी और कनाडा में गुजारे. मोदी ने इन तीन देशों की यात्रा अप्रैल 2015 में की थी.तीन देशों की यह यात्रा मोदी की सबसे खचीर्ली यात्रा है. इस यात्रा पर कुल 31 करोड़ 25 लाख 78 हजार रुपये खर्च. साल 2014 में प्रधानमंत्री की भूटान यात्रा पर सबसे कम खर्च आया. 15 और 16 जून, 2015 को भूटान यात्रा में कुल दो करोड़ 45 लाख, 27 हजार, 465 रुपये खर्च हुए. आरटीआई कार्यकर्ता भीमप्पा ने बताया, ह्यमैंने कुछ रिपोर्ट पढ़ी थी, जिसमें मोदी की विदेश यात्राओं की आलोचना की गई थी. इसके बाद मैंने प्रधानमंत्री कार्यालय से उनकी विदेश यात्राओं के संबंध में जानकारी मांगी थी. प्रधानमंत्री की घरेलू यात्राओं के संबंध में जानकारी न दिए जाने पर भीमप्पा निराश हैं. उन्होंने कहा, ह्यघरेलू यात्राओं और इस दौरान प्रधानमंत्री की सुरक्षा पर किए गए खर्च के बारे में सुरक्षा कारणों की वजह बताकर जानकारी नहीं दी गई. हालांकि मैंने सिर्फ खर्च की जानकारी मांगी थी, लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से यह कहकर मना कर दिया गया कि एसपीजी सुरक्षा संगठन प्रधानमंत्री की सुरक्षा करता है और आरटीआई से इसे छूट दी गई है.

टैक्स के नाम पर किसी को परेशान नहीं किया जाएगा। हम जीएसटी की प्रक्रिया को और सरल बनाने जा रहे हैं।

राजस्थान के कपड़ा उद्योग पर मंदी की मार, नौकरियों के पड़े लाले

आर्थिक मंदी की मार से राजस्थान की भीलवाड़ा स्थित टेक्सटाइल इंडस्ट्री भी कराह रही है. नौकरियां जाने से सैकड़ों मजदूर और स्टाफ सदस्यों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है.

आर्थिक मंदी की मार से राजस्थान की भीलवाड़ा स्थित टेक्सटाइल इंडस्ट्री भी कराह रही है. नौकरियां जाने से सैकड़ों मजदूर और स्टाफ सदस्यों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है. फिलहाल अर्थव्यवस्था में तेजी लौटने के कोई संकेत नहीं मिल रहे हैं. मंदी की चपेट में सबसे ज्यादा वे लोग हैं, जो आर्थिक स्तर पर सबसे नीचे हैं. मास्टर, ग्रेडर्स, टेक्निशियन्स जैसे कामगारों की या तो नौकरियां चली गई हैं या फिर मजदूरी में भारी कमी आई है. अगर हरीश शर्मा के ही मामले को लें तो वह 35 साल के हैं और 3 बच्चों के पिता हैं. पिछले 3-4 महीनों से वह टेक्सटाइल इंडस्ट्री में नौकरी खोज रहे हैं. इंडिया टुडे से बातचीत में हरीश ने कहा, 'सर, पिछले 3-4 महीने से मैं खाली बैठा हूं. जब मैं मार्केट जाता हूं तो कहा जाता है कि मार्केट डाउन है और कोई नौकरी नहीं है. कई जगहों पर स्टाफ भी बदल गया है. इस वजह से भी मुश्किलें हैं. जैसे नए लोगों को नहीं रखा जा रहा. यह भी परेशानी है.'

नौकरी जाने से पहले कई वर्षों तक शर्मा टेक्सटाइल इंडस्ट्री का हिस्सा रहे. घर चलाने के लिए वह नौकरी की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह घूम रहे हैं. हरीश ने कहा, 'अब तक जो जवाब मुझे मिले हैं कि फिलहाल आदमी हैं. जब नौकरी होगी, हम आपको फोन करेंगे. आप कल आ जाइए या परसों. जाइए. बात करेंगे. फिलहाल आदमी हैं. मालिकों से कोई बात नहीं करने देता. जो हमसे ऊपर हैं, वही कहते हैं कि फिलहाल काम करने वाले हैं. ऐसे जवाब मिलते हैं तो हम ज्यादा बात नहीं करते. अगली कंपनी में देखते हैं. अगर वहां भी नहीं मिलती तो मास्टर पोस्ट के अलावा हमें छोटी नौकरी करनी पड़ती है. अगर नौकरी मिलती है तो घर का खर्च उसी से चलाना पड़ता है.' यूपी, बिहार जैसे राज्यों के कई मजदूर या तो कहीं और काम करने चले गए हैं या फिर अपने राज्यों में वापस लौट गए हैं.भीलवाड़ा मजदूर संघ कपड़ा यूनियन के सदस्य कमल कुमार गुज्जर ने कहा, 'पिछले कई वर्षों में टेक्सटाइल इंडस्ट्री में मंदी नहीं देखी गई. लेकिन अब हजारों मजदूर अपने गांव चले गए हैं क्योंकि नौकरी है नहीं. अगर नौकरी है भी तो उन्हें पूरी मजदूरी नहीं मिलती. तीसरे दिन काम नहीं मिलता तो वह यहां रहकर क्या करेंगे. ' राजस्थान के भीलवाड़ा में कई फैक्ट्रियां या तो बंद हो गई हैं या फिर लोगों की संख्या और काम के घंटों में कटौती की है.

नरेन्द्र मोदी ने बनाया एक 'अनोखा' रिकॉर्ड

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक वर्ष के कार्यकाल के दौरान उनके नाम एक और खास बात जुड़ जाएगी। प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के करीब एक वर्ष में विदेशी मेहमान बनने के मामले में वे हाल के दौर के दूसरे प्रधानमंत्रियों से आगे निकल गए हैं। विदेशी मामलों पर वार्ता, समझौता करने में जितनी सक्रियता मोदी ने दिखाई है, शायद इतनी सक्रियता किसी और प्रधानमंत्री ने दिखाई हो। विपक्ष ने मोदी पर इस बात को लेकर भी निशाना साधा कि उन्होंने भारत में कम और विदेश में ज्यादा समय बिताया।मोदी ने 26 मई 2014 को प्रधानमंत्री का पद संभालने के बाद संख्या के लिहाज से स्वतंत्र भारत के इतिहास में किसी दूसरे प्रधानमंत्री के मुकाबले अब तक सबसे ज्यादा बहुपक्षीय और द्विपक्षीय विदेशी दौरे किए हैं। उन्होंने अपने विदेशी दौरों की शुरूआत भूटान से की और वे 15-16 जून, 2014 को थिम्पू और 3-4 अगस्त को नेपाल यात्रा की। इस बीच वे 1 जुलाई को ब्राजीलिया, ब्राजील के दौरे पर भी गए।बाद में वे संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करने 26 से 30 सितंबर तक अमेरिका गए और वहां भी पांच द्विपक्षीय दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने न केवल अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से बातचीत की वरन वहां भारतीय मूल के लोगों को न्यूयॉर्क के मेडिसन स्क्वेयर एरिना में संबोधित भी किया।

मोदी म्यांमार की यात्रा पर गए जहां वह पूर्व एशिया सम्मेलन के लिए 11-13 नवंबर, 2014 तक देश से बाहर रहे। इसके बाद वे 14-18 नवंबर 2014 को जी-20 सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन पहुंचे। प्रधानमंत्री ने 17 नवंबर को सिडनी ओलिम्पिक पार्क में भारतीय मूल के लोगों को संबोधित किया। इस दौरे के दौरान उन्होंने ऑस्ट्रेलिया से भारत को यूरेनियम की सप्लाई करने के समझौते पर मोहर लगाई। 18 नवंबर 2014 को उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री जॉन एबट के राजधानी, कैनबरा में द्विपक्षीय वार्ता की। यहां से वे 19 नवंबर को वे फिजी के दौरे पर रवाना हो गए।

प्रधानमंत्री 11 से 19, नवंबर 2014 के बीच म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया और फिजी के 9 दिनों के दौरे पर रहे, वहीं महीने के अंत में वे दक्षेस सम्मेलन में शिरकत करने के लिए दो दिन नेपाल में रहे। प्रधानमंत्री के तौर पर यह उनकी दूसरी नेपाल यात्रा थी। विदेश दौरे को लेकर विदेश मंत्रालय की सार्वजनिक सूचना में बताया गया कि वे नंवबर माह में कम से कम 11 दिन प्रधानमंत्री देश से बाहर रहे। उनकी फिजी यात्रा इस मामले में ऐतिहासिक थी कि तीन दशकों के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने उस देश की यात्रा की थी जबकि फिजी में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं।

मोदी की विदेश यात्राओं से भारतीय अर्थव्यवस्था को खासी उम्मीद रही है और उन्होंने इन देशों में देश के भारोबारी हितों और निवेश को बढ़ाने के लिए बहुत कुछ कहा। जापान यात्रा का कारोबारी ही नहीं वरन सामरिक और कूटनीतिक महत्व भी था।

पीएम मोदी अपने 84 विदेश दौरे पर कितने मंत्रियों को ले गए साथ, सरकार ने 'गायब' कर दिया जवाब

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक अपने कार्यकाल में 84 देशों के दौरे पर गए, लेकिन इस दौरान खुद सरकार का एक भी मंत्री उनके साथ नहीं था!

पीएम मोदी ने अबतक की 84 देशों की यात्रा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक अपने कार्यकाल में 84 देशों के दौरे पर गए. इस दौरान उन्होंने तमाम महत्वपूर्ण समझौते और करार पर हस्ताक्षर किये. पीएम के साथ तमाम विदेश दौरे पर भारी-भरकम प्रतिनिधिमंडल भी गया, लेकिन इस दौरान खुद सरकार का एक भी मंत्री उनके साथ नहीं था! यह खुलासा खुद सरकार के एक जवाब से हुआ है. दरअसल, राज्यसभा सदस्य बिनॉय विस्वम ने विदेश राज्य मंत्री जनरल वीके सिंह से प्रधानमंत्री के 2014 से लेकर अबतक के विदेश दौरों, इस दौरान हुए समझौतों, यात्रा पर आए खर्च और पीएम के साथ जाने वाले मंत्रियों का ब्योरा मांगा था. सरकार ने पीएम के विदेश दौरों पर हुए खर्च, देशों की जानकारी और इस दौरान हुए करार की जानकारी तो दी, लेकिन इस सवाल का जवाब ही नहीं दिया कि पीएम के साथ विदेश दौरे पर कौन-कौन से मंत्री गए.

सवाल का जवाब ही कर दिया गोल

राज्यसभा सदस्य बिनॉय विस्वम विदेश मंत्री से पीएम के विदेश दौरों से संबंधित 4 प्रश्न पूछे थे. विदेश राज्य मंत्री जनरल वीके सिंह ने 13 दिसंबर को सवालों का विस्तार से जवाब दिया. जिसमें पीएम 2014 से लेकर अब तक किन देशों के दौरे पर गए, इन दौरों की तिथि, इस दौरान किन समझौतों और करार पर हस्ताक्षर हुआ और विदेश दौरों पर आने वाले खर्च की जानकारी दी. जिसमें वायुयान के रख-रखाव का खर्च, चार्टर प्लेन पर हुआ खर्च और हॉटलाइन का खर्च भी शामिल है. लेकिन विदेश राज्य मंत्री ने यह जानकारी ही नहीं दी कि आखिर पीएम के 84 विदेश दौरों पर उनके साथ सरकार कौन मंत्री साथ गया था.

साढ़े चार साल में अमेरिका के 5 दौरे

पीएम मोदी अब तक अपने कार्यकाल के दौरान जिन 84 देशों की यात्रा की उनमें सर्वाधिक 5 बार वे अमेरिका गए. इसके बाद दूसरा नंबर चीन का है. पीएम ने अब तक 4 बार चीन की यात्रा की. इसके अलावा वे फ्रांस, जर्मनी और रूस की यात्रा पर भी एक से ज्यादा बार गए.

विदेश दौरों पर विपक्ष उठाता रहा है सवाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विदेश दौरों को लेकर विपक्ष अक्सर हमलावर रहा है. विपक्ष के नेता यह आरोप लगाते रहे हैं कि पीएम के तमाम दौरों का हासिल कुछ नहीं रहा है. जबकि उनके साथ प्रतिनिधिमंडल में बड़े कारोबारियों को ले जाया गया. पिछले दिनों भाजपा के ही बागी नेता शत्रुघ्न सिन्हा ने पीएम मोदी के विदेश दौरों को लेकर उनपर निशाना साधा था. उन्होंने कहा कि संसद में जब सत्र चल रहा है तो आपका विदेश में जाना क्या इतना जरूरी था. शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा कि अगर आप फिलहाल विदेश दौरे पर नहीं जाते तो कोई आसमान नहीं गिर जाता. सिन्हा ने लिखा- 'प्रिय सर, जब संसद सत्र चल रहा है, तो आप 3 अफ्रीकी देशों के दौरे पर हैं. अगर आप संसद के सत्र के बाद यह दौरा करते तो कोई आसमान नहीं गिर जाता. आप इसके बाद भी दुनिया भर में बचे हुए कुछ देशों का दौरा कर सकते थे'.

वृद्ध इतने उपेक्षित क्यों है?

विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस का आधिकारिक तौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा श्रीगणेश किया गया था। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य संसार के बुजुर्ग लोगों को सम्मान देने के अलावा उनकी वर्तमान समस्याओं के बारे में जनमानस में जागरूकता बढ़ाना है। प्रश्न है कि दुनिया में वृद्ध दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई? क्यों वृद्धों की उपेक्षा एवं प्रताड़ना की स्थितियां बनी हुई है? चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि वृद्धों की उपेक्षा के इस गलत प्रवाह को रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, उसकी आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारिक जीवन में वृद्धों को सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति की जरूरत है।

विश्व में इस दिवस को मनाने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु सभी का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि वे अपने बुजुर्गों के योगदान को न भूलें और उनको अकेलेपन की कमी को महसूस न होने दें। हमारा भारत तो बुजुर्गों को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण है कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर वनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में वृद्ध माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। आज का वृद्ध समाज-परिवार से कटा रहता है और सामान्यतः इस बात से सर्वाधिक दुःखी है कि जीवन का विशद अनुभव होने के बावजूद कोई उनकी राय न तो लेना चाहता है और न ही उनकी राय को महत्व देता है। समाज में अपनी एक तरह से अहमितय न समझे जाने के कारण हमारा वृद्ध समाज दुःखी, उपेक्षित एवं त्रासद जीवन जीने को विवश है। वृद्ध समाज को इस दुःख और कष्ट से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी जरुरत है। आज हम बुजुर्गों एवं वृद्धों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के साथ-साथ समाज में उनको उचित स्थान देने की कोशिश करें ताकि उम्र के उस पड़ाव पर जब उन्हे प्यार और देखभाल की सबसे ज्यादा जरूरत होती है तो वो जिंदगी का पूरा आनंद ले सके। वृद्धों को भी अपने स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा, जैसाकि जेम्स गारफील्ड ने कहा भी है कि यदि वृद्धावस्था की झूर्रियां पड़ती है तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो।

वृद्ध समाज इतना कुंठित एवं उपेक्षित क्यों है, एक अहम प्रश्न है। अपने को समाज में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे जाने के कारण वह सर्वाधिक दुःखी रहता है। वृद्ध समाज को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने के लिये ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति हो रहे दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का निर्णय लिया। यह सच्चाई है कि एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह

आओ मिलकर हम पेड़ लगाये अपने पर्यावरण को बचायें

पर्यावरण संतुलन के लिए पौधरोपण बहुत ही जरूरी है। प्राकृतिक संसाधनों के नियंत्रित दोहन व वृक्षों के अंधाधुंध कटान नहीं रुका तो मानव के अस्तित्व पर भी खतरा पड़ जाएगा। तेजी से दूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाए जाने की जरुरत है। पर्यावरण प्रदूषण आज मानव जाति के समक्ष एक गंभीर समस्या है, जिसका जल्द समाधान करना आवश्यक है। वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए अविलंब ठोस, प्रभावी और कारगार कदम उठाए जाने चाहिए।

'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुर्व जन्म मृतस्य च, तस्मादपरिहायेर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि'। श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 2 के श्लोक 27 का अर्थ है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी निश्चित है। अतः अपने अपरिहार्य कर्तव्यपालन में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। मनुष्य का जीवन सुख व दुख का मिश्रण है। जीवन के दो ही पहलू हैं एक जन्म और दूसरा मरण जोकि मनुष्य जीवन के अभिन्न अंग माने जाते हैं। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु होना भी निश्चित ही है। इस सच को कोई नहीं बदल सकता इसका मतलब है कि जिसका जन्म हुआ है उसको एक न एक दिन अवश्य मरना है। यही कुदरत का नियम है।

पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार हैं क्योंकि पेड़ पौधों से हमें आक्सीजन मिलती है। आक्सीजन के बिना जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। वृक्ष के बगैर मानव जीवन का संसार में कोई अस्तित्व नहीं है। साफ शब्दों में कहा जा सकता है कि जीवन के लिए ऑक्सीजन जरूरी है। यदि ऑक्सीजन नहीं होगी, तो जीवन ही समाप्त हो जाएगा। इसलिए ऑक्सीजन को बचाने केलिए वृक्षों को बचाना जरूरी है। जीवन के संरक्षण के लिए पौधों का संरक्षण करना अनिवार्य है। पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए सबसे बेहतर विकल्प पौधारोपण ही है। मानव जीवन सुरक्षित रहे इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करना चाहिए और उस पौधे की नियमित देखभाल भी करनी चाहिए।

प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन से न केवल पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व पर भी खतरा मंडराने लगा है। वायुमंडल में जहां ऑक्सीजन की कमी होने लगी है वहीं दूसरी तरफ कार्बनडाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। यदि

पुलिस कप्तान अरविन्द कुमार गुप्ता, डीजीपी के द्वारा हुए सम्मानित

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बिहार पुलिस विशेष पारितोषिक वितरण समारोह 2019 में डीजीपी गुप्तेश्वर पांडे ने बांका के एसपी अरविंद कुमार गुप्ता सहित बेतिया एसपी एवं अन्य पुलिसकर्मियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया सम्मान अपहृत दो व्यवसायियों को मुक्त कराने और 50,000 के इनामी अपराधी राजेंद्र चौधरी को गिरफ्तार करने के कारण मिला तब बांका के एसपी अरविंद कुमार गुप्ता बगहा के एसपी हुआ करते थे।

अरविंद कुमार गुप्ता को सम्मानित करते डीजीपी गुप्तेश्वर पांडेय

ख्यात राजेंद्र चौधरी ने नेपाल की व्यवसाई सुरेश साह व सीतामढ़ी के व्यवसाई काशी साह को व्यवसाय करने के बहाने अपने पास बुलाया ,और बगहा के जंगल में लाने के बाद अपहरण कर लिया .दोनों को मुक्त कराने के लिए एक करोड रुपए की फिरौती मांगी थी . परिजनों ने फिरौती की जानकारी जयंत कांत को दिया. एसपी जयंत कांत को मिली .उन्होंने बगहा के तत्कालीन एसपी अरविंद कुमार गुप्ता से संपर्क साधा और अपनी टीम के साथ वहां पहुंचे जहां अरविंद कुमार गुप्ता के अलावा चौतरवा थाना अध्यक्ष विजय कुमार मिश्र बेतिया के अवर निरीक्षक विवेक कुमार जयसवाल बेतिया के पुलिस जवान मुन्ना कुमार साह अजय कुमार सुनील कुमार निर्भय कुमार राकेश कुमार मनीष कुमार व संतोष के साथ छूटा के जंगल पर छापामारी की इस दौरान अपहृत दोनों व्यवसायियों को सकुशल मुक्त कराया साथ ही इनामी अपराधी राजेंद्र चौधरी को एक देसी तमंचा व कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया गया.

बाराहाट थाना क्षेत्र से हथियार के साथ गिरफ्तार अपराधी की जानकारी देते एस.पी.अरविन्द कुमार गुप्ता

सड़क पर वाहन चलाते समय यातायात नियमों का करें पालन, नहीं तो भरना होगा जुर्माना

वाहन चालक को जानकारी देते जिला परिवहन पदाधिकारी, बांका फिरोज अख्तर

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

यातायात के नए नियम लागू होने के साथ ही नया नियम प्रभावी होते ही बाइकर्स के होश ठिकाने लग गए पिछले दिनों शहर के बाइक का परिचालन कम हो गया है वाहन चालक पर हर कदम सावधानी से आगे बढ़ा रहे हैं पिछले दिनों 3 दिनों से गांव में शहर तक बाइक चलाने वालों के बीच केवल इसी जुमार्ने की चर्चा है तथापि न्यू छे बाइकर बड़ी तेजी से शहर में अभी भी बाइक चलाने का काम कर रहे हैं जिन्हें विभाग के द्वारा हिदायत की गई है रविवार से यातायात के नए नियम लागू होने के साथ ही डीटीओ फिरोज अख्तर ने मोर्चा संभाल लिया है थाना घाट गेट के समीप करीब एक दर्जन वाहनों को का फाइन काटते हुए नए नियमों से अवगत कराया है जानकारी हो कि अब नए नियम लागू होने से बिना हेलमेट वह लाइसेंस नहीं रहने पर 10 गुना ज्यादा फाइन वाहन चालकों को भरना होगा डीटीओ ने बताया कि इस नियम को सख्ती से लागू कराया जाएगा इसके लिए सभी थानों को भी नई नियमावली भेज दी गई है मौके पर यातायात प्रभारी हरेंद्र चौहान ने भी लोगों को जानकारी दी कि वाहन जांच से दोपहिया वाहन चालक रास्ता बदलकर भागते नजर आ रहे थे वही डीटीओ ने बताया कि चालकों को अपनी सुरक्षा स्वयं करनी है सरकार के द्वारा जो निर्देश दिया गया है उसे हर हाल में वाहन चालकों को अपनाना होगा ज्ञात हो कि लगभग एक दर्जन से ज्यादा चला दो दिनों में काटा गया गांव से निकलते हुए आजकल के लड़के खासकर नाबालिक लड़की रफ्तार से जो मोटरसाइकिल चलाते हैं बाइक चलाते हैं बाइक चालक लाइसेंस खोज रहे हैं अपनी बाइक हेलमेट जांच कर रही है इसका फायदा उठा कर दी है।

पुलिस लगातार चेकिंग अभियान चला रही है 2 दिन पहले गांधी चौक के आसपास लगी कई वाहनों को भी पार्किंग कह कर लिया गया इसके बाद वाहन चालकों से चालान काटा गया जबकि पुलिस थाना गेट पर नियमित रूप से वाहन जांच कर रही है वहां दर्जनभर से अधिक बड़ा बैंजो जौनपुर सड़क पर खड़ी रही है पुलिस ने खुद खड़ा किया है अब उसका जुमार्ना कौन भरेगा इस पर सवाल उठ गया इसके विषय में उन्होंने कहा कि थाना के समीप ने बताया कि थाना के समीप खड़े वाहनों को हटाने का टास्क फोर्स की बैठक में फैसला लिया गया है इसके अलावा भी शहर में सड़क किनारे से अतिक्रमण हटाने की नोटिस दी गई है शहर की यातायात व्यवस्था को दुरुस्त किया जा रहा है वाहन चालक इसका सख्ती से पालन करें या केवल जुमार्ना ही नहीं बल्कि अपनी जिंदगी बचाने का अभियान है पहले 5 दिन में डेढ़ लाख जुमार्ना पहले 5 दिनों में डेढ़ लाख जुमार्ना वाहन के कागजात की जांच की प्रक्रिया शुरू होने पर अब तक जिले में परिवहन विभाग डेढ़ लाख रुपए से अधिक का जुमार्ना केवल बाइक चालकों से वसूल चुकी है चुका है विभागीय आदेश निर्देश के मुताबिक जिला जिले भर में यह अभियान अभी नियमित रूप से चलेगा पहले कोई भी वाहन पकड़ा जाने पर 200 में मामला निपट जाता था अब हजार रुपए से कम कोई फाइन जमा नहीं हो रहा इस प्रकार प्रदूषण हेलमेट और इंश्योरेंस के लिए लगातार कतार में लोग लग रहे हैं और इसके तहत यातायात के नियमों के लिए लोगों को अवगत करने के लिए जिला परिवहन पदाधिकारी फिरोज अख्तर ने भी लोगों से अपील की है कि वह अपनी सुरक्षा हेतु सड़क पर बाइक पर बिना हेलमेट केना चलें कागजी प्रक्रिया पूरी करें यातायात के नियमों का पालन करें चार चक्के बाहर वाले से भी उन्होंने अपील की है कि सीट बेल्ट लगा कर नियमित सफर करें और साथ ही सहारा गाड़ी कागजात जैसे कि ड्राइविंग लाइसेंस प्रदूषण और इंश्योरेंस अपटुडेट रखें सुरक्षा आपकी, सहयोग हमारा यही सरकार का संकल्प है .आपका जीवन अनमोल इसे सुरक्षित वनाए .

वाहन चेकिंग करते जिला परिवहन पदाधिकारी, बांका फिरोज अख्तर

चेक डेम के निंमाण से किसानों को मिलेगा लाभ

बैलोनी जोर पर चेक डेम का हो रहा निंमाण

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

कटोरिया प्रखंड के कटोरिया ग्राम पंचायत के अंतर्गत बैलोनी गांव स्थित जोर पर चेक डैम का निर्माण कर पुलिया का निर्माण कराया जा रहा है मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता ने बताया कि चेक डैम एवं पुलिया का निर्माण मनरेगा कार्यक्रम के तहत किया जा रहा है चेक डैम से एक तरफ किसानों को पटवन में सहायता मिलेगी वहीं दूसरी तरफ संपर्क पथ से वंचित ग्रामीणों की मुसीबत भी दूर हो जाएगी इसके लिए बता दें कि गांव में पक्की सड़क नहीं होने से ग्रामीणों को परेशानी होती है गांव तक पहुंचने के लिए ग्रामीणों को जोरिया खेत होकर गुजरना पड़ता है था ऐसे में बरसात के दिनों में आवागमन लगभग ठप हो जाता था परिवार में किसी व्यक्ति की तबीयत बिगड़ दिया गर्भवती को चिकित्सक के पास ले जाने में खाट का सहारा लेना पड़ता है कई बार लोग कंधे का सहारा लेकर मरीज को गांव से बाहर लाते हैं इसे इन्हें परेशानी होती है फिलहाल इस योजना से पूरा लाभ होना होने पर दाढ़ी पार के ग्रामीणों को मुख्य मार्ग से उम्मीद जग गई है सरकार की विभिन्न योजना के तहत यदि एक सृजनात्मक पहल है सरकार की सभी योजना जल नल योजना और पक्की नाली योजना का काम कटोरिया ग्राम पंचायत में सुचारू रूप से चल रहा है.

हमारे जन्म क्यों हुआ?

हर कार्य का कारण हुआ करता है। इसी प्रकार हमारे जन्म का भी कारण अवश्य ही कोई है। इस पर विचार करते हैं। हमें इस जन्म में मनुष्य जन्म मिला है। इस मनुष्य जन्म की विशेषता हमारा मानव शरीर है जिसमें पांच ज्ञान और पांच कर्म इन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों से हम देखते, सुनते, बोलते, रस का अनुभव करते तथा स्पर्श का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा इन्द्रियों के नाना सुखों को भोगते हैं। पांच कर्मेन्द्रियों से हम कर्म करते हैं। इन कर्मों को करने से ही हमें सुख व दुःख की प्राप्ति होती है। यदि हम कर्म न करें तो हमारा जीवन रोगी होकर समाप्त हो सकता है। कर्म करना हमारे लिये आवश्यक है। इन कर्मों का परिणाम हमारे इस जन्म में भी सुख व दुःख के रूप में सामने आता है। ऐसा हमारे प्रतिदिन के जीवन में होता है, जिसका हम अनुभव करते हैं। हम शिशु के रूप में उत्पन्न होते हैं और बढ़ते हुए किशोर व युवा होते हैं। 12 वर्ष के बाद हमारे ज्ञान व समझ में तेजी से वृद्धि होती है और संसार की बातों को अच्छी तरह से समझने लगते हैं। पुस्तक पढ़ने से हमें उस विषय का ज्ञान होता है। हम पुस्तक की बातों की सत्यता व असत्यता को भी जानने की क्षमता से युक्त होने आरम्भ हो जाते हैं। ज्ञान व अनुभव बढ़ने से हमारी सोच व समझ में वृद्धि होती जाती है। युवावस्था हमारे शरीर के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थिति होती है। इस स्थिति में हमारा ज्ञान व अनुभव परिपक्व होता है और हमें अपने हित व अहित तथा कर्तव्य व अकर्तव्यों का भी पूरा ज्ञान होता है। यह अवस्था कुछ वर्षों तक स्थिर रहती है। मनुष्य जीवन का यह समय ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करने का समय होता है। इस अवस्था में हम जो व जैसी साधना करते हैं उसको प्राप्त कर लेते हैं व कर सकते हैं। इसके बाद हमारी वृद्धावस्था का आरम्भ होता है जिसमें हमारे शरीर की शक्तियों में न्यूनता व क्षीणता आनी आरम्भ हो जाती है। लगभग 70-100 वर्ष के बीच आयु होने पर प्रायः सभी मनुष्यों की मृत्यु हो जाती है। इसके कुछ अपवाद भी हो सकते हैं। यह हम सबका जीवनचक्र है।

युवा व प्रौढ़ अवस्था में हमने बाल्यकाल और वृद्धावस्था की दृष्टि से प्रायः सबसे अधिक शुभ व अशुभ कर्म किये होते हैं। इन सब कर्मों का फल सुख व दुःख हम इस जीवन में नहीं भोग सकते। कुछ मनुष्य अपनी वृद्धावस्था में नाना प्रकार के शुभ भी और अशुभ भी अनेक कर्म करते हैं। इन सबका फल इस जन्म में मिलना सम्भव नहीं होता। हमारे मनीषियों ने इस विषय पर गम्भीर चिन्तन कर बताया है कि मनुष्य जो कर्म करता है वह मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। एक क्रियमाण कर्म होते हैं जिनका फल उसे कर्म करने के साथ-साथ या कुछ ही समय बाद मिल जाता है। कुछ कर्म संचित कर्म होते हैं जिनका फल इस जन्म में कालान्तर में मिलता है। कुछ संचित कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल इस जन्म में नहीं मिल पाता। एसे कर्मों ही हमारे परजन्म व पुनर्जन्म का कारण बनते हैं। इन्हीं कर्मों को प्रारब्ध कहा जाता है।

सृष्टि की उत्पत्ति पर विचार करने और वेद तथा ऋषियों के ग्रन्थों के प्रमाणों से यह सृष्टि ईश्वर द्वारा बनाई हुई रचना है। ईश्वर एक सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सभी प्राणियों के प्रत्येक कर्म की साक्षी सत्ता है। ईश्वर हमारा न्यायाधीश भी है। ईश्वर के इस गुण को वेदों में अर्यमा नाम से व्यक्त किया गया है। वह ईश्वर हमारे कर्मों का फल देने के लिये ही हमें नाना प्रकार के शरीर व भोग उपलब्ध कराता है। हमारे पूर्वजन्मों के अवशिष्ट व भोग से बचे हुए कर्मों का भोग करने के लिये ही हमारा यह जन्म हुआ था। इस जन्म में हम पूर्वजन्मों के जितने कर्मों का भोग कर लेंगे वह हमारे प्रारब्ध से निकल जायेंगे। शेष बचे कर्मों सहित इस जन्म के संचित कर्मों के आधार पर हमारा परजन्म का प्रारब्ध बनेगा। यह प्रारब्ध ही हमारे भावी जन्म वा पुनर्जन्म का कारण होता है। यदि यह प्रारब्ध न होता तो हमारा जन्म भी न होता। प्रारब्ध पूर्वजन्मों के उन कर्मों को कहते हैं जिनका भोग नहीं हुआ होता अथवा जिनका जीवात्मा को भोग करना होता है और परमात्मा को भोग कराना होता है। सिद्धान्त है कि 'अवश्यमेव ही भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'। इस आधार पर हमारे जन्म का रहस्य सुस्पष्ट हो जाता है। पूर्वजन्म के कर्म वा प्रारब्ध के अतिरिक्त हमारे इस जन्म का कोई कारण नहीं है और इस जन्म में मृत्यु होने पर बचे हुए कर्मों का भोग करने के लिये हमारा पुनर्जन्म होना भी तर्क व युक्तिसंगत है। यदि ऐसा नहीं होगा तो सृष्टि के सबसे बड़े न्यायाधीश, जो संसार के बड़े से बड़े न्यायाधीशों का भी न्यायाधीश और उनके कर्मों का भी न्याय करता है, उस पर आरोप आयेगा कि उसने जीवों के कर्मों का भोग प्रदान नहीं किया। अतः इससे संसार में विद्यमान ईश्वर द्वारा संचालित कर्म- फल व्यवस्था का भी ज्ञान होता है।

जन्म का कारण कर्म हैं, यह स्पष्ट होने पर एक शंका हो सकती है कि इस सृष्टि का आरम्भ कब से है? विचार करने और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह सृष्टि अनादि सिद्ध होती है। इस सृष्टि का कभी आरम्भ नहीं हुआ है अपितु यह सदा से, अनादि काल से, उत्पन्न होती व इसकी प्रलय होती आ रही है। इस सिद्धान्त को 'सृष्टि प्रवाह से अनादि है' सिद्धान्त कहा जाता है। इसका कारण यह है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति यह तीन सत्तायें अनादि सत्तायें हैं। इनका न तो आदि है और न कभी अन्त होना है। अन्त उसी सत्ता का होता है जिसका आदि होता व जन्म होता है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी अवश्यम्भावी होती है और जिसका जन्म नहीं होता, उसकी मृत्यु भी नहीं होती। गीता में कहा गया है 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च' अर्थात् जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु होनी अटल है और जिसकी मृत्यु होगी उसका जन्म होना भी अटल व ध्रुव सत्य है। इसी सिद्धान्त के अनुरूप सृष्टि के प्रवाह से अनादि का सिद्धान्त है। जीवात्मायें अनादि सत्तायें हैं। इन जीवात्माओं का अनादि काल से सचित कर्म व प्रारब्ध चले आ रहे हैं। इसी कारण से ईश्वर को सृष्टि की रचना, पालन व प्रलय करनी पड़ती है। ऐसा ही हमेशा होता रहेगा क्योकि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का अस्तित्व शाश्वत, सनातन, अनादि व नित्य है। कर्म व प्रारब्ध को जानकर मनुष्य को दुःखों से बचने के लिये अपने कर्मों को वेदानुकूल व वेदसम्मत बनाना चाहिये। वेद निषिद्ध कोई कर्म नहीं करना चाहिये और वेद प्रतिपादित किसी कर्म का त्याग भी नहीं करना चाहिये।

कविता

वक्त

राहुल (बांका)

वक्त के कई फिजा और कई रंग होते हैं ।
देख कर समझ ले ऐसे बहुत कम होते हैं ।।

तू जो होती सनम हम भी कम न होते ।
इस चमन में गुलशन कभी कम न होते।।

तु जो साथ थी मैंने आगे भी पहल की।
मुड़ कर ना देखा , महल ही महल थे।।

इस महल में चांद तारे भी कम न थे ।
वक्त के कई फिजा और कई रंग थे।।

टूट गए वो सारे सपने क्षण भर में ।
तू जो नहीं थी केवल हम ही हम थे ।।

मुझे मेरे सपनों पर बड़ा तरस आया।
खड़ा था मैं, थी खंडहर की छाया।।

वह चांद तारे भी निशांत हो गए थे।
तू जो न थी हम तो खो से गए थे ।।

वक्त के कई फिजा, रंग और भी थे ।
फिर एक आस जगी तुम जो संग थी।।

दिखा एक सपना, मिला कोई अपना।
तू जो थी ,अब थी बाहर ही बहारें ।।

मैं कहीं नहीं तेरे चमन में ही तो था।
ये रंग और फिजा वक्त ही तो थे ।।

गणेश चतुर्थी व विश्वकर्मा पूजा के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पुतुल कुमारी

पूर्व सांसद

बांका

स्वागतम,
ग्रेटर नोएडा
इस्कॉन
ISKCON (INTERNATIONAL SOCIETY FOR KRISHNA CONSCIOUSNESS)
Preaching Centre Greater Noida :
N-93, Behind JAY ESS Academy, Delta-3, Greater Noida
Ph : 9910767787, 9650792465, 9818867112, 9899240558
Website : iskcongreaternoida.com
Email : iskcongreaternoida@gmail.com
Facebook : ISKCON Greater Noida
Whatsapp : 9910767787
ISKCON
GREATER NOIDA

GANPATI STUDY CIRCLE
A Complete Solution for Teaching Exams
For- CTET BTET STET KVS NVS DSSSB B.Ed. ENTRANCE TEST
रोसड़ा में पहली बार CTET, BTET व B.Ed Entrance का स्पेशल बैच ।
Highlights :- SUBJECT WISE CLASSES DOUBT CLASSES WEEKLY SPEED TEST STUDY MATERIALS TOPIC WISE NOTES SMART CLASSES
यहाँ सभी प्रकार के Teaching Exams की तैयारी कराई जाती है।
B.Ed., M.Ed. एवं Ph.D. Entrance की तैयारी बेहतर मार्गदर्शन में कराई जाती है ।
निःशुल्क निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था ।
B.Ed., D.El.Ed. एवं M.Ed. के सभी Topics के Notes एवं Assignment उपलब्ध है ।
साप्ताहिक जाँच परीक्षा का आयोजन किया जाता है ।
महिलाओं, दिव्यांगो, निर्धन व मेधावी छात्र- छात्राओं के लिए शुल्क में विशेष छूट ।
सम्पर्क सूत्र-
9006041889, 9110137534
Convener cum Co-Ordinator
MANIKANT PRASAD
VIVEK KUMAR
Director
GANPATI KUMAR
Ph.D. Pursuing, M.Sc (Phy.), M.Ed.
NET, CTET, BTET, MPTET Qualified
ADDRESS- Near Kids Pathshala, Gayatri Mandir Road, Rosera (Samastipur)

किशनगंज पुलिस

मॉब लिंचिंग (भीड़ द्वारा हत्या) कानूनी अपराध है।

- किसी प्रकार की घटना की सूचना पुलिस को दें।
- संदेह में किसी व्यक्ति के साथ मारपीट न करें।
- संदिग्ध व्यक्ति को तुरंत पुलिस के हवाले करें।
- संदिग्ध व्यक्ति की पूरी जाँच जरूरी है।
- कानून का पालन करें एवं पुलिस को पुरा सहयोग करें।

किशनगंज S.P.:- 9431822999 ,S.D.P.O.:- 9431800043
किशनगंज पुलिस :- 9431822921

निवेदक :
किशनगंज पुलिस

जमुई पुलिस

मॉब लिंचिंग (भीड़ द्वारा हत्या) कानूनी अपराध है।

- किसी प्रकार की घटना की सूचना पुलिस को दें।
- संदेह में किसी व्यक्ति के साथ मारपीट न करें।
- संदिग्ध व्यक्ति को तुरंत पुलिस के हवालें करें।
- संदिग्ध व्यक्ति की पूरी जाँच जरूरी है।
- कानून का पालन करें एवं पुलिस को पूरा सहयोग करें।

निवेदक :-
जमुई पुलिस

SP Jamui - 9431800007, S.D.P.O. - 9431800025
DSP (HQ.) :- 8544428449, Jamui P.S. - 9431822659

भागलपुर पुलिस

STOP MOB LYNCHING
(भीड़ तंत्र द्वारा हत्या को रोकें)

- मानव की हत्या नही, मानवता की हत्या ।
- मॉव लिंचिंग (भीड़ द्वारा हत्या) कानुनी अपराध है ।
- मॉव लिंचिंग- एक अभिशाप,शर्मशार कर देने वाली घटना ।
- किसी प्रकार के घटना की सूचना पुलिस को अविलंब दें ।
- संदेह में किसी व्यक्ति के साथ मारपीट न करें ।
- संदिग्ध व्यक्ति को तुरंत पुलिस के हवाले करें ।
- कानुन का पालन करें एवं पुलिस को सहयोग करें ।

निवेदक :- भागलपुर पुलिस

अररिया पुलिस

STOP MOB LYNCHING
(भीड़ तंत्र द्वारा हत्या को रोकें)

- मानव की हत्या नही, मानवता की हत्या ।
- मॉव लिंचिंग (भीड़ द्वारा हत्या) कानुनी अपराध है ।
- मॉव लिंचिंग- एक अभिशाप,शर्मशार कर देने वाली घटना ।
- किसी प्रकार के घटना की सूचना पुलिस को अविलंब दें ।
- संदेह में किसी व्यक्ति के साथ मारपीट न करें ।
- संदिग्ध व्यक्ति को तुरंत पुलिस के हवाले करें ।
- कानुन का पालन करें एवं पुलिस को सहयोग करें ।

निवेदक - अररिया पुलिस

गणेश चतुर्थी व विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

मृत्युंजय कुमार 'विरेश'

प्रदेश मीडिया प्रभारी, भाजयूमो

पूरे बिहारवासियों को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

जय जयराम सिंह

समाजसेवी